योगीराज यशपालजी



यंत्र विधान

रणधीर प्रकाशन

यन्त्र विधान

(231 यन्त्रों का अनमोल संग्रह)

आज के वैज्ञानिक युग में जो स्थिति रसायन विज्ञान की है, वही यन्त्र विज्ञान की है। समझना और जानना होता है कि त्रिशूल का प्रयोग यन्त्र में कहाँ और क्यों किया जाता है? रेखाचित्रों का क्या मायाजाल है? शब्दों का जादू क्या है? वृत्त और चतुर्भुज से क्या तात्पर्य है? लिखने की सामग्री तथा उनकी प्रयोग विधि—यह सब ही तो यन्त्र विज्ञान है। इसी विज्ञान को जानने और समझने के बाद अनेकों यन्त्रों को परखा, अनुसन्धान किया और तभी उन्हें इस पुस्तक का रूप दिया जा सका है।

यन्त्र साधना पर तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र के जाने पहचाने विद्वान् **श्री योगीराज यशपाल 'भारती'** जी द्वारा रचित उत्कृष्ट पुस्तक **'यन्त्र विधान'** आपके समक्ष प्रस्तुत है जो कि आपको अपनी इच्छा पूर्ति करने का सरल मार्ग सुझायेगी। पुस्तक पढ़कर मनोकामना पूर्ण करें।

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

लेखक:

महामहोपाध्याय आद्यानन्द योगीराज यशपाल जी
ज्योतिषालंकार, ज्योतिष बृहस्पति,
दैवज्ञ भूषण, तन्त्र शिरोमणि,
ज्ञान भास्कर, स्वर्णपदक विभूषित

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

संस्करण : **सन्** 2008

मुद्रक . **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

YANTRA VIDHAN
Written By : Yogiraj Yashpal Jee
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

यन्त्र विधान

(अनुभूत 231 यन्त्रों का श्रेष्ठ ग्रन्थ)

लेखक:

महामहोपाध्याय आद्यानन्द योगीराज यशपाल जी

ज्योतिषालंकार, ज्योतिष बृहस्पति, दैवज्ञ भूषण, तन्त्र शिरोमणि,
ज्ञान भास्कर, र्स्वणपदक विभूषित

मूल्य : 150.00

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार–249401

अनुक्रम

प्रथम मनाय गणेश को, शिव को शीश झुकाय ।
करे शारदा कृपा अगर, ग्रन्थ पूर्ण हो जाय ॥

यन्त्र साधना की आवश्यक बातें

यन्त्र क्या है ?

- यन्त्रों के द्वारा स्वयं ही स्वयं का उपचार करें ।
- यन्त्र शीघ्र प्रभाव दिखाते हैं ।
- कलियुग में यन्त्रों को विशेष प्रभावी कहा गया है ।
- यन्त्र धारक के शरीर पर आकाशीय ग्रहों की भाँति कार्य करता है ।
- नित्य यन्त्र लिखने से भूत प्रेतादि जैसी समस्यायें पैदा नही होतीं, यदि हुई हों तो शीघ्र ही समाप्त हो जाती हैं ।
- यन्त्रों में जो शक्ति है वह तो प्रबल है ही । इसमें और भी अधिक शक्ति का संचार यन्त्र का साधक अपनी आत्मा के बल से प्रस्तुत करता है ।
- यन्त्रों से लाभ उठाने के लिए यन्त्रों पर विश्वास करें ।

- वशीकरण, शान्ति तथा पौष्टिक यन्त्र लिखते समय प्रसन्न मुद्रा में रहें तथा मुख में मीठा पान रख लें ।
- मारण, स्तम्भन तथा उच्चाटन आदि के यन्त्र लिखते समय काले वस्त्र पहनें तथा मुख में विरसता पैदा करने वाली कोई चीज रख लें ।
- यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्र एक दूसरे के पूरक हैं ।
- रेखांकन को यन्त्र कहते हैं ।
- शब्दों के समूह को मन्त्र कहते हैं ।
- वनस्पति की गुह्य शक्ति को तन्त्र कहते हैं ।
- यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्र का एक साथ प्रयोग करने वाले को तान्त्रिक कहते हैं ।
- यन्त्र को लिखना तथा उससे लाभ उठाना अत्यन्त सरल है ।
- आज भी कई विशेष धार्मिक तीर्थ स्थलों पर, मुख्य द्वार पर तथा मूर्ति के पास पत्थरों पर खुदे यन्त्र दृष्टिगोचर होते हैं ।
- बहुत से मन्दिरों के बुर्ज तथा भीतरी हिस्से यन्त्र की शैली के अनुसार बनाये गये मिलते हैं ।
- यन्त्र साधन तांत्रिक विद्या का सबसे सरल तथा सुलभ साधन है ।
- यन्त्र कभी निराश नहीं करते ।
- यन्त्र आत्मबल बढ़ाते हैं ।

यन्त्र साधना से पहले यह सब ध्यान रखें !

यन्त्र विद्या यद्यपि प्रतिमा पूजा काल के युग से भी बहुत प्राचीन है। इस पर भी एक आकर्षण का केन्द्र है। मन्त्र शास्त्र की अनेक कठिनाइयों को देखते हुए ही सम्भवत: यन्त्रों को सहर्ष स्वीकार किया गया था। जबकि यन्त्र निर्माण भी कोई आसान पद्धति नहीं है। रेखात्मक, वर्णात्मक, अंकात्मक अथवा समन्वयात्मक पद्धति से बनाये गये धातुमय, वर्णमय अथवा लिखित यन्त्र में, उसके देवता की स्थापना की जाती है और इन यन्त्रों को पूजन यन्त्र या धारण यन्त्र कहा जाता है।

देश, काल और पात्र का विचार करके जो कार्य किया जाता है वह पूर्णत: सफल होता है। अत: प्रयोग कर्त्ता को साधना मार्ग में प्रवेश करने के पश्चात् अनेक बातों का सदैव स्मरण रखना चाहिए। जरा सी भूल से प्रयोग विपरीत फलदायक होकर हानि देने लगता है या स्वयं ही निष्फल, प्रभाव हीन रहता है।

यन्त्र अपने आप में एक रहस्य है। इस रहस्य को अनुभव करके ही जाना जा सकता है।

यन्त्र की पहली शर्त ही गोपनीयता है।

यन्त्र शब्द 'यं' धातु से निष्पन्न होता है। इसका अर्थ सयंमित करना और केन्द्रित करना ही होता है।

अभीष्ट सिद्धि के लिए अधिष्ठातृ देवता की शक्ति पर ध्यान लगाने में यन्त्र विशेष सहायक होता है। यही कारण है कि कुछ पूजन में तो यन्त्रों को ही सामने रखा जाता है, जैसे—श्री यन्त्र, बगलामुखी यन्त्र आदि अनेकों प्रमाण हैं।

मन्त्रों की तरह ही यन्त्र भी बहुविध और बहुसंख्यक होते हैं तथा इनकी रचना भी प्रयोजन के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार से की जाती है।

यन्त्र विद्या एक गहन विद्या है और पलों में ही यह लाभ देने वाली है। देव, ब्राह्मण, औषधि, मन्त्र, यन्त्र आदि भावना के अनुसार ही फल देते हैं। अत: यदि यन्त्र को सामान्य मानकर लिखा जायेगा तो निश्चय ही उसका फल भी सामान्य ही होगा। यह सोचना केवल मूर्खता ही है कि यन्त्र तो छोटा सा है, ये फल क्या करेगा? क्या परमाणु बहुत बड़ा होता है? ध्यान से सोचें तो एक अति सूक्ष्म अणु ही तो है जिससे सारा संसार भयप्रद है।

यन्त्र को सिद्ध करने के लिए प्रयोजन के अनुसार दिन, तिथि, नक्षत्र, मास आदि समय निर्धारित किये गये हैं। इसके लिखने के लिए स्याही, कलम तथा आधार पत्र भी प्रयोजन के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं।

यन्त्र और उसकी शक्ति पर सदैव श्रद्धा एवं विश्वास रखें क्योंकि श्रद्धा और विश्वास से ही ईश्वर को प्राप्त किया जाता है। सभी कार्य शान्ति एवं सन्तोष से ही फलदायक होते हैं। आतुरता या शीघ्रता से किये जाने वाले कार्यों में विकार का आ जाना स्वाभाविक ही है। चंचल चित्त से होने वाली क्रियाओं में विधि के लोप हो जाने का भय बना रहता है और जब विधि लोप हो जाये तो सिद्धि कहाँ?

जिस भाँति मन्त्र को देवता की आत्मा माना जाता है, उसी भाँति यन्त्र देवता का निवास स्थल माना जाता है। अत: जिस भाँति की सावधानियाँ मन्त्र के प्रयोग काल में स्मरण रखनी होती हैं वहीं सावधानियाँ यन्त्र के प्रयोग काल में आवश्यक हैं। इन सावधानियों का वर्णन नीचे किया जायेगा। चूँकि यन्त्र देवता का स्थल अर्थात् निवास स्थान माने गये हैं। अत: इसके निर्माण में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास का होना नितांत आवश्यक है। यन्त्रों की रचना करते समय रेखा, चक्र, त्रिकोण आदि का शुद्ध भाव से अवलम्बन करके ही प्रयोग का प्रारम्भ करना चाहिए। प्रयोग में देखा गया है कि यन्त्र निर्माण करते समय बनाई जाने वाली आकृति के कारण साधक के अन्त:करण में अनेक तरह के तूफान आन्दोलित तथा स्पन्दित होते हैं परन्तु इनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

यन्त्रों का प्रयोग पूर्ण लग्न, श्रद्धा एवं विश्वास से करना चाहिए। बिना विश्वास एवं श्रद्धा के यन्त्र से लाभ प्राप्त नहीं होता। यन्त्र में प्रत्येक रेखा की एक माप होती है तथा इन रेखाओं द्वारा निर्मित कोष्ठों आदि का आयतन समान ही होना चाहिए। यन्त्र को रेखांकित करने के बाद यन्त्र के मध्य भाग में संख्या बीज, वर्ण बीज तथा बिन्दु बीज आदि को लिखा जाना चाहिए।

यन्त्रों में दिव्य तथा आलौकिक शक्तियों का निवास अवश्य ही होता है। तभी तो इसके पूजन करने से, दर्शन से तथा धारण करने से लाभादि हो जाते हैं। यन्त्रादि के प्रयोग करने से जो सावधानियाँ स्मरण रखनी चाहिए, उन्हें लिखा जा रहा है—गुरु पुष्य, रवि पुष्य, ग्रहण, दीपावली तथा होली की रात्रि को शुभ माना जाता है, किया जाने वाला प्रत्येक प्रयोग पूर्णतः प्रभावी होता है। इस समय दिशाशूल, चन्द्र आदि का विचार नहीं किया जाता। अतः साधकों को चाहिए कि उपर्युक्त समय में ही प्रयोग का शुभारम्भ करें।

यन्त्रादि के प्रयोग में छः कर्म होते हैं जिन्हें कि शान्ति कर्म, वशीकरण कर्म, स्तम्भन कर्म, विद्वेषण कर्म, उच्चाटन कर्म तथा मारण कर्म कहा जाता है। इन कर्मों की देवियाँ भी मानी गई हैं जो कि निम्न भाँति हैं—

1. **शान्ति कर्म**—इस कर्म की देवी रति को माना गया है। भगवती रति, कामदेव की पत्नी हैं।
2. **वशीकरण कर्म**—इस कर्म की देवी भगवती सरस्वती को माना गया है।
3. **स्तम्भन कर्म**—स्तम्भन कार्य में किये जाने वाले कर्म की देवी लक्ष्मी जी हैं।
4. **विद्वेषण कर्म**—इस कर्म के लिए भगवती ज्येष्ठा को माना जाता है।
5. **उच्चाटन कर्म**—इस कार्य के प्रारम्भ में भगवती दुर्गा को पूजने को कहा गया है।
6. **मारण कर्म**—इस कर्म की देवी महाकाली जी को माना जाता है।

अतः साधकों को चाहिए कि प्रयोग के प्रारम्भ काल में ही कर्म से सम्बन्धित देवि का पूजन करके अपने मत को प्रकट कर दें। अच्छा तो यह रहता है कि पूजन के पहले ही हाथ में जल लेकर विनियोग कर लिया जाये।

कर्म की परिभाषा

ऊपर प्रत्येक कर्म की देवी के विषय में समझाया गया है। उन कर्मों की अपनी ही एक परिभाषा भी होती है जो कि निम्नलिखित है—

- ☐ **शान्ति कर्म**—जिस प्रयोग के करने से रोगों का, किये कराये का, ग्रहादिकों का निवारण होता है उसे ही शान्ति कर्म कहा जाता है।
- ☐ **वशीकरण कर्म**—जिस प्रयोग को करने से दूसरे व्यक्ति जी हजूरी करें ऐसे कर्म को वशीकरण कर्म कहा जाता है।
- ☐ **स्तम्भन कर्म**—किसी चल रही क्रिया को रोक देना ही स्तम्भन कर्म कहलाता है।
- ☐ **विद्वेषण कर्म**—दो गहरे मित्रों के बीच शत्रुता करा देने वाले कर्म को ही विद्वेषण कर्म कहा जाता है।
- ☐ **उच्चाटन कर्म**—जिस क्रिया के करने से अच्छा भला व्यक्ति भी स्थान छोड़ कर दूर जा बसे, इसे ही उच्चाटन कर्म कहते हैं।
- ☐ **मारण कर्म**—किसी के भी प्राण ले लेने की क्रिया को मारण कर्म कहा जाता है।

कर्म तो छः ही माने गये हैं, यथा—

शान्तिवश्यस्तम्भनानि द्वेषणोच्चाटने तथा।
मारणान्तानि शंसन्ति षट कर्माणि मनीषिणः॥

उपरोक्त श्लोक से प्रमाणित होता है कि कर्म तो छ: ही होते हैं। इन छ: कर्मों के अलावा भी कुछ कर्म माने जाते हैं जो कि इस भाँति हैं—आकर्षण कर्म, रसायन कर्म, यक्षिणी साधन कर्म, सम्मोहन कर्म।

कर्म हेतु दिशा विचार

उपर्युक्त बताये गये समय में भी सिद्धि के हेतु सही दिशा की तरफ ही मुख करके बैठना चाहिए। प्रत्येक कर्म हेतु दिशाओं का विचार करना उत्तम रहता है।

प्रयोग काल में सभी प्रबन्ध सही होने के बावजूद भी दिशा के अनुसार न बैठा जाये तो लाभ नहीं होता। अत: प्रत्येक कर्म के लिए निम्नलिखित दिशायें समझनी चाहिए—

शान्ति कर्म के लिए	ईशान दिशा
वशीकरण कर्म के लिए	उत्तर दिशा
स्तम्भन कर्म के लिए	पूर्व दिशा
विद्वेषण कर्म के लिए	नैऋत्य दिशा
उच्चाटन कर्म के लिए	वायव्य दिशा
मारण कर्म के लिए	आग्नेय दिशा

कर्म हेतु आसन विचार

यन्त्रादि की सिद्धि में आसन आदि का विचार भी उत्तम रहता है। अत: साधकों को निम्नलिखित अनुसार आसन चुनकर प्रयोग करने से अधिक लाभ रहता है—

शान्ति कर्म के लिए	हाथी का चर्म
वशीकरण के लिए	मेढे का चर्म
विद्वेषण कर्म के लिए	घोड़े का चर्म
उच्चाटन कर्म के लिए	ऊँट का चर्म
मारण कर्म के लिए	भैंसे का चर्म

ऊपर बताये गये चर्म के आसन पर पूर्व में ही किये गये विचारानुसार बैठना चाहिए। प्रयोग में देखा गया है कि इन चर्मों आदि की प्राप्ति प्राय: सम्भव नहीं हो पाती अत: निम्नलिखित विचारों को भी समझ कर प्रयोग में ला सकते हैं—

- ☐ रेशमी आसन पर बैठकर प्रयोग करने से व्याधियों का नाश होता है।
- ☐ सूत से बने आसन पर बैठने से प्रयोग विफल ही रहता है।
- ☐ ऊन के आसन पर बैठने से दु:ख दारिद्रय का नाश होता है।
- ☐ कुशासन पर बैठकर प्रयोग करने से आयु, आरोग्य का लाभ होता है।

- मृग चर्म पर बैठ कर प्रयोग करने से ज्ञान सिद्धि प्राप्त हो जाती है ।
- व्याघ्र चर्म पर बैठ कर प्रयोग करने से मोक्ष मिलता है ।
- लकड़ी से बने आसन पर बैठ कर प्रयोग कभी न करें क्योंकि इससे विपरीत फल की प्राप्ति होती है ।
- कई रंगों के बने ऊनी आसन पर बैठकर प्रयोग करने से सफलता की पूर्ण आशा रहती है ।
- शान्ति कर्म के लिए धवल वर्ण के आसन पर बैठकर प्रयोग करें तो शत् प्रतिशत सिद्धि प्राप्त होती है ।
- गृहस्थ साधक को मृग चर्म या व्याघ्र चर्म पर बैठ कर प्रयोग नहीं करना चाहिए ।
- पत्तों आदि से बनाये गये आसन पर बैठ कर साधना करने से दीर्घायु प्राप्त होती है ।
- पत्थर पर बैठकर जप, प्रयोगादि करने से दु:ख की प्राप्ति होती है ।

अत: जहाँ-जहाँ आसन का प्रयोग यन्त्रों के साथ मिले तो उसी के अनुसार करें अन्यथा कुश के आसन का प्रयोग करें या जो भी आसन समयानुसार प्राप्त हो सके उसी को प्रयोग में लायें । इस सबके साथ उपरोक्त बातों को स्मरण भी रखें । यह आपके लिए लाभदायक होगा ।

यहाँ तक किया गया वर्णन सर्वाथ सिद्ध योगों के लिए उचित है । ऐसे समय कोई भी विचार न करके पूर्व में बताई गई सावधानियों पर चल कर प्रयोग को सफल बनाया जा सकता है । प्रयोग काल में मौन रहना चाहिए । यन्त्र को कभी भी घुटने पर रख कर नहीं लिखना चाहिए । प्रयोग काल में धूप, दीप का जलते रहना नितांत आवश्यक है । यन्त्र लिखने के बाद धरा पर नहीं रखना चाहिए । साधक के वस्त्रों पर नील आदि न लगा हों तो उत्तम होगा ।

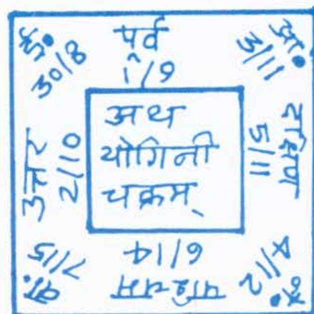
सदैव स्मरण रखें कि यन्त्र लिखते समय स्याही कम न हो जाय तथा कलम न टूटने पाये। यह दो बातें अपशकुन मानी जाती हैं। आसन दो हाथ लम्बा, डेढ़ हाथ चौड़ा और तीन अंगुल से अधिक मोटा नहीं होना चाहिए।

अष्टगंध

अगर, तगर, केशर, कस्तूरी, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, हाथी का मद तथा गोरोचन को खरल करके गुलाब जल में घिस कर स्याही बना लेनी चाहिए। यह स्याही देवताओं के यन्त्रों में प्रयोग की जाती है। भगवती के यन्त्रों की स्याही का अष्टगंध अलग प्रकार का होता है। अतः उपरोक्त स्याही का प्रयोग भगवती के यन्त्र लिखने में न करें। देवी भगवती के यन्त्र में प्रयोग के लिए अष्टगंध निम्नलिखित लेवें—चन्दन, अगर, हल्दी, कुंकुम, गोरोचन, शिलाजीत, जटामांशी तथा कर्पूर।

यह भी ध्यान रखें !

सर्वाथ सिद्ध योगों के बाद भी प्रयोग की आवश्यकता पड़े तो उपरोक्त नियमों का पालन तो करना ही होगा तथा इनके अलावा यह भी ध्यान रखना होगा—चन्द्र बल अवश्य देखें। जन्म का चन्द्र कल्याण करता है। दूसरे भाव का चन्द्र सन्तुष्टि प्रदान करता है। तीसरे चन्द्र धन सम्पत्ति दाता होता है। चौथे चन्द्र से कलह होती है। पाचवें भाव का चन्द्र ज्ञान वृद्धि करता है तो छटे भाव के चन्द्र से लाभ की प्राप्ति होती है। सातवें चन्द्र से राज्य समाज में मान-सम्मान बढ़ता है तो आठवें भाव का चन्द्र मारक प्रभाव रखता है। नवाँ चन्द्र धर्म की एवं लाभ की उन्नति करता है तो दसवें भाव का चन्द्र अभिलाषा पूर्ण करता है। ग्यारहवें भाव का चन्द्र लाभदायक है तो बारहवें भाव का चन्द्र अत्यन्त हानिकारक होता हैं। अतः प्रयोग के समय चन्द्र चौथे, आठवें तथा बारहवें नहीं होना चाहिए।



योगिनी विचार

चित्र में दिखाई गई दिशादि के नीचे पड़ी संख्यायें तिथि बताती हैं। इसके अनुसार योगिनी का निवास जानें। साधक को बायें योगिनी सुख की दाता है। दाहिने योगिनी का निवास हो तो धन हानि होती है। सम्मुख योगिनी का निवास मृत्यु कारक होता है तो पीठ पीछे धन का अत्यन्त लाभ कराती है।

कर्म हेतु वारादि विचार

रविवार को मारण, मंगलवार को विद्वेषण, बुधवार को उच्चाटन, शुक्रवार को लक्ष्मी साधन तथा शनिवार को वशीकरण प्रयोग किये जायें तो शुभाशुभ होता है।

कर्म हेतु तिथि विचार

यहाँ पर प्रत्येक तिथि का अलग-अलग कर्म हेतु प्रयोग दर्शाया गया है। आशा है कि साधकों को इससे अत्यन्त लाभ होगा।

तीज और तेरस के दिन आकर्षण करें।

चौथ, चौदस तथा पड़वा को स्तम्भन कर्म करें।

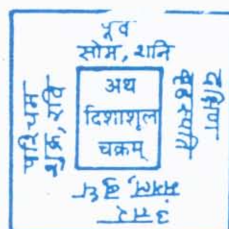
पंचमी और पूर्णमासी को मारण कर्म करें।
दोयज और छट को उच्चाटन कर्म करें।
सप्तमी तिथि को वशीकरण कर्म करें।
अष्टमी तथा नवमी को मोहन कर्म करें।
एकादशी तथा द्वादशी को मारण कर्म करें।

कर्म हेतु काल विचार

अभी तक बताई गई बातों में काल का विचार भी अत्यन्त आवश्यक है। आप समझ गये होंगे कि कर्म छ: होते हैं। इन कर्मों को ऋतु अनुसार करके और भी लाभ पाया जा सकता है। अत: हेमन्त ऋतु में शान्ति कर्म करें, वसन्त ऋतु में वशीकरण कर्म करें, शिशिर ऋतु में शान्ति कर्म करें, ग्रीष्म ऋतु में विद्वेषण कर्म करें, वर्षा ऋतु में उच्चाटन कर्म करें तथा शरद ऋतु में मारण कर्म को प्रधानता दें।

तन्त्र शास्त्र में यह माना जाता है कि सभी ऋतुएं एक दिन में भोग करती हैं, यथा सूर्योदय से दस घटी तक बसन्त, अगली दस घटी तक ग्रीष्म, इसके बाद की दस घटी तक वर्षा, बाद की दस घटी शिशिर, इसी भाँति अगली दस घटी शरद और फिर हेमन्त ऋतु होती है। इस प्रकार साठ घटी का दिन पूर्ण हो जाता है।

इसे आप इस भाँति भी समझ सकते हैं कि दोपहर से पहले बसन्त, मध्याह्न में ग्रीष्म, तीसरे पहर को वर्षा, प्रदोष में शिशिर, आधी रात में शरद तथा उषा:काल में हेमन्त ऋतु समझनी चाहिए।



नन्दा	१, ६, ११	शुक्र
भद्रा	२, ७, १२	बुध
जया	३, ८, १३	भोम
रिक्ता	४, ९, १४	शनि
पूर्णा	५, १०, १५	गुरु

दिशा शूल विचार

इस चित्र में जिस-जिस दिन जो दिशा लिखी है, उस दिशा में उस दिन को दिशाशूल होता है। अत: इस दिन दर्शायी गई दिशा की तरफ मुख करके प्रयोग न करें।

योग विचार

पाठक जानते ही होंगे कि तिथि पाँच प्रकार की होती है, जिनका कि नाम—नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा होता है। इन तिथियों का दिन के वारों के साथ बहुत महत्वपूर्ण योग बनता है, जिसे कि आप इस भाँति समझ सकते हैं—मंगलवार को जया, गुरुवार को पूर्णा, बुधवार को भद्रा, शनिवार को रिक्ता, शुक्रवार को नन्दा तिथि का योग हो तो सिद्धिदायक योग होता है। चित्र में प्रथम तिथि के नाम दर्शाये गये हैं, दूसरे खाके में तिथियाँ बताई गई हैं जिन्हें कि प्रथम खाके में दर्शायी तिथि के नाम प्राप्त हैं। बाद के खाके में वारादि बताये गये हैं। इन वारों के साथ तिथियों का संयोग होने से स्वार्थ सिद्ध योग बनता है जो कि सिद्धि या प्रयोग के लिए लाभदायक होते हैं। इस विवेचन का स्मरण साधकों को अवश्य ही रखना चाहिए।

यन्त्र साधक

ऊपर बताई गई बातें साधना-पथ के यात्री के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। इसी पुस्तक में पंचदशी यन्त्र के लेखन में जो बातें कही गई हैं उनका भी स्मरण रखना चाहिए। सावधानी, श्रद्धा, अटूट मेहनत, विश्वास ही साधना पथ को सुगम बनाते हैं।

जिस स्थान पर प्रतिदिन यन्त्रों का लेखन होता रहता है, वहाँ पर मृत्यु भय, चोर भय, भूत-प्रेत भय, पिशाचादि भय कभी भी नहीं होते।

प्रात: उठकर स्नान आदि करने के बाद पहले बताई गई विधियों के अनुसार यन्त्र को लिखें। तीन दिन तक पूजन करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा पृथ्वी पर एकान्त में शयन करें तो यन्त्र का अधिष्ठाता देव देवता स्वप्न में दर्शन देकर यन्त्र के विषय में वार्ता करता है। यह वार्ता किसी को भी नहीं बतलानी चाहिए।

सदैव स्मरण रखें—

यज्ञों में यज्ञ	अश्वमेघ यज्ञ
युगों में युग	सतर्युग
नक्षत्रों में नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र एवं
तिथियों में तिथि	अमावस्या।

साधना करने वालों के लिए पुष्य नक्षत्र एक ऐसा नक्षत्र है जिसके होने से कोई भी दिशाशूल, चन्द्र शूल आदि का विचार नहीं करना पड़ता। बिना किसी विचार के साधना का शुभारम्भ किया जा सकता है। इस पुष्य नक्षत्र का यह लाभ केवल रवि या गुरु के संयोग से ही होता है। स्मरण रखें कि—

- गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो तो पूर्ण सिद्धि दायक होता है।
- रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो सर्व सिद्धि दायक होता है।
- गुरुवार के पुष्य नक्षत्र के साथ ही दशमी तिथि का संयोग अति सिद्धि दायक होता है।
- केवल दशमी तिथि का पुष्य भी सिद्धि में लाभदायक माना गया है। इस योग को अमृत सिद्ध योग कहते हैं।
- केवल गुरुवार को दशमी पड़े तो भी प्रयोग लाभदायक होता है।

देवदत्त विचार

आप यन्त्रों को जब देखेंगे तो प्राय: देवदत्त लिखा हुआ अवश्य देखेंगे और यह शब्द कुछ असमंजस में डाल भी सकता है। इस स्थान पर देवदत्त शब्द को स्पष्ट किया जा रहा है जो कि साधक वर्ग के लिए लाभदायक मार्गदर्शन होगा।

'देवदत्त' वह व्यक्ति है जिसके लिए साधन किया जा रहा है अर्थात् यन्त्र में उस स्थान पर जहाँ पर कि देवदत्त शब्द मिले, उस व्यक्ति का नाम लिखना है जिसके लिए प्रयोग किया जा रहा है। उदाहरणार्थ—वशीकरण प्रयोग में देवदत्त वह व्यक्ति होगा जिसे कि आकर्षित करना है। इसी भाँति शान्ति प्रयोग में रोगी का नाम लिखें। मारण प्रयोग में शत्रु का नाम, उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण में भी शत्रु का नाम लिखा जायेगा। उपरोक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि देवदत्त का अर्थ क्या है? अत: यन्त्र साधना से पहले देवदत्त का स्पष्टीकरण करना अति अनिवार्य विषय है। यहाँ पर देवदत्त से सम्बन्धित आवश्यक बातें बतलाई गई हैं, अब अगले शीर्षक में कलम से सम्बन्धित आवश्यक ज्ञान करायेंगे।

कलम विचार

यन्त्र लिखने के लिए कलम की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है। अतः ध्यान रखें कि पेड़ की टहनी को साधारणतः ही न तोड़ कर लायें बल्कि नीचे दिये विधान के अनुसार ही कलम ग्रहण करें। बिना विधान के कलम तो बन जाती है परन्तु वह शक्तिहीन रहती है। यन्त्र को शक्तिकृत करने के लिए कलम का शक्तिकृत होना भी आवश्यक है। बिना शक्तिकृत हुए कलम केवल लकड़ी ही रहती है। चाहे उसे कितनी भी सुन्दर कलम क्यों ना बना दिया जाये। अतः वृक्ष की टहनी को कलम निर्माण हेतु निम्न विधान के अनुसार ही ग्रहण करें।

जिस वृक्ष की टहनी की कलम के लिए आवश्यकता हो एक दिन पहले सन्ध्या के समय थोड़ा सा गुड़, चावल, रोली और सुपारी लेकर आवश्यक वृक्ष के पास जायें। हाथ में पीली सरसों लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें और वृक्ष के चारों तरफ वह सरसों बिखरा दें—

ॐ वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपा ।
अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादस्माच्छिवाज्ञया ॥

इस क्रिया के बाद धूप जला कर वृक्ष के नीचे रख दें। एक पैसा अथवा समर्पणानुसार कोई सिक्का और गुड़, चावल, रोली, सुपारी समर्पित करके वृक्ष को नमस्कार करें तथा निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ें—

ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्य विवर्द्धिनि ।
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः ॥

इस मन्त्र को बोल कर निवेदन करें कि "ऐ वृक्षराज मुझे आपके वृक्ष की एक टहनी चाहिए जिससे कि यन्त्र का लेखन करूँगा। अतः आप प्रसन्नचित्त होकर सफलता का आशीर्वाद दें। मैं प्रातःकाल आपकी एक टहनी लेने आऊँगा। नमस्कार।" तथा वापस चले आयें।

अगले दिन प्रातःकाल स्नान करके वृक्ष के समीप जाकर उपरोक्त दूसरा मन्त्र बोल कर नमस्कार करें। इसके बाद "ॐ ह्रीं चण्डे हूँ फट् स्वाहा" बोल कर टहनी तोड़ लावें। सावधानी यह रखें कि टहनी को वृक्ष से अलग करते हुए धातु का प्रयोग न करें। टहनी मोटी हो या न टूटे तो पत्थर, मजबूत लकड़ी या हिरण श्रृंग को धारदार बनाकर इसी से टहनी को काट कर प्राप्त करें। इस भाँति प्राप्त की गई कलम पूर्णतयः शक्तिकृत होती है। ऐसी ही कलम से यन्त्र का लेखन करें।



साधना विचार

साधना पथ एक कठिनतम मार्ग है और इस पर चलना अंगारों पर चलने से भी कठिन है। इस कठिनाई के होते हुए भी साधना पथ प्रत्येक प्राणी का वशीकरण करता रहता है।

अभी तक यन्त्र साधना के विषय में आप बहुत कुछ जान चुके हैं और इतना जान कर कर्म किया जाये तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता कि सिद्धि प्राप्त न हो। कभी-कभी भाग्यवश अति शीघ्र सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है और कभी-कभी साधना करते रहने के बावजूद भी देव कृपा से साधक वंचित रह जाता है। यह सब भाग्यवश भी होता है। यहाँ पर मैं साधना और भाग्य के विषय में नवीन तथ्य उजागर कर रहा हूँ जिसके अनुसार चल कर साधक शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त कर सकेगा।

अभी तक पूर्व में बताये गये नियम तो आवश्यक हैं ही, यहाँ पर उस देवता के विषय में प्रकाश डाला जायेगा जो कि भाग्यवश साधक को शीघ्र सिद्धिदायक होते हैं। लोगों को बताने पर इस विषय में अभी तक पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। अत: आशा है कि पाठक इस विषय को जानकर अत्यन्त लाभान्वित होंगे।

व्यक्ति किसी भी देश, धर्म में क्यों न पैदा हो, उस पर ग्रह गोचर जीवन भर प्रभाव डालते रहते हैं। जन्में व्यक्ति का जीवन कैसा होगा ? इसे जानने के लिए जन्म कुण्डली का निर्माण किया जाता है। माना जाता है कि यह जन्म कुण्डली व्यक्ति का जीवन दर्पण होता है। जन्म कुण्डली बनाने की प्रथा प्राचीन समय से ही चली आ रही है और आज तो विदेशों में भी इसका निर्माण किया जाता है। ऊपर दिया चित्र एक जन्म कुण्डली की पृष्ठ भूमि है। इसमें एक से बारह तक संख्यायें लिखी गई हैं। साधक वर्ग को पाँच तथा नौ अंक के घरों को देखना होगा। यह आवश्यक नहीं है कि इन घरों में उपरोक्त अंक ही, अन्य जन्म कुण्डलियों में पाये जायें बल्कि अंक कोई भी एक से बारह तक हो सकते हैं परन्तु साधना की सिद्धि को जानने तथा समझने के लिए पाँचवें तथा नवें घर को ही समझना होगा क्योंकि पाँचवाँ घर विद्या का घर है तथा नवाँ भाग्य तथा धर्म का घर है। विद्या और धर्म के अभाव में मनुष्य की क्या गति होती है ? यह सभी जानते हैं।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु आदि नवग्रह माने जाते हैं और इनमें से कोई भी ग्रह नवम् घर में पड़ेगा तो वह ग्रह अपना विशेष प्रभाव दिखायेगा।

नवें घर में कोई ग्रह बैठे या कहीं पर भी बैठ कर नवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखे तो भी पूर्ण प्रभाव रहता है। ग्रह का देखना निम्नलिखित सिद्धान्त से समझें।

सूर्य, चन्द्र, बुध—अपनी स्थिति से सातवें घर को,

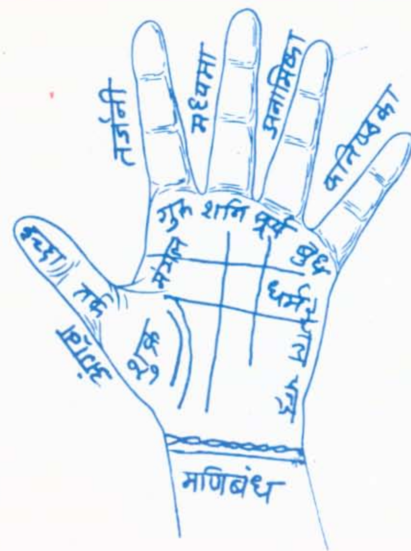
गुरु, राहु, केतु—अपनी स्थिति से पाँचवें, सातवें तथा नवें घर को,

शनि—अपनी स्थिति से तीसरे, सातवें तथा दसवें घर को,

मंगल—अपनी स्थिति से चौथे, सातवें तथा आठवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता हैं। किसी स्थान पर कोई भी ग्रह न हो परन्तु कहीं पर स्थित ग्रह वहाँ पर देख रहा हो तो उसका फल ग्रह के स्थित होने के समान ही घटित होगा। अत: नवम घर में स्थित या कहीं पर बैठ कर पूर्ण दृष्टि से देख रहे ग्रह के अनुरूप ही धर्म, उपासना को समझें।

सूर्य और मंगल राजसी ग्रह हैं। चन्द्र और बुध सात्विक ग्रह हैं। शुक्र तथा गुरु सत्व गुणी ग्रह हैं। शनि, राहु तथा केतु तामसी ग्रह हैं। यहाँ पर स्मरण रखें कि सात्विक तथा राजसी ग्रहों का किसी कारणवश स्थान सम्बन्ध या दृष्टि सम्बन्ध हो जाये तो राजसी प्रभाव मुख्यत: होता है।

पाँचवें घर की व्याख्या को भी उपरोक्त की भाँति ही समझें। घर में स्थित अंक, राशि का सूचक होता है। अत: पुरुष राशि हो तो पुरुष देवता या स्त्री राशि हो तो स्त्री देवता की उपासना होती है। यहीं पर यह भी समझ लें कि ग्रह भी नर नारी होते हैं यथा—सूर्य, मंगल, गुरु तो पुरुष ग्रह हैं तथा चन्द्र, बुध, शुक्र स्त्री ग्रह हैं। इसी भाँति समझ कर अपने इष्टदेव का, मन्त्र-यन्त्र और देवता का चुनाव करें जिससे कि सिद्धि शीघ्र सम्भव हो सके। यह एक विस्तृत विषय है, इसके विषय में ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तक में अधिक प्रकाश डाला जायेगा। अभी तक शिष्य गणों को उपरोक्त विधि के अनुसार विचार करने और साधना करने पर पर्याप्त लाभ ही मिला है। पाठकों एवं जन कल्याण के लाभार्थ इस विषय को यहाँ पर प्रस्तुत किया गया। जन्म कुण्डली के विद्या तथा धर्म के विषय में संक्षिप्त प्रकाश डालने के बाद एक और महत्त्वपूर्ण रहस्य खोल रहा हूँ।



हस्त सामुद्रिक के अनुसार साधन

पूर्व ही बताये गये ज्योतिष सिद्धान्त में ग्रहों को तो आप पूर्ववत्त ही समझें तथा हाथ (दाहिने) में उनकी स्थिति को चित्रानुसार स्मरण कर लें। हाथ में समुद्र सी गहराइयाँ होती हैं जिन्हें कि यहाँ स्पष्ट कर पाना सम्भव नहीं है। यहाँ पर उपासना विषय पर संक्षिप्त प्रकाश डाल रहा हूँ। चित्र में दर्शाये स्थान लिखे हुए ग्रहों के होते हैं। अंगुलियों के अन्त तथा हस्त के प्रारम्भ में अर्थात् हाथ के उस स्थान पर जहाँ से अंगुली का प्रारम्भ हुआ है एक उभरा या धंसा हुआ स्थान होता है जिसे कि पर्वत कहते हैं। चित्र में दिखाये नाम उन्हीं स्थानों पर समझें और यही पर्वत उन ग्रहों को सूचित करते हैं। जो पर्वत उभरा उठा हुआ हो उसे उच्च का समझें, धंसें या दबे पर्वत को नीच का समझें तथा समतल पर्वत को मध्य की स्थिति का सूचक जानना चाहिए।

अच्छे सूर्य पर्वत से कलाप्रियता, प्रखरता तथा राजसी गुण, चन्द्र पर्वत के कारण कल्पनाप्रियता तथा अकारण क्रोध, मंगल पर्वत से मानसिक स्थिति, बुध पर्वत से सफलता और प्रसिद्धी, गुरु पर्वत से महत्वाकाँक्षी, नेतृत्व, धर्म, यश, मान, शनि पर्वत से गाम्भीर्य चिन्तन, अध्ययन, अन्धविश्वास तथा निराशा, शुक्र पर्वत से प्रणय, सहानुभूति, कला, विद्या आदि का विचार किया जाता है। उभरे पर्वत ज्योतिष में बताये नियम से ग्रह के अनुसार समझें।

शनि पर्वत के कारण विचारें कि वह व्यक्ति व्यस्त, समाज से दूर, रहस्य भरे विषय का प्रेमी, जंगल पहाड़ पर भूत-प्रेत जगाने में मस्त, जादूगर आदि होगा।

इस विषय को भी भविष्य में अलग किसी पुस्तक में विस्तृत रूप से प्रकाशित किया जायेगा। हमें आशा है कि अभी तक प्रस्तुत विषय सामग्री पाठकों के लिए चाहे वह साधक हों या न हों, लाभदायक प्रमाणित तो होगी ही, इससे उनका और भी अधिक मार्गदर्शन होगा। प्रस्तुत पुस्तक के मुख्य आकर्षण पर आप आ चुके हैं।

शमशान साधन आदि में आसन पर बैठकर सर्वप्रथम अपने शरीर को बंध लगायें जिससे कि आपकी कोई हानि न हो। किसी भी बंध आदि के न जानने पर हाथ में पीली सरसों लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलें—

ॐ अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूतलेस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नशयन्तु शिवाज्ञयाः ।
अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारंभे ॥
ॐ सर्व विघ्नानुत्सार यो सारय हुं फट् स्वाहा ॥

इसके पश्चात् अपने चारों तरफ उक्त सरसों बिखरा दें फिर बाँए पाँव से पृथ्वी पर तीन बार आघात करें। इस क्रिया को करने के बाद तीन बार ताली बजायें। "ॐ अस्त्राय फट्" बोलते हुए दशों दिशाओं की तरफ हाथ करके चुटकी बजायें। तत्पश्चात् कर्म के लिए निश्चित दिशा की तरफ दिव्य दृष्टि से देखें और फिर आसन पर बैठ कर कार्य का शुभारम्भ करें।

विघ्नविनाशक "शान्ति स्तोत्र"

इस विघ्न विनाशक शान्ति स्तोत्र का पाठ तान्त्रिक प्रयोग के मध्य उपस्थित हो जाने वाले विघ्न आदि का नाश कर देता है। अत: जब भी अनुष्ठान करते समय किसी भी प्रकार का विघ्न आ पड़े तो इस विघ्न विनाशक शान्ति स्तोत्र के ग्यारह पाठ अवश्य करें। इस स्तोत्र का एक बार भी पढ़ा जाना अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है। प्रयोग के चलते समय किसी भी प्रकार की गड़बड़ी, भूल-चूक, भ्रम आदि के होते ही इस स्तोत्र का पाठ लाभप्रद प्रमाणित हुआ है। इसके जप करने मात्र से ही सभी विघ्न नाश होकर शान्ति हो जाती है।

नश्यन्तु प्रेतकुष्माण्डा नश्यन्तु दूष का नरा:।
साधकानां शिवा: सन्तु आम्नायपरिपातिनाम् ॥ 1 ॥
जयन्ति मातर: सर्वा जयन्ति योगिनीगणा:।
जयन्ति सिद्धडाकिन्यो जयन्ति गुरुपङ्क्तय: ॥ 2 ॥
जयन्ति साधका: सर्वे विशुद्धा: साधकश्च ये।
समयाचारसम्पन्ना जयन्ति पूज का नरा: ॥ 3 ॥
नन्दन्तु चाणिमासिद्धा: नन्दन्तु कुलपालका:।
इन्द्राद्या देवता: सर्वे तृप्यन्तु वास्तुदेवता: ॥ 4 ॥

चन्द्रसूर्यादयो देवास्तृप्यन्तु मम भक्तितत:।
नक्षत्राणि ग्रहा योगा: करणा राशयश्च ये.॥5॥
सर्वे ते सुखिनो यान्तु सर्पा नश्यन्तु पक्षिण:।
पशवस्तुरगाश्चैव पर्वता: कन्दरा गुहा:॥6॥
ऋषयो ब्राह्मणा: सर्वे शान्ति कुर्वन्तु सर्वदा।
स्तुता मे विदिता: सन्तु सिद्धास्तिष्ठन्तु पूजका:॥7॥
ये ये पापधियस्सुदूषणरता मन्निन्दका: पूजने।
वेदाचारविमर्दनेष्टहृदया भ्रष्टाश्च ये साधका:॥
दृष्ट्वा चक्रमपूर्वमन्दहृदया ये कोलिका दूषकास्ते।
ते यान्तु विनाशमत्र समय श्री भैरवस्याज्ञया॥8॥
द्वेष्टार: साधकानां च सदैवाम्नायदूषका:।
डाकिनीनां मुखे यान्तु तृप्तास्तत्पिशितै: स्तुता:॥9॥
ये वा शक्तिपरायणा: शिवपरा ये वैष्णवा: साधव:।
सर्वस्मादखिले सुराधिपमजं सेव्यं सुरै: सन्ततम्॥10॥

शक्ति विष्णुधिया शिवं च सुधिया श्री कृष्णबुद्ध्या च ये ।
सेवन्ते त्रिपुरं त्वभेदमतयो गच्छन्तु मोक्षन्तु ते ॥ 11 ॥
शत्रवो नाशमायान्तु मम निन्दाकरश्च ये।
द्वेष्टारः साधकानां च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ 12 ॥
ततः परं पठेत स्तोत्रमानन्दस्तोत्रमुत्तमम् ॥

॥ इति शान्ति स्तोत्रम् ॥



सर्व यन्त्र मन्त्र तन्त्रोत्कीलन प्रारम्भः

पार्वत्युवाच

देवेश परमानन्द भक्तानाममयप्रदः ।
आगमा निगमश्चैव बीजं बीजोदयस्तथा ॥ 1 ॥
समुदायेन बीर्जानां मन्त्रो मन्त्रस्य संहिता ।
ऋषिच्छन्दादिकं भेदो वेदिकं यामलादिकम् ॥ 2 ॥
धर्मोऽधर्मस्तथा ज्ञानं विज्ञान च विकल्पनम् ।
निर्विकल्पविभागेन तथा षटकर्मसिद्धये ॥ 3 ॥
मुक्ति मुक्ति प्रकारश्च सर्व प्राप्तं प्रसादतः ।
कीलनं सर्वमन्त्राणां शंस यद् हृदये वचः ॥ 4 ॥
इति श्रुत्वा शिवानाथः पार्वत्या वचनं शुभम् ।
उवाच परया प्रीत्या मन्त्रोत्कीलनकं शिवाम् ॥ 5 ॥

शिव उवाच

वरानने हि सर्वस्य व्यक्ताव्यक्तस्य वस्तुनः।
साक्षीभूय त्वमेवासि जगतस्तु मनोस्तथा ॥6॥
त्वया पृष्टं वरारोहे तद्वक्ष्याम्युत्कीलनम्।
उद्दीपनं हि मन्त्रस्य सर्वस्योत्कीलनं भवेत् ॥7॥
पुरा तव मया भद्रे समाकर्षणवश्यजा।
मन्त्राणां कीलिता सिद्धि सर्वे ते सप्तकोटयः ॥8॥
तवानुग्रहप्रीतत्वात्सिद्धिस्तेषां फलप्रदा।
येनोपायेन भवति तं स्तोत्रं कथयाम्यहम् ॥9॥
श्रृणु भद्रेऽत्र सततमावाभ्यामखिलं जगत्।
तस्य सिद्धिर्भवेत्तिष्ठ मया येषां प्रभावकम् ॥10॥
अन्नं पानं हि सौभाग्यं दत्तं तुभ्यं मया शिवे।
संजीवनं च मन्त्राणां तथा दत्तुं पुनर्ध्रुवम् ॥11॥
यस्य स्मरणमात्रेण पाठेन जपतोऽपि वा।
अकीला अखिला मन्त्राः सत्यं सत्यं न संशयः ॥12॥

विनियोग मन्त्रः

ॐ अस्य श्री सर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्राणाम् उत्कीलनमन्त्रस्तोत्रस्य मूल प्रकृति ऋषिर्जगतीच्छन्दः, निरंजनो देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रः लौं कीलकं, सप्तकोटिमन्त्रयन्त्रतन्त्रकीलकानां संजीवनसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

अथाङ्गन्यासः

ॐ मूलप्रकृतिऋषये नमः शिरसि ।
ॐ जगतीच्छन्दसे नमः मुखे
ॐ निरंजनदेवतायै नमः हृदि
ॐ क्लीं बीजाय नमः ग्रहये
ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः
ॐ ह्रः लौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे

अथ करन्यासः

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ हैं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ हौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यासः

ॐ हां हृदयाय नमः ।

ॐ हीं शिर से स्वाहा ।

ॐ हूं शिखायै वषट् ।

ॐ हैं कवचाय हुम् ।

ॐ हौ नेत्रत्रयाय वोषट् ।

ॐ हः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

ॐ ब्रह्मस्वरूपममलं च निरंजनं तं,

ज्योतिः प्रकाशमनिशं महतो महान्तम् ।
कारुण्यरूपमतिबोधकरं प्रसन्न,
दिव्यं स्मरामि सततं मनुजावनाय ॥ 1 ॥
एवं ध्यात्वा स्मरेन्नित्यं तस्य सिद्धिस्तु सर्वदा ।
वांछितं फलमाप्नोति मन्त्रसंजीवनं ध्रुवम् ॥ 2 ॥

मन्त्रः

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्रादिनाम् उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

मूल मन्त्रः

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षटपंचाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा ॥
ॐ जूं सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्राणां संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊँ ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मात्राक्षराणां सर्वम् उत्कीलनं कुरु स्वाहा ।

ॐ सोहं हं सो हं (ग्यारहा बार पढ़ें) ॐ जूं सों हं हंसः ॐ ॐ ११ हं जूं हं सं गं ११ सोहं हं सो यं ११ लं ११ ॐ ११ यं ११ ॐ ह्रीं जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रस्तोत्रकवचादीनां संजीवय संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ॐ सोहं हं सः जूं संजीवन स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं मन्त्राक्षराणाम् उत्कीलय उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ॐ ॐ प्रणवरूपाय अं आं परमरूपिणे ।
इं ईं शक्ति स्वरूपाय उं ऊं तेजोमयाय च ॥ 1 ॥
ऋं ॠं रंजितदीप्ताय लृं ॡं स्थूल स्वरूपिणे।
एं ऐं वाचां विलासाय ओं औं अं अः शिवाय च ॥ 2 ॥
कं खं कमल नेत्राय गं घं गरुड़ गामिने।
ङं चं श्री चन्द्र मालाय छं जं जय कराय ते ॥ 3 ॥
झं ञं टं ठं जयकत्रे डं ढं णं तं पराय च।
थं दं धं नं नमस्तस्मै पं फं यन्त्रमयाय च ॥ 4 ॥
बं भं मं बल वीर्याय यं रं लं यश से नमः।
वं शं षं बहुवादाय सं हं लं क्षं स्वरूपिणे ॥ 5 ॥

दिशामादित्यरूपाय तेजसे रूपधारिणे ।
अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः ॥ 6 ॥
मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्यै नमो नमः ।
प्राणेशायै क्षीणदायै संसंजीव नमो नमः ॥ 7 ॥
निरंजनस्य देवस्य नाम कर्म विधानतः ।
त्वया ध्यातं च शक्त्या च तेन संजायते जगत् ॥ 8 ॥
स्तुताहमचिरं ध्यात्वा मायाया ध्वंस हेतवे ।
संतुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सः ॥ 9 ॥
ब्रह्माणं चेतयन्ती विविध सुरनरांस्तर्पयन्ती प्रमोदाद
ध्यानेनोद्दीपयन्ती निगमजपमनुं षट् पदं प्रेरयन्ती ।
सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुतदमनी साप्यहंकारमूर्ति
स्तुभ्यं तस्मे च जाप्यं स्मररचितमनुं मोचये शापजालात् ॥ 10 ॥
इदं श्री त्रिपुरा स्तोत्रं पठेद भक्तया तु यो नरः ।
सर्वान कामानवाप्नोति सर्वशापाद् विमुच्यते ॥ 11 ॥
॥ इति श्री सर्व यन्त्र मन्त्र तन्त्रोत्कीलनं सम्पूर्णम् ॥

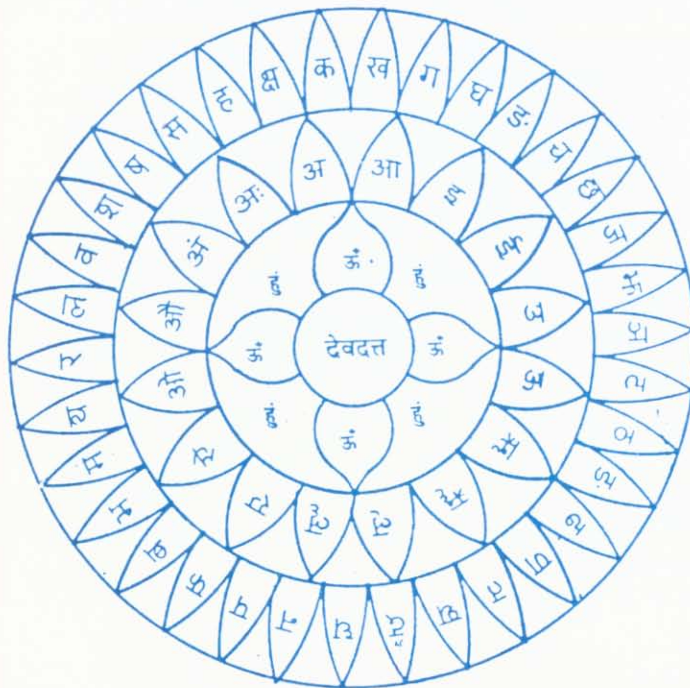
यन्त्र कैसे लिखें ?

सर्वप्रथम यन्त्र को विधि के अनुसार चित्रित करें। अपने आसन के सामने कुछ पुष्प फैला कर एक कलश में जल भरके, उन फूलों के मध्य कलश को रख दें। कलश को ढक करके पुष्पादि से पूजन करें तथा उसके ऊपर लिखे यन्त्र को रख कर धूप-दीपादि करें। इसके बाद श्री सर्व यन्त्र मन्त्र तन्त्र उत्कीलन का पाठ करें। इस क्रिया के चलते समय यन्त्र सामने रहना चाहिए। पाठ के बाद यन्त्र की विधिवत् पूजा कर लेनी चाहिए। पूजा के बाद श्रद्धानुसार यन्त्र का प्रयोग करें तो अवश्य ही उसका प्रभाव अति शीघ्र होगा।

प्रस्तुत पुस्तक के यन्त्र अति प्रभावी हैं अत: इनको लिख कर ही प्रयोग करने से लाभ की प्राप्ति की जा सकती है। किसी विशेष प्रयोजन में उपरोक्त उत्कीलन विधि को प्रयोग में लायें।

यन्त्र प्रयोग या यन्त्र लेखन करते समय गत पृष्ठों में बतलायी सभी बातों को ध्यानपूर्वक समझकर यथा समय प्रयोग में लाए, तभी यन्त्र साधना में सफलता मिलेगी। यन्त्र साधना में दृढ इच्छा शक्ति, विश्वास और प्रबल आस्था के बल पर ही सफलता मिलती है।

◇ महारक्षा यन्त्र ◇



1. महारक्षा यन्त्र

इस महारक्षा यन्त्र को लिखने के लिए गोरोचन, कुंकुम या चन्दन, कर्पूर और भोजपत्र का प्रबन्ध करें। रवि पुष्य या गुरु पुष्य के शुभ दिवस में इस यन्त्र को लिखें। सफेद धागा लेकर यन्त्र पर लपेट करके रेशमी वस्त्र से आच्छादित करें। विधिवत् पूजन हेतु कलश पर स्थापित करें। गंध, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीपादि से पूजन करें और फिर चाँदी के ताबीज में भर कर धारण करें। इस प्राचीन, अत्यन्त प्रभावी, शीघ्र ही लाभकारी महायन्त्र के धारण करते ही सभी रोग नष्ट होकर स्वस्थ लाभ होता है। शत्रुओं का तो तत्काल ही विनाश हो जाता है। अविष्ट ग्रहों का स्तम्भन होकर सुख-सौभाग्य की प्राप्ति हो जाती है।



◇ मणिभद्र यन्त्र ◇

सः सः सः सः सः इ

सः सः क्रौं ह्रीं क्रों

देवदत्त

ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों

ह्रीं क्रों ह्रीं दर

2. मणिभद्र यन्त्र

इस मणिभद्र यन्त्र के लिखने के लिए गोरोचन, कुंकुम तथा लाल चन्दन को मिलाकर भोज पत्र पर बनाये तथा चित्रानुसार यन्त्र बनाकर बीजमन्त्रों को यथा प्रकार से ही लिखें। लेखन के पश्चात् विधिवत् पूजन करें तथा लिखे यन्त्र को लाल सूत्र से लपेट कर अपने शरीर के उद्वर्तन से मनुष्य की प्रतिमा बनावें। इस प्रतिमा के हृदय में लिखे यन्त्र को भर करके उद्वर्तन से ढक दें। सन्ध्या के समय तीन दिन तक खादिर की आग में संतप्त करें तथा निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें—

ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय आकर्षय मणिभद्र स्वाहा॥

उपरोक्त प्रयोग के करने से देशान्तर में स्थित पुरुष आदि का आकर्षण होता है।





3. स्वप्न वार्त्ता यन्त्र

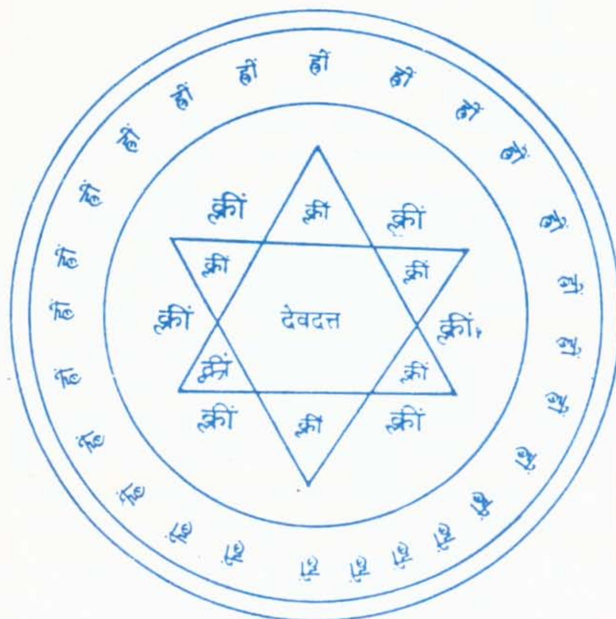
इस स्वप्न वार्त्ता यन्त्र को बनाने के लिए गोरोचन तथा केशर को खरल करके दूध मिला दें तो यन्त्र के लेखन के लिए स्याही बन जायेगी। चमेली की कलम लेकर भोजपत्र पर स्याही से गोलाकार क्षेत्र में देवी की प्रतिमा बनावें तथा गोलाकार क्षेत्र के ऊपर अष्टदल कमल बना कर देवी का बीज मन्त्र लिख लें। धूप दीपादि से पूजन करें। इसके बाद यन्त्र को लाल कपड़े में लपेट कर सिर पर धारण करें। यन्त्र निर्माण से पहले एक सौ आठ बार निम्नलिखित मन्त्र का जाप कर लें—

ॐ आगच्छ आगच्छ चामुण्डे ह्रीं स्वाहा॥

प्रयोग के बाद सो जाने पर यन्त्र मन्त्र के प्रताप से देवता स्वप्न में बातें करते हैं।



◇ माया मय यन्त्र ◇



4. माया मय यन्त्र

किसी भी कारणवश धन की हानि हो जाये और कर्ज पर लिया गया धन भी नाश हो तथा और कर्ज न देकर धनवान बार-बार तकादा करके दुःखी कर रहा हो तो इस यन्त्र का प्रयोग करके धनिक के पास जाने से उसका वशीकरण हो जाता है एवं प्रार्थना करने पर और अधिक धन देकर मद्द (सहायता) करता है। इस यन्त्र को लिख कर लाभ उठाने की विधि निम्नलिखित है—

कुंकुम के साथ गोरोचन मिलाकर भोजपत्र के ऊपर मायामय यन्त्र लिखना चाहिये। यन्त्र लिखकर दुर्गा सप्तशती से देवी महात्म्य का पाठ सात दिवस तक करें। इस पाठ के समय यह यन्त्र समक्ष रखना चाहिये। खीर, शहद एवं घृत से प्रति श्लोक के पश्चात् आहुति देता रहे। इस भाँति करते हुए पूर्णाहुति करके तीन कन्याओं को भोजन करायें, चुनरी आदि देकर श्रद्धाभाव से इस यन्त्र को त्रिलोह के ताबीज में भरकर धारण करें तो अवश्य ही याचना स्वीकार होती है।



◇ यात्रा स्तम्भन यन्त्र ◇



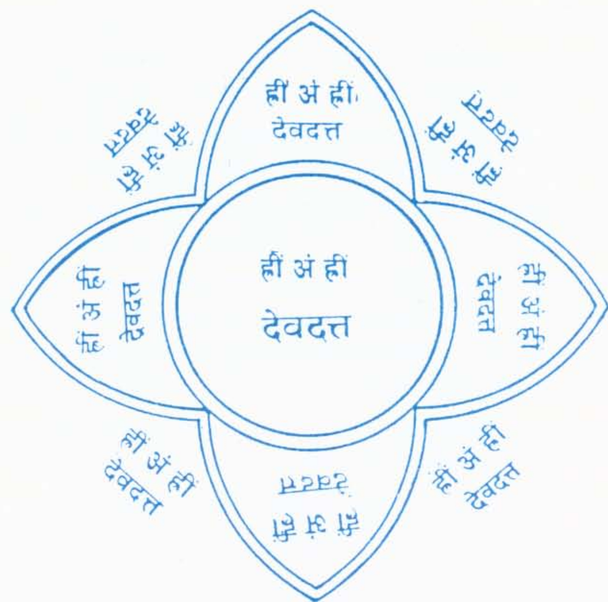
5. यात्रा स्तम्भन यन्त्र

एक काष्ठ का टुकड़ा लेकर पीले द्रव्य से लिप्त कर दें। इसके बाद खड़िया से यात्रा स्तम्भन यन्त्र को लिखें।

विधिपूर्वक यन्त्र का पूजन करके घर के और उसके नीचे मध्य में अधोमुख करके बाँध दें तो यात्रा का स्तम्भन हो जायेगा। यहाँ तक यदि शत्रु यात्रा पर चला भी गया होगा तो बीच रास्ते से ही वापस लौट आयेगा।



◇ शत्रु विद्वेषण यन्त्र ◇



6. शत्रु विद्वेषण यन्त्र

अपने अनेक शत्रुओं के आपस में लड़ने झगड़ने के लिए इस महायन्त्र का प्रयोग करें। अपने किसी विद्वेषी का रक्त लेकर श्मशान के वस्त्र पर कौए के पंख की कलम से यह यन्त्र लिखा जाता है। यह यन्त्र लिखकर बकरी के रक्त से मिश्रित करके चावल और नैवेद्य की बलि देवें। गंध, पुष्पादि से पूजन करें। यह पूजन रात्रि को करें। एक योगिनी को भोजन करायें। एकान्त में स्थित शिवजी के मन्दिर या श्मशान में जाकर इस यन्त्र को स्थापित कर दें। **सावधान—यह पूजन गृह आदि में नहीं करना चाहिए।** इसके प्रभाव से शत्रुओं का आपस में विद्वेषण हो जायेगा।



◇ स्त्रीवश्यकरं कामराज यन्त्र ◇



7. स्त्रीवश्यकरं कामराज यन्त्र

इस यन्त्र को स्त्री वशीकरण हेतु लिखा जाता है । गोरोचन, कुंकुम, लाल चन्दन, कस्तूरी को मिलाकर चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर लिखें । यन्त्र के लिखने के बाद लकड़ी के टुकड़े पर राई से कामदेव की प्रतिमा बना कर लिखा यन्त्र, प्रतिमा के हृदय में स्थापित कर दें ।

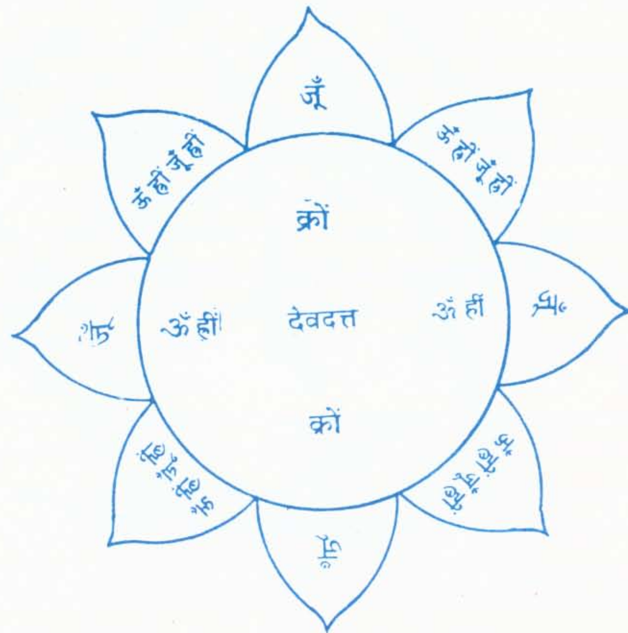
पुष्प, धूप, दीपादि से पूजन करें तो साध्य स्त्री दासी के भाँति सेवा करने लगेगी । सदैव लाभ के लिए प्रति दिवस पूजन करना चाहिए । पूजन के समय यह मन्त्र भी पढ़ा जाय—

कामोऽनङ्गः पुष्पशरः कन्दर्पो मीनकेतनः ।
श्री विष्णुतनयो देवः प्रसन्नो भव मे प्रभो ॥

यह सारा जाप एवं पूजन रात्रि को गुप्त स्थान में ही करें । इस स्त्री वश्यकारक महायन्त्र को हर किसी को नहीं देना चाहिए ।



◇ कमलाख्य यन्त्र ◇

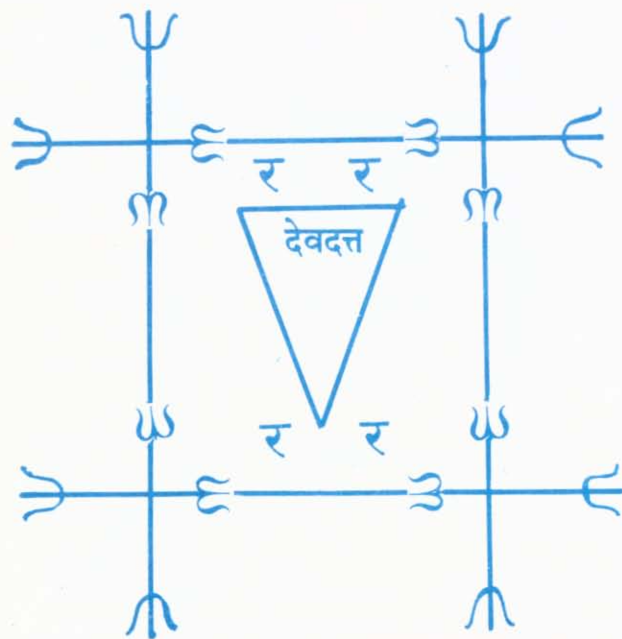


8. कमलाख्य यन्त्र

यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली स्त्री, सौभाग्य का देने वाला है। गोरोचन से भोज पत्र के ऊपर दाड़िम की कलम से कमलाख्य यन्त्र को लिखना चाहिए। विधिवत् पूजन करके—***हे लोकेश! प्रीयताम्*** का जप करते हुए नर-नारी को भोजन खिलावें। इसके बाद कच्चे डोरे में लपेट कर त्रिलोह के ताबीज में भर कर के धारण करें तो अतिश्रेष्ठ सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

इसके धारण से बंध्या को पुत्र लाभ होता है। यहाँ तक मृतवत्सा को भी पुत्र लाभ हो। यह यन्त्र स्त्रियों को सुख-सौभाग्य का देने वाला है अतः इसे गले के हार में प्रयोग करें।



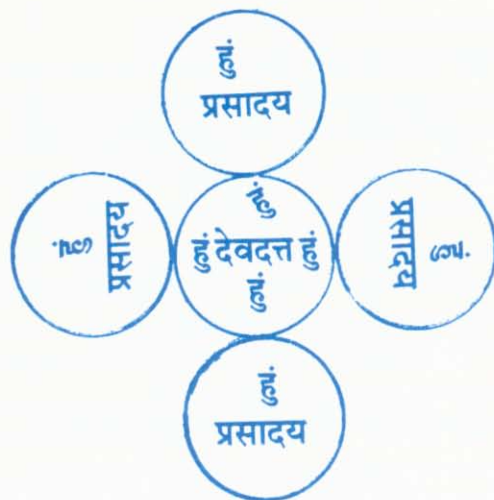


9. बन्धु विद्वेषण यन्त्र

श्मशान से वस्त्र लाकर कौए के पंख की कलम पक्षी के पंख से काली स्याही के साथ लिखें। भूतरात्रि में श्मशान से जलता कोयला लेकर भेड़ के रक्त में घिस कर यन्त्र के मध्य में त्रिकोण के ऊपर देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। धूपादि करके भूमि में सात अंगुल गहरा खड्डा खोद कर यन्त्र को दबा देने पर शत्रुओं और भाई-भाई में विद्वेष होगा। इस गड़े यन्त्र के ऊपर जिसका भी पाँव पड़ेगा तो वह भी दुर्भागी होकर विद्वेषण का शिकार होकर दुःखी होगा। इस महायन्त्र का प्रभाव ही कुछ इस तरह का है। अतः उस राह या उस स्थान पर ही दबावें जहाँ से शत्रु का आवागमन होता हो। इस महायन्त्र को गुप्त रखकर ही प्रयोग करें तो अत्यधिक लाभ होगा।



◇ क्रोधशमनं जामदग्न्य यन्त्र ◇



10. क्रोधशमनं जामदग्न्य यन्त्र

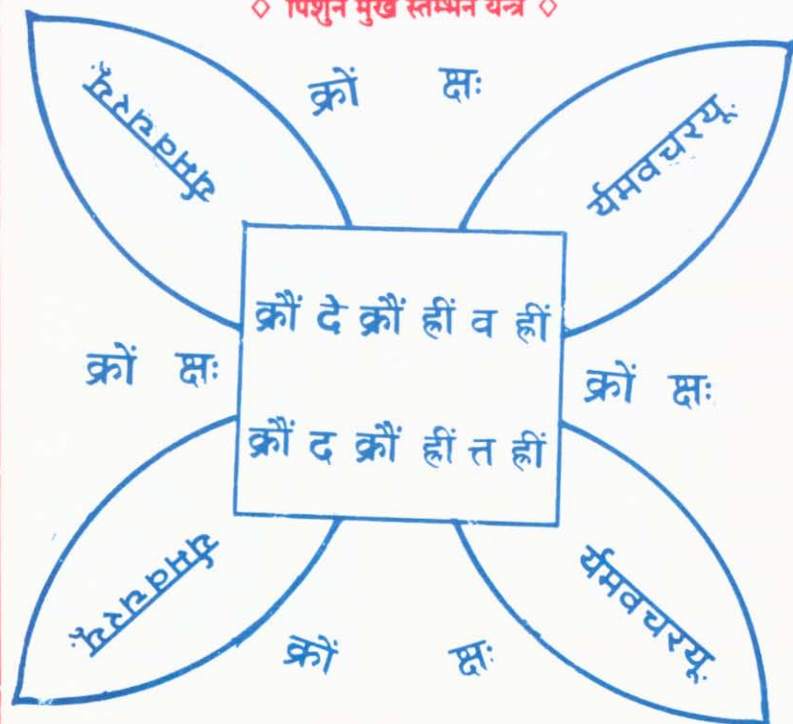
किसी भी कारणवश कोई क्रोधित होकर हानि पहुँचाने की कोशिश करे तो इस क्रोधशमनं जामदग्न्य यन्त्र का प्रयोग करें।

गोरोचन से ताड़ पत्र के ऊपर काँटों से सोमवार के दिन लिखें। कुम्हार की मिट्टी में यन्त्र को दबा दें तथा फिर गंध आदि से पूजन करें। यह पूजन सात दिन तक लगातार करें। इस पूजन के समय यह मन्त्र भी पढ़ते रहें—

अक्रोधनः सत्यवादी जमदग्निर्दृढ़व्रतः।
रामस्य जनकः साक्षात्सत्त्वमूर्त्ते नमोऽस्तुते॥

इस सात दिवस के प्रयोग के करने के बाद किसी वेदपाठी को भोजन कराकर दानादि दें। इस प्रयोग के प्रभाव से साध्य व्यक्ति के हृदय से क्रोध समाप्त हो जाता है।





11. पिशुन मुख स्तम्भन यन्त्र

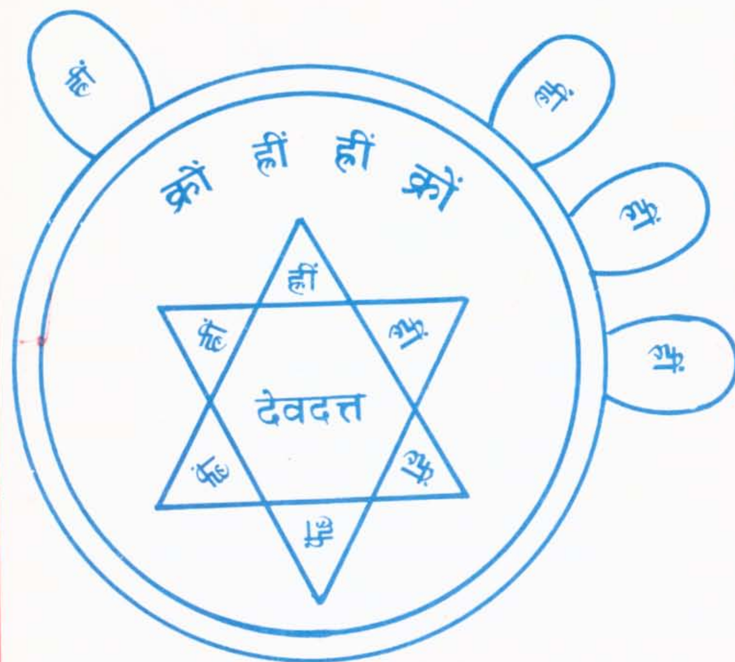
इस यन्त्रराज का प्रयोग तब करें जबकि शत्रु चुगली कर-कर के हानि पहुँचा रहें हों। शत्रु का मुख स्तम्भन हो जायेगा। इस महायन्त्र के प्रभाव से शत्रु की जिह्वा, बुद्धि आदि का स्तम्भन हो जाता है।

गोरोचन को पानी में घिसकर भोज पत्र पर यह यन्त्र लिखें। लाल सामग्री से पूजन करें। लाल सामग्री में स्वयं का रक्त, लाल वस्त्र, लाल पुष्प तथा लाल चन्दन चढ़ा कर ब्राह्मण को भोजन कराकर दान आदि दें।

धरा में गड्ढा खोदकर यन्त्र को दबा दें तो शत्रु की वाणी, बुद्धि तथा चुगली करने के प्रयास आदि का नाश हो जाता है।



◇ कामाक्षं यन्त्र ◇



12. कामाक्षं यन्त्र

इस अद्भुत यन्त्र को स्त्री वश्यकारक यन्त्र भी कहा जाता है। इस यन्त्र के दर्शन मात्र से कामबाण का प्रभाव होता है तथा मानिनी स्त्रियाँ भी व्याकुल होकर आ उपस्थित होती हैं। इसे कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन मिलाकर भोज पत्र पर चमेली की कलम से लिखें। पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति-भाव से गंध, पुष्प तथा नैवेद्य आदि से पूजन करें। श्वेत वस्त्र धारण कर यन्त्र को समक्ष रखकर रात्रि के समय साध्य स्त्री का ध्यान करें। धूप-दीप जलता रहे। इसके बाद ब्राह्मणियों को भोज्य पदार्थ देकर सन्तुष्ट करें। इस दानादि क्रिया के करते समय ***कामाक्षी प्रीयताम्*** बोलते रहें। इसके बाद त्रिलोह के ताबीज में भरकर धारण करें। इसके धारक को देखकर कामादि से पीड़ित होकर राज व अन्य स्त्रियों की प्राप्ति होती है। महा वशीकरण यन्त्र का प्रयोग स्त्री की प्राप्ति के लिए किया जाता है।



13. ललनाकृति कामराज यन्त्र

इस ललनाकृति कामराज यन्त्र के प्रभाव से कैसी भी मानिनी स्त्री क्यों न हो शीघ्र आकर्षित होकर चली आती है। इस यन्त्र के लेखन के लिए दाहिने हाथ की अनामिका ऊँगली के रक्त से बाँए हाथ की हथेली पर चित्र में दर्शाए यन्त्र के अनुसार ही लिखें। बीज मन्त्र वैसे ही लिखें जैसे कि यन्त्र में दर्शाए गये हैं। देवदत्त के स्थान पर उस स्त्री का नाम लिखें, जिसे आकर्षित करना हो। यन्त्र के लेखन के पश्चात् धूप, दीपादि से पूजन करें तो साध्य स्त्री एक प्रहर में ही आकर्षित होकर खिंची चली आती है।

◇ ललनाकृति कामराज यन्त्र ◇





14. बन्धमोचन यन्त्र

एक पुये के ऊपर घी से बन्ध मोचन यन्त्र को लिखें तथा गंध, पुष्पादि से पूजन करें। इसके बाद साध्य व्यक्ति को खिला दें तो सात दिनों के बीच ही बन्दी छूट जाता है। देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें।

◇ बन्धमोचन यन्त्र ◇





◇ शान्ति पौष्टिक यन्त्र ◇

क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ॠं
छं	भं	मं	यं	रं	ढं	लृं
चं	बं	सं	हं	लं	णं	लृं
ड़	फं	षं	शं	वं	तं	एं
घं	पं	नं	धं	दं	थं	ऐं
गं	खं	कं	अः	अं	औं	ओं
क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं

15. शान्ति पौष्टिक यन्त्र

यह एक प्राचीन महा रक्षाकारक यन्त्र है। इसके धारण करने से शान्ति तथा निरोगता प्राप्त होती है। इस महाप्रभावी यन्त्र को कोई भी धारण कर सकता है। दीपावली, ग्रहण, रवि पुष्य या गुरु पुष्य के शुभाशुभ समय में गोरोचन, कुंकुम, कर्पूर और कस्तूरी एकत्र करके चमेली की कलम से काँसे के पात्र पर यन्त्र को लिखें। पूजन के लिए लाल कमल, मालती, जूही, चमेली आदि पुष्प लायें। बिना गंध का पुष्प इस पूजन में न चढ़ावें। मौसम का फल, ताम्बूल, धूप, दीप, गंध, श्वेत वस्त्र, नैवेद्य आदि से इस महायन्त्र का पूजन करें। ब्राह्मण द्वारा दुर्गा सप्तशती का पाठ कराकर तीन दिन तक ब्राह्मणों को भोजन करायें। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए भूमि पर शयन करे। इसके बाद त्रिलोह के ताबीज में भरकर धारण करें। इस प्रयोग से शत्रुओं को क्षोभ और उपद्रव, दारिद्रय, दुर्भाग्य, क्लेशादि दोषों की शान्ति हो जाती है।



◇ बन्ध मोक्षणं यन्त्र ◇



16. बन्ध मोक्षणं यन्त्र

यह एक ऐसा यन्त्र है जिसके प्रयोग करने मात्र से ही बन्दी छूट जाता है। यह यन्त्र कर्पूर और कुंकुम मिलाकर भोज पत्र के ऊपर अनार की कलम से लिखा जाता है। यन्त्र लिखने के बाद गंध, पुष्पादि से यन्त्रराज का पूजन करें। त्रिलोह के ताबीज में भरकर धारण किया जाये तो तत्काल ही बन्दी छूट जाता है।

इस बन्ध मोक्षणं यन्त्र के धारण किये रहने से शरीर स्वस्थ बना रहेगा। कैद तो स्वप्न में भी असम्भव होगी। इस प्रभावशाली यन्त्र को प्रत्येक स्थान पर प्रकाशित न करें तथा अयोग्य को कदापि न दें।



◇ शत्रु उच्चाटन यन्त्र ◇

ॐ गं गणपति प्रहितं
हुं गं देवदत्त
हुं गं धं स्वांग हेति

17. शत्रु उच्चाटन यन्त्र

यह शत्रु के उच्चाटन के लिए परम उच्चाटन यन्त्र है। इसे लिखने के लिए अनामिका का रक्त निकालें और भोज पत्र पर लिखें। लिखने के बाद लाल वस्त्र पहन कर रक्त माला और रक्त अनुलेपन से युक्त होकर कृष्णपक्ष की रात्रि में रक्त पुष्प, रक्त गंध, मौसमी फल आदि से यन्त्र की पूजा करें। बच्चों को भोजन करायें। गणपति जी का ध्यान करें। इनका ध्यान इस भाँति है—

तु देवदवस्य गणनास्य सुन्दरि, नीलाञ्जनामं गजवक्रवर्यं शत्रुं गृहीत्वा निज पुष्करेण। उच्चालयन्तं गगनं गणेशं ध्यात्वा तु नित्यं विधिवन्मनुष्यः ॥

उपरोक्त ध्यान को जपते भी रहें। इस भाँति करने के बाद यन्त्र के टुकड़े करके जूठे भात में मिलाकर कौओं को खिला दें तो शत्रु का उच्चाटन अवश्य हो जाता है। यन्त्र का दुरुपयोग न करें, वरना आपके अपने लिए अहितकर होगा।



◇ सास-ससुर वशीकरण यन्त्र ◇

ॐ (ऊपर बायें), ह्रीं (ऊपर दायें), ह्रीं (मध्य), क्रीं (नीचे बायें), स्वा (नीचे दायें)

१	११ ११

◇ मृतवत्सा दोष शान्तिकरण यन्त्र ◇

ॐ	ह्रीं	क्लीं	स्त्रीं	हुं	फट्
रक्ष	गर्भ	देवदत्त	गर्भ	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	श्रीं	क्लीं	फट्	हुं

18. सास-ससुर वशीकरण यन्त्र

एक गेहूँ की रोटी पर हल्दी से इस यन्त्र को लिख कर सास को वश में करने के लिए काली कुतिया को खिलायें। ससुर को वश करना हो तो यह रोटी कुत्ते को खिलानी चाहिए।



19. मृतवत्सा दोष शान्तिकरण यन्त्र

मृतवत्सा दोष की शान्ति के लिए गोरोचन तथा केंशर मिलाकर अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखें। यन्त्र लिखने के बाद पूजन करके धारण करने से तो गर्भ सही समय पर होता है और सन्तान जीवित रहती है।



◇ स्वामीभृत्य विद्वेषण यन्त्र ◇



◇ एकान्तर ज्वर नाशक यन्त्र ◇



20. स्वामीभृत्य विद्वेषण यन्त्र

किसी रक्त में विष मिलाकर काक के पंख की लेखनी से श्मशान कर्पट के ऊपर इस यन्त्र को लिखें। विधिवत् पूजन करके उस रास्ते में दबा आयें, जहाँ से कि स्वामी और उसका सेवक आते-जाते हों। इस यन्त्र के प्रभाव से उनका आपस में विद्वेषण होगा।

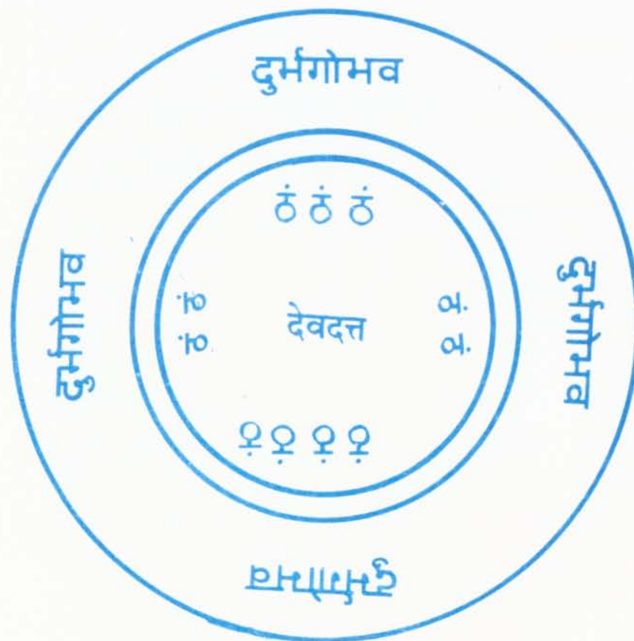


21. एकान्तर ज्वर नाशक यन्त्र

इस यन्त्र के लेखन के लिए हल्दी वृक्ष का रस निकालें तथा बबूल के काँटे से चित्र के अनुसार यन्त्र को लिख कर ताम्बूल से पूजन करें। इस क्रिया के बाद लिखा हुआ यन्त्र बीमार को खिला दें तो क्षण भर में ही एकान्तर ज्वर का नाश होकर रोगी स्वास्थ्य लाभ करेगा।



◇ विश्व विद्वेषण यन्त्र ◇

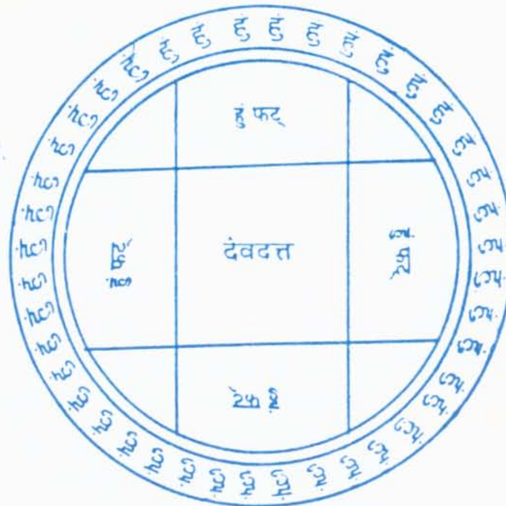


22. विश्व विद्वेषण यन्त्र

इस यन्त्र को काक तथा उल्लू के रक्त को लेकर लिखें। गंध, पुष्पादि से पूजन करें। घर के बीचों बीच घास में दबाकर स्थापित कर दें। यह यन्त्र जब तक घर में दबा रहेगा, तब तक घर में आपसी विद्वेषण होता रहेगा और सभा समाज में मानहानि होती रहेगी।



◇ देशान्तर स्थल शत्रु मारण यन्त्र ◇



23. देशान्तर स्थल शत्रु मारण यन्त्र

श्मशान से कोयला लाकर बकरी के रक्त मिलावें। मनुष्य की खोपड़ी पर कौए के पंख से देशान्तरस्थल शत्रु मारण यन्त्र को लिखें। सम्पुट में लेकर भस्म से पूरित करें और आग पर स्थापित करें तो विदेश में स्थित शत्रु का मरण इक्कीसवें दिन तक अवश्य हो जायेगा।



24. सर्वजन मारण यन्त्र

◇ सर्वजन मारण यन्त्र ◇

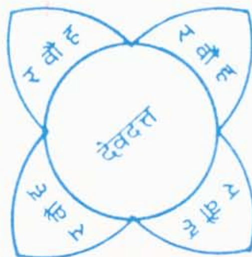


मनुष्य के रक्त में श्मशान के अंगारे को लेकर घिसें। इसमें विष मिलावें। कौए के पंख की कलम से श्मशान के वस्त्र पर लिखें। शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी लेकर राजिका मिश्रित कर एक प्रतिमा बनावें। इस प्रतिमा के हृदय में इस यन्त्र को स्थापित कर दें। तत्पश्चात् विधिपूर्वक इस प्रतिमा का दाह करें तो शत्रु को दाह और व्याधि उत्पन्न होकर सिर में भयंकर पीड़ा होगी। हाथ पाँव में दाह होकर सातवें दिन शत्रु मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।



25. शत्रु उच्चाटन यन्त्र

◇ शत्रु उच्चाटन यन्त्र ◇



नीम के पत्तों का रस निकालें। कौए के पंख की लेखनी से भोज पत्र पर नीम के पत्तों के रस से, परम शत्रु उच्चाटन यन्त्र को लिखें। विधिवत् पूजन करके अधोमुख करके भूमि में गाड़ देने पर सातवें दिन शत्रु उच्चाटन को प्राप्त होकर कहीं अन्यत्र ही चला जायेगा।



◇ देवमातृक यन्त्र ◇



◇ यात्रा स्तम्भन यन्त्र ◇



26. देवमातृकं यन्त्र

यह देवमातृकं यन्त्र नारियों के आकर्षण हेतु महाफलदायक है। इसका प्रयोग करने के लिए लाख का रस, हल्दी तथा मजीठ की स्याही बनाकर भोज पत्र पर लिखें। साध्य व्यक्ति के पाँव की मृत्तिका लाकर एक पुतली बनाकर उसकी योनि में इस यन्त्र को स्थापित करें तो शीघ्र ही साध्य नारी आकर्षित होकर साधक को प्राप्त होगी।

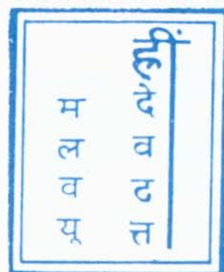


27. यात्रा स्तम्भन यन्त्र

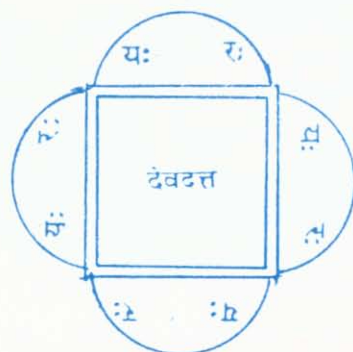
शिला सम्पुट के ऊपर पीले द्रव्य से यात्रा स्तम्भन यन्त्र को चित्र के अनुसार लिखें। यन्त्र के लेखन के पश्चात् पीले फूलों से ही यन्त्र का पूजन करें। पृथ्वी के मध्य में यन्त्र को स्थापित करें। इस प्रयोग के करने से यात्रा का स्तम्भन हो जाता है।



◇ अरिनिवारण यन्त्र ◇



◇ गर्भ रक्षा यन्त्र ◇



28. अरिनिवारण यन्त्र



इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखें। विधि के अनुसार पूजन करें तथा त्रिलोह के ताबीज में भर कर धारण करें या घर पर स्थापित करें तो सर्प, व्याघ्र, चोर आदि का भय न होगा तथा अन्य सभी उपद्रव भी शान्त हो जाते हैं।

♥ ♥ ♥

29. गर्भ रक्षा यन्त्र



इस गर्भ रक्षा यन्त्र के निर्माण हेतु हाथी का मद लाकर गुलाब जल में मिलाकर खरल करें। अनार की कलम लेकर भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखें। विधिवत् पूजन करके चाँदी के ताबीज में भर करके गर्भवती महिला के कण्ठ में धारण करें तो हानि के सम्पूर्ण दोष समाप्त होकर गर्भ रक्षा होगी तथा प्रसव सुख से होगा।

♣ ♣ ♣

◇ शीघ्र उच्चाटन यन्त्र ◇



30. शीघ्र उच्चाटन यन्त्र

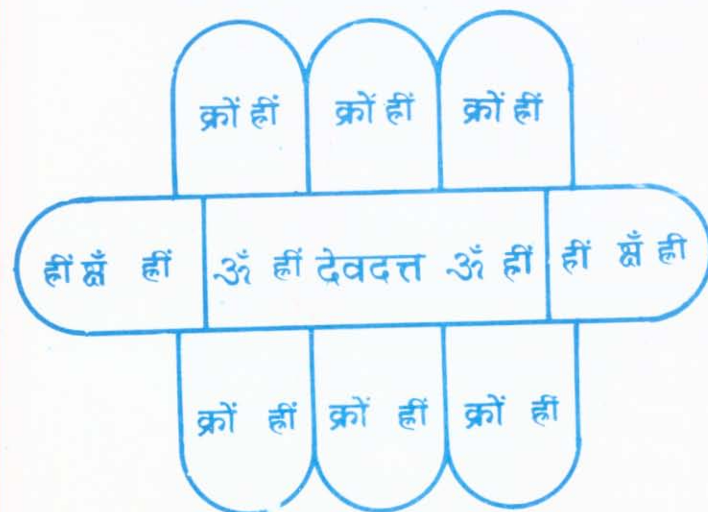
इस यन्त्र का प्रयोग करने से शत्रु शीघ्र ही उच्चाटित होकर चला जाता है तथा अन्य स्थान पर जाकर भी सुखी नहीं रहता।

विष, तालक, गोदन्ती, हरताल एवं चीता को मिलाकर कौए के पंख से श्मशान के वस्त्र पर लिखें। यन्त्र लिखने के बाद विभीतक के वृक्ष के दक्षिण भाग में रात्रि को अधोमुख करके टांग दें।

ऐसा करने के तीन दिन बाद शत्रु का उच्चाटन हो जायेगा। इस यन्त्र में जो आकृति है वह एक काला कौआ है।



◇ सुख प्रसव यन्त्र ◇



31. सुख प्रसव यन्त्र

अगर किसी गर्भिणी को यह भय हो या वास्तव में ही भूत आदि लगे हों तो इस यन्त्रराज को धारण करें। इसके धारण से प्रत्येक व्यथा का अन्त हो जाता है। भूतादिक भाग जाते हैं। स्त्री की तथा गर्भ की रक्षा होती है।

इसे लिखने के लिए हाथी के मद को खरल करें तथा गुलाब जल मिलाकर स्याही बना लें। अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखें तथा पूजन करके त्रिलोह के ताबीज में भर कर गर्भिणी के कण्ठ में पहना देने पर प्रसव सुख से होता है। जच्चा-बच्चा की रक्षा होती है और कोई भी अलाबला भविष्य में परेशान नहीं करेगी।



◇ सर्प स्तम्भन यन्त्र ◇



◇ ज्वर शमन यन्त्र ◇



32. सर्प स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को भोज पत्र के ऊपर लिखें। देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम अंकित करें। विधिवत् पूजन करके त्रिलोह के ताबीज में भर करके धारण करें या घर में रखें तो चारों दिशाओं में पास-पास के सर्प दूर भाग जाते हैं। धारक का पाँव साँप पर पड़ जाय तो वह कुछ नहीं कहता। भूल से काट भी ले तो जहर नहीं चढ़ता।

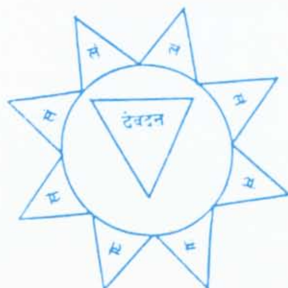


33. ज्वर शमन यन्त्र

धतूरे के वृक्ष का रस लेकर भोज पत्र पर ज्वर शमन यन्त्र को लिखें। पूजन करके जल में स्थापित कर दें तो देवदत्त (अर्थात् साध्य व्यक्ति) का ज्वर तीन दिनों में समाप्त हो जाएगा। इस यन्त्र का प्रयोग समय बाँध कर आने वाले ज्वरों में ही करें। यदि रोगी को अलाबला के कारण ज्वर आदि हो तो इस यन्त्र को धारण करवायें तभी लाभ होगा।



◇ प्रतिवादी मुख स्तम्भन यन्त्र ◇



◇ भय नाशक यन्त्र ◇

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	१
४	६	३३	३६

34. प्रतिवादी मुख स्तम्भन यन्त्र

प्रतिवादी के मुख का स्तम्भन करने के लिए शिला सम्पुट के मध्य में पीले द्रव्य से यन्त्र को लिखें। पीले पुष्पों से ही पूजन करें। खीर आदि पीले पदार्थ से ब्राह्मण को भोजन करायें। इसके बाद एकान्त में जाकर भूमि में यन्त्र को स्थापित कर आयें तो वाद-विवाद, शास्त्रचर्चा, व्यवहार आदि में प्रतिवादी का मुख स्तम्भित रहेगा।

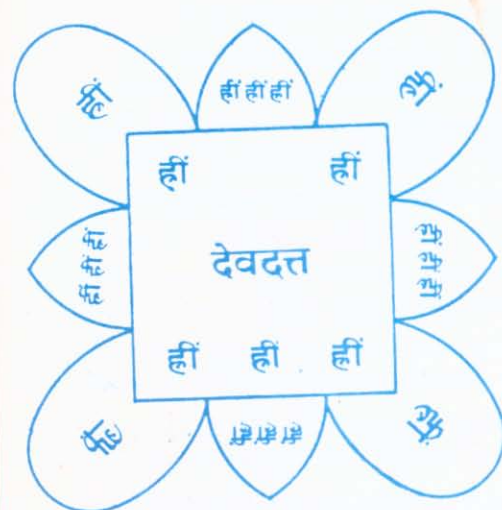


35. भय नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कागज पर केशर से लिख कर घर के दरवाजे के सामने गाड़ दें। ऐसा करने पर समस्त भय समाप्त हो जाता है और भविष्य में सुरक्षा रहती है।



◇ ललिता यन्त्र ◇



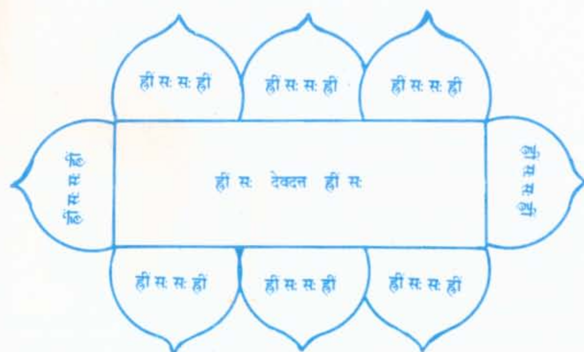
36. ललिता यन्त्र

इस अत्यन्त प्रभावशाली यन्त्र के धारण करने से दुर्भाग्य का अन्त होकर सुख का आगमन होता है। यन्त्र पर पूर्ण श्रद्धा रखें। इस यन्त्र को लिखने के लिए गोरोचन, कुंकुम, कस्तूरी तथा लाल चन्दन को खरल में घिस कर गुलाब जल में मिला कर घोल लें तो स्याही बन जायेगी। अनार या चमेली की कलम से भोज पत्र पर उपरोक्त स्याही से चित्र के अनुसार श्री ललिता यन्त्र को लिख कर यथा स्थान ही बीज मन्त्रों को भी ध्यान से लिख लें। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी की रात्रि के समय से सात रात्रि तक यन्त्र का पूजन करें। इसके बाद भाग्यशाली सात स्त्रियों को भोजन आदि से तृप्त करें। इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ें—***शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रीयतामिति। रूप देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे श्रियम॥ भगवति वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्यवर्धनम्॥***

उपरोक्त क्रियाओं को सम्पूर्ण करने के बाद श्री ललिता यन्त्र को चाँदी के ताबीज में भर करके गले में धारण करें तो भगवती ललिता के प्रसाद से सौभाग्य बढ़े, रूप निखरे और पति अत्यन्त प्रेम करे।



◇ वशीकरण तथा दुष्ट स्तम्भन यन्त्र ◇



37. वशीकरण तथा दुष्ट स्तम्भन यन्त्र

जब किसी का अधिकारी क्रुद्ध होकर हानिं करे या ऐसी आशंका लगे कि वह हानि पहुँचायेगा तो उसके वशीकरण के लिए इस यन्त्र का प्रयोग करें। इसी भाँति किसी को शत्रु के द्वारा झूठ प्रचार करके आपकी मानहानि कर रहा हो तो भी इस यन्त्र के प्रयोग से लाभ मिलेगा।

अनार की कलम से भोज पत्र पर गोरोचन तथा कुंकुम से इस प्रभावशाली यन्त्र को लिखें। देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें तथा शराब में सम्पुट करके पूजन करें तो अधिकारी वश में होगा तथा दुष्ट का मुख स्तम्भित होगा।



◇ कालानलं यन्त्र ◇

ह्दीं क्वीं क्दीं क्त्तीं ई

38. कालानलं यन्त्र

इस यन्त्र के लिखने में **ह्रीं** उतने ही लिखें जितने कि साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षर हों। गोरोचन से भोज पत्र पर कालानलं यन्त्र को लिख कर वृक्ष के नीचे की मिट्टी लाकर एक प्रतिमा बनायें। उसके हृदय में यन्त्र को स्थापित कर दें। बाद में प्रतिमा का पूजन करें।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में चूल्हे की कर्वट में खोद कर प्रतिमा गाड़ दें। बकरे के रक्त में भात मिलाकर बलिदान करें। उसी पदार्थ में घी, लाल पुष्प मिलाकर ***ॐ महाकालाय स्वाह*** का जप करते हुए एक सौ आठ आहुतियाँ करें तो दुष्ट से भी दुष्ट व्यक्ति का मोह न होगा।



◇ ऊपरी व्याधियाँ नाशक यन्त्र ◇

५६	५७	६	९
६	९	४५	४३
७६	३६	९	८
७	५	७५	५४

◇ बालक रक्षा यन्त्र ◇

३३	३२	२७
३३	६६	३७
३७	४६	६७

39. ऊपरी व्याधियाँ नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को भोज पत्र पर गोरोचन से लिखें। बाद में काले वस्त्र में लपेट कर घर के सामने गाड़ देने से सभी तरह की ऊपरी व्याधियों से रक्षा होती है। इस यन्त्र का फल आस्था के अनुरूप होता है।

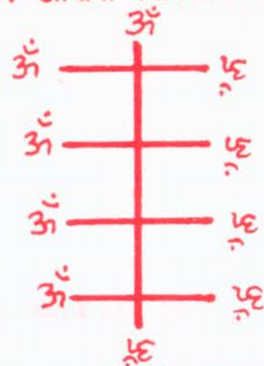


40. बालक रक्षा यन्त्र

इस यन्त्र को शुभ समय पर लिख कर रख लें। बालकों के गले में पहनाने से रोगादि विषयक परेशानियों से मुक्ति मिल जाती है और बालक की सर्व प्रकार से रक्षा होती है। यन्त्र पर पूर्ण विश्वास रखने पर फल तुरन्त मिलता है।



◇ डाकिनी भगाने का यन्त्र ◇



◇ भूत दर्शन यन्त्र ◇

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	९	९	१
४	६	९	१२

41. डाकिनी भगाने का यन्त्र

जब किसी को डाकिनी लगी हो तो इस यन्त्र को कागज पर लिख कर बीमार के सिर से सात बार घुमाकर लोबान का धूप करें। कोई औखली मंगाकर यह यन्त्र उसमें डाल कर कूटें। इस क्रिया से डाकिनी के सिर पर चोट लगती है और वह तड़प कर चिल्लाती हुई भाग जाती है।



42. भूत दर्शन यन्त्र

इस यन्त्र को गिलोय के रस से लिखकर सिरहाने रखकर सोने पर स्वप्न में भूत ही भूत दिखाई देते हैं।



43. भूत दर्शन यन्त्र

यह यन्त्र केवड़े के रस से लिखकर सिरहाने रख कर सोया जाय तो स्वप्न में भूत ही भूत दिखायी पड़ते हैं।



◇ भूत दर्शन यन्त्र ◇

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	९	१
४	६	९	९

44. ऊँट दर्शन यन्त्र

इस यन्त्र को आद्रा नक्षत्र में ऊँट की हड्डी पर लिखकर शत्रु के घर गाड़ आने पर शत्रु को स्वप्न में ऊँट ही ऊँट दिखाई पड़ेंगे।



◇ ऊँट दर्शन यन्त्र ◇

११	१८	२	८
७	३	१५	१४
१०	१२	९	१
४	६	१३	१६

नं	छं	जं	चं
दं	दं	चं	चं
जं	छं	जं	वं
छं	नं	जं	हं

45. राम भक्त श्री हनुमान जी की प्रसन्नता का यन्त्र

इस यन्त्र को लाल चन्दन की कलम से अष्ट गंध की स्याही से लाल गुड़हल के फूलों के पत्ते लेकर प्रतिदिन मंगलवार को पुष्य नक्षत्र से लिखना प्रारम्भ करें। प्रतिदिन बराबर संख्या में लिखें। यह यन्त्र सवा लाख लिखने हैं। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए मंगल का व्रत रहें। इस प्रयोग के करते समय कोई डर या बाधा हो तो किसी से कहे नहीं बल्कि प्रयोग करते रहें। इस प्रयोग के पूर्ण होने पर हनुमान जी साधक पर प्रसन्न होकर मनोकामनापूर्ण करते हैं।

श्री हनुमान जी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हमारे मित्र श्री गुप्ता जी द्वारा किया गया सरल प्रयोग भी लाभकारी होगा, जो कि निम्न भाँति है—मंगलवार को प्रातः राम नाम लेकर हनुमान जी को प्रणाम करें और पूरे दिन का व्रत रहने का संकल्प करके स्नान के बाद बगीचे से लाल गुड़हल के 108 पुष्प लाकर लाल चन्दन की स्याही से पुष्पों पर 'राम' नाम अंकित करके हनुमान जी की सिन्दूर लगी प्रतिमा पर चढ़ायें। बेसन के लड्डू का भोग लगायें। ऐसा सात मंगल करें और व्रत में सुन्दर काण्ड का पाठ सम्पुट लगा कर पढ़ें। ♣ ♣ ♣

46. वानर दर्शन यन्त्र

किसी वानर की हड्डी पर इस यन्त्र को लिखकर, जिसके घर गाड़ देंगे, उसी को स्वप्न में वानर ही वानर दिखाई पड़ेंगे ।



◇ वानर दर्शन यन्त्र ◇

१२	१९	२	८
६	३	१३	१४
१८	१३	९	१
४	६	१४	१७

47. बुद्धि होने का यन्त्र

शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को मालकाँगनी का रस लेकर जीभ के ऊपर लिखने पर तो अनपढ़ व्यक्ति को भी बुद्धि आ जाती है ।



◇ बुद्धि होने का यन्त्र ◇

८४	११	२	८
७	३	८८	८७
९०	८५	९	१
४	३	८५	७०

◇ ज्ञान बोध होने का यन्त्र ◇

७३	९१	२	८
७	३	७८	८६
९०	७४	९	१
४	६	८५	७९

◇ बोध होने का यन्त्र ◇

९३	९१	२	८
७	३	९८	९६
९०	७४	९	१
४	६	९५	९९

48. ज्ञान बोध होने का यन्त्र

शुक्ल पक्ष की तिथियों में जब श्रवण नक्षत्र आये तो थाली में इस यन्त्र को लिख कर उसी थाली में खीर डाल कर खाने पर ज्ञान बोध होता है।



49. बोध होने का यन्त्र

शुक्ल पक्ष की तिथियों में जब श्रवण नक्षत्र हो तो थाली में इस यन्त्र को लिखकर उसी में खीर डालकर खाने पर बोध होता है।



◇ विद्या बुद्धि दाता यन्त्र ◇

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

◇ प्रेत बाधा नाशक यन्त्र ◇

१०ऽ	ॐ	ह्रीं	२
ऽ।	६	३	ऽ७-
१८	स्वं	क्रं	क्लीं
९	यं	८	१

50. विद्या-बुद्धि दाता यन्त्र

इस यन्त्र को चौथे घर से लिखना प्रारम्भ करें तथा प्रति दिन लिखें। ऐसा करने पर विद्या और बुद्धि बढ़ती है और सर्वत्र मान-सम्मान बढ़ता है।



51. प्रेत बाधा नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को रवि या गुरु पुष्य वाले दिन अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धारण करने पर धारक के शरीर को लगा प्रेत भाग जाता है और प्रेत बाधा से मुक्ति मिल जाती है।



52. सर्प, भूत, प्रेत भय नाशक यन्त्र

जब किसी घर में भूत, प्रेत, सर्पादि का भय हो तथा हो तो इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से लिखकर दे दें। धूप दीपादि करके इस यन्त्र को घर में रख देने पर उपरोक्त सभी शिकायतें समाप्त हो जाती हैं।

◇ सर्प, भूत, प्रेत भय नाशक यन्त्र ◇

८०	८७	२	७
६	३	८४	८३
८६	८१	८	१
४	५	८२	८५



53. पलीता यन्त्र

जब किसी को प्रेतादि लगे हों तो इस यन्त्र को लिखकर जलावें और इसके जलने से हो रहा धुआँ बीमार व्यक्ति को सुंघाने पर सिर चढ़ा प्रेत तड़प कर बोलने लगता है। इसके बोलने पर बातचीत भी कर सकते हैं।

◇ पलीता यन्त्र ◇

अ	म्	सि	ज	ज	त्र	०	०	०
द	च	जा	पै	नि	खै	०	०	०



54. तिजारी का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखें। इसके धारण मात्र से ही तिजारी ज्वर दूर हो जाता है।



◇ तिजारी का यन्त्र ◇

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

55. जुआ जीते यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर धारण करें। इसके बाद जुआ खेलें तो जीत अवश्य होगी।



◇ जुआ जीते यन्त्र ◇

१	२५ ।	२३ ।	२३ ।
३१ ।।।	२७ ।।	३५ ।।	३६ ।।
१ ।।	८	२४ ।।	१९ ।।
२६ ।	१ ।।।	५ ।।।	४ ।।।

◇ वाद-विवाद जय यन्त्र ◇

३४	३३८	३३३	या हाफिज
३३८	३३२	३३३	या हाफिज
३३५	३३७	३३७	११
या हाफिज	या हाफिज	११	॥
देवदत्त एवं माँ का नाम			

◇ वचन सिद्धि यन्त्र ◇

६६	९३	२	८
७	३	१०	८१
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

56. वाद-विवाद जय यन्त्र

इस यन्त्र को केशर से लिखकर कण्ठ में पहनने से वाद-विवाद में विजय भी मिलती है।



57. वचन सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को कुलंजन के रस से लिखकर धारण करने पर वचन की सिद्धि होती है।



◇ शत्रु को क्लेश होने का यन्त्र ◇

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

◇ स्नेह नाशक यन्त्र ◇

२१	२२	२३
२०	२४	२९
२५	१६	२१

58. शत्रु को क्लेश होने का यन्त्र

यह एक सौ चौबीसा यन्त्र है। इसे इक्तीसा भी कहते हैं। इसके प्रयोग से शत्रु को क्लेश होता है। काली स्याही से कागज के ऊपर या किसी पत्थर के ऊपर कोयले से इस यन्त्र को लिखें। इसके बाद शत्रु के दरवाजे पर जमीन में गाढ़ आवें तो इस पर से शत्रु के गुजरने मात्र से ही उसे क्लेश हो जाता है। यन्त्र को उखाड़ने से क्लेश की समाप्ति होती है।



59. स्नेह नाशक यन्त्र

इसे प्रीति नाशक यन्त्र भी कहते हैं। इसे कभी भी कागज के ऊपर काली स्याही से ही लिखें एवं सरसों के तेल में ही जलायें। कागज जलाते समय उनका ध्यान करना चाहिए जिनकी प्रीति को नष्ट करना है।



60. इकतरा स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र के धारण करने से एक दिन छोड़ कर आने वाला ज्वर रुक जाता है।



◇ इकतरा स्तम्भन यन्त्र ◇

१२	११	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

61. गई वस्तु वापस आये का यन्त्र

बकरे की हड्डी की कलम बनायें। कनेर के वृक्ष की छाया में बैठकर यह यन्त्र लिखा जाये तो गई या खोई वस्तु वापस मिल जाती है।



◇ गई वस्तु वापस आने का यन्त्र ◇

हूँ	हूँ	हूँ	हूँ
इं	इं	इं	इं
जं	जं	जं	जं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

◇ यात्रा यन्त्र ◇

तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०

◇ ज्वर नाशक यन्त्र ◇

३	४	७	१४
१	६	१०	६
१४	४	३	७
७	३	१४	४

62. यात्रा यन्त्र

इस यन्त्र को लिखने के लिए शमशान से कोयला लेकर आयें। शत्रु के किसी वस्त्र पर लिखें तो शत्रु बरबस ही देशाटन को निकल जाता है।



63. ज्वर नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को किसी शुभ समय पर लिखा जाये। इसके धारण करने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।



◇ मसान दूर करने का यन्त्र ◇

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

◇ प्रीति नाशक यन्त्र ◇

४१	१८	११
२०	३०	१०
२३	३२	१९

64. मसान दूर करने का यन्त्र

इस यन्त्र को शुभ समय पर भोजपत्र पर दाड़िम की लेखनी से लिखकर काले कपड़े का ताबीज बनाकर पहनने से मसान दूर होता है।



65. प्रीति नाशक यन्त्र

यह प्रयोग अक्सर टाल देना चाहिए। बहुत ही दिल जलाने या अपमानजनक स्थिति बन आने पर ही इसे प्रयोग में लायें। कंटाई के पत्ते पर इस यन्त्र को लिख लें और पत्ते को सुखा लें। इसके बाद जिनकी प्रीति नाश करनी हो तो जब वह सो रहे हों तो इस पत्ते को मसल कर उनकी छाती पर डाल आयें तो निश्चय उनकी प्रीति भंग हो जाती है।



◇ छाया भस्मीकरण यन्त्र ◇

२४	११	२०	१	२८	३१	३०
२९	२७	१८	९	७	४७	३८
३७	३५	२६	१७	७	६	४६
४५	३६	२४	२५	५६	१४	५
४	५५	४२	३३	२४	१५	१३
१२	३	४३	४१	३२	२३	२१
२०	१२	२	४९	४०	३१	२२

◇ चिकलवाई दूर करने का यन्त्र ◇

२११	२११	२११	२११
२११	२११	२११	२११
२११	२११	२११	२११
२११	२११	२११	२११

66. छाया भस्मीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को लिखने के लिए बराबर लाइनें खींचकर अंकों से परिपूर्ण करें। यन्त्र को पलीते की भाँति प्रयोग करें तो छाया आदि भस्म हो जाती है।



67. चिकलवाई दूर करने का यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन की स्याही से लिखकर धारण किया जाये तो चिकलवाई दूर हो जाती है।



◇ नित्य ज्वर नाशक यन्त्र ◇

८२	८९	२	७
६	३	५६	५५
५८	६३	८	१
४	५	८४	५७

◇ भूत त्रासन यन्त्र ◇

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

68. नित्य ज्वर नाशक यन्त्र

जिस व्यक्ति को नित्य ज्वर तंग कर रहा हो तो उसे इस यन्त्र को एक ठीकरी पर लिखकर उसके ऊपर से घुमाकर कुएँ में गिरा दें तो उसका नित्य आने वाला ज्वर रुक जाता है।



69. भूत त्रासन यन्त्र

खड़िया मिट्टी से एक नये खप्पड़ पर यह यन्त्र लिखें। बलि देवें। पुष्पादि से पूजन करें। इसके बाद धूल से ढक कर खैर की लकड़ियों की अग्नि में तपायें तो भूतादिक रोते-चीखते और चिल्लाते भाग जाते हैं।



70. शत्रु की छाती फटे यन्त्र

बकरे का रक्त लेकर यह यन्त्र लिखना चाहिए। लिखने के बाद धोबी की शिल के नीचे गाड़ आना चाहिए। धोबी जब इसके ऊपर कपड़े पटकेगा तो शत्रु की छाती फटेगी।



◇ शत्रु की छाती फटे यन्त्र ◇

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	१	९	१
४	६	२२	२५
शत्रु का नाम			

71. शत्रु का शरीर सूजे यन्त्र

इस यन्त्र को शनिवार के दिन लिखें। पूजन करें। चाकू से गोद दे तो शत्रु का शरीर सूजना प्रारम्भ हो जाता है।



◇ शत्रु का शरीर सूजे यन्त्र ◇

६७	७०	२	७
६	३	७६	७३
७६	६२	८	१
४	७	११	७२
शत्रु का नाम			

72. शत्रु का मुख सूजे यन्त्र

इस यन्त्र को गधे के पेशाब से लिखें। नीचे रखकर जूता मारे तो शत्रु का मुख सूज जाता है।



◇ शत्रु का मुख सूजे यन्त्र ◇

४१	४२	२	७
६	३	४५	४०
४७	४३	८	१
४	५	४३	४०

शत्रु का नाम

73. शत्रु का शरीर गले यन्त्र

बकरे का चमड़ा लेकर काली स्याही से लोहे की कलम के द्वारा इस यन्त्र को लिखें। मिट्टी की हाँडी लेकर नमक भरें। इस नमक के बीच में लिखा हुआ यन्त्र दबाकर हाँडी का मुख बन्द कर दें। आधी रात को शमशान में जाकर दबा देने पर शत्रु का शरीर गलने लगता है।



◇ शत्रु का शरीर गले यन्त्र ◇

८३	९०	९	८
७	३	८७	८६
८९	८९	९	१
४	६	८५	८

शत्रु का नाम

◇ नौ ग्रह शान्ति यन्त्र ◇

५७	३००	५७
७०१	३०००००	५०६
३०००००	४००	३०००००

◇ नजर टोक यन्त्र ◇



74. नौ ग्रह शान्ति यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से शुभ समय में लिखें। इसके धारक को नौ ग्रह पीड़ा नहीं देते।



75. नजर टोक यन्त्र

भोजपत्र या कागज पर ही अष्टगंध की स्याही बनाक़र अनार की कलम से लिखकर धारण करने से लगी हुई नजर दूर होती है एवं धारण किये रहने से भविष्य में नजर नहीं लगती।



76. कामना नाशक यन्त्र

कोई व्यक्ति विविध कामनाओं से परेशान हो तो रवि या गुरु पुष्य के योग में, यह यन्त्र लिखकर पास रखें तो उसकी कामनायें समाप्त हो जाती है।

◇ कामना नाशक यन्त्र ◇

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
६१	७६	९	१
४	६	७७	८०



77. विरोध यन्त्र

सर्वप्रथम तम्बोली की कुंडी का पानी लेकर आइये। कागज के ऊपर इसी पानी से यह यन्त्र लिखिये। शत्रु के प्रवेश द्वार पर गाड़ आइये। इसके फलस्वरूप शत्रु के घर से लोग विरोधी हो जायेंगे और उसके घर में क्लेश बढ़ जायेंगे।

◇ विरोध यन्त्र ◇

२८	६२	२	७
६	३	६२	६१
६४	६९	८	१
४	५	६३	६३



78. शत्रु विनाश यन्त्र

अपने शत्रु का विनाश करने के लिए किसी दिन लोहे की कलम बनवाकर नदी किनारे जाकर यह यन्त्र लिखें एवं कल्पना में उस शत्रु का नाश सोचें तो उसका नाश हो जाता है।



◇ शत्रु विनाश यन्त्र ◇

६७	७४	२	८
७	३	७१	७०
७३	६८	९	१
४	६	६९	७२

79. बुद्धि नष्टीकरण यन्त्र

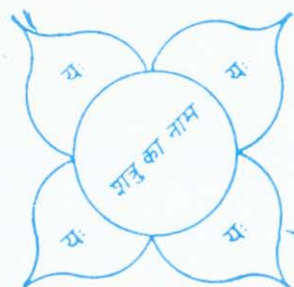
उल्लू का पंख लेकर एकान्त में बैठकर इस यन्त्र को उस पंख पर लिखें। यह पंख जिसके भी सिर पर डाला जायेगा, उसी की बुद्धि नष्ट हो जायेगी।



◇ बुद्धि नष्टीकरण यन्त्र ◇

८४	९०	२	७
६	३	८८	६६
९१	९७	८	१
४	५	८६	६९

◇ शत्रु उच्चाटन यन्त्र ◇



◇ नाड़ा टूटे यन्त्र ◇

५	१२	२	८
७	३	९	७
११	६	९	१
४	६	७	११

80. शत्रु उच्चाटन यन्त्र

कोवे और उल्लू के खून से भोजपत्र के ऊपर यह यन्त्र लिखें। पूजा करें। यन्त्र के टुकड़े-टुकड़े करके जूठे चावलों में मिलाकर कौवों को खिला दें तो शत्रु गाँव, कस्बे को छोड़कर दूर चला जाता है।



81. नाड़ा टूटे यन्त्र

सर्वप्रथम गिलहरी के पूंछ के बाल लेकर ब्रुश बनायें। इसी ब्रुश की सहायता से कागज पर इस यन्त्र को लिखकर जहाँ चाहे गाड़ दें। इसके प्रभाव से जो भी इसे लाँघेगा। उसका नाड़ा टूटकर वस्त्र गिर जायेगा।



◇ कोख स्तम्भन यन्त्र ◇

६३	७१	२	८
७	३	६७	६६
८२	७७	९	१
४	६	६५	८१

◇ दिन-रात का भ्रम यन्त्र ◇

५२	५९	२	७
६	३	५६	५३
५८	६३	८	१
४	५	५५	५७

82. कोख स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर कमर में धारण करें। इसके साथ ही सरसों की जड़ भी धारण करें तो कोख स्तम्भन हो जाती है और गर्भ नहीं ठहरता।



83. दिन-रात का भ्रम यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर जिसके भी घर के पीछे गाड़ दिया जायेगा तो उसके स्वामी को दिन की रात दिखाई देगी।



84. अलाबला से बचाव का यन्त्र

यह अलाबला आदि से बचाव का यन्त्र है। यह यन्त्र अभी तक प्रकाश में नहीं आया था। यह बहुत कठिनता से प्राप्त हुआ है और सिद्ध यन्त्र है। रवि पुष्य, गुरु पुष्य, दीवाली, होली, ग्रहण या स्वार्थ सिद्ध योग देखकर अनार की कलम बनाकर अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीपादि से पूजन करें। चाँदी के ताबीज में धारण करें। इसके धारक को भूत-प्रेत, छल-छमन्द, दुष्ट-मुष्ट, किसी द्वारा किया जा रहा प्रयोग नहीं लगता।

◇ अलाबला से बचाव का यन्त्र ◇

३४५	३५७	३५९	३५७
३५६	३४६	३५२	३५०
३५५	३५३	३४७	३४२
३५४	३५२	३६०	३४८



85. खेत से अधिक उपज का यन्त्र

अपने खेत से अधिक फसल प्राप्त करने के लिए यह यन्त्र लिखकर क्षेत्रपाल को पूजें। यन्त्र को खेत के बीचों बीच गाड़ दें तो फसल अधिक होती है।

◇ खेत से अधिक उपज का यन्त्र ◇

२	१०	२	८
७	३	८४	२४
२६	८१	९	१
४	६	२२	२५



86. पित्ती यन्त्र

किसी रोगी को पित्ती परेशान कर रही हो तो यह यन्त्र लिखकर बाँधें।



◇ पित्ती यन्त्र ◇

७०	७७	२	७
६	३	७४	२३
७६	७१	८	१
४	५	७२	७५

87. अन्न सड़े यन्त्र

तोते का पंख लेकर लिखें एवं अन्न भण्डार में जाकर गाड़ आयें तो वहाँ का अन्न सड़ने लग जाता है।



◇ अन्न सड़े यन्त्र ◇

८४	९०	२	७
६	३	८८	८६
८९	८४	८	१
४	५	८५	८८

88. मसान जागे यन्त्र

कच्ची मदिरा लेकर शमशान को जायें। आधी रात के समय एक पत्थर का टुकड़ा या कोई ठीकरी लेकर लिखें। इस लिखे यन्त्र के ऊपर मदिरा की छींटे मारें और कहें—***जागो मसान, जागो।*** कुछ बार छींटे मारने और कहने पर शोर प्रारम्भ हो जाता है। परिचय लेकर थोड़ी मदिरा और फेंके फिर शमशान से बातें करें।

◇ मसान जागे यन्त्र ◇

८०	८६	२	८
७	३	८४	८३
८५	८४	९	१
४	६	८२	८२



89. सम्मानदाता चालीसा यन्त्र

इस यन्त्र को प्रयोग द्वारा सिद्ध करें और फिर सूर्य ग्रहण पर लिखकर धारण करें तो शत्रु पाँव पर आ गिरता है। इसके धारक को कभी सिर दर्द भी नहीं होता। अपने इलाके में सम्मान बढ़ता है।

◇ सम्मानदाता चालीसा यन्त्र ◇

१०	१०	१०	१०
१०	१०	१०	१०
१०	१०	१०	१०
१०	१०	१०	१०



◇ शत्रु को जूता मार यन्त्र ◇

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५५	५९

90. शत्रु को जूता मार यन्त्र

इस यन्त्र को तैयार करने हेतु एवं शत्रु के सिर पर जूता लगे इस कार्य के करने के लिए भूत की प्रसन्नता आवश्यक है। शमशान में आते मुर्दों का ध्यान रखें कि कौन मरा है? शनिवार के दिन तेली का या ठाकुर का मुर्दा जलाने हेतु लाया जाये तो आपकी साधना का प्रारम्भ होगा। किसी भी तरह जलते हुए मुर्दे की कमर के नीचे से एक जलता हुआ कोयला ले लेवें। शराब को मुख में भरकर उस कोयले पर वहीं कुल्ला सा कर दें और कोयला लेकर बिना पीछे पलटे या देखें चल दें। एकान्त में आकर गुगल की धूनि देवें। एक बताशा आग पर चढ़ावें और पुष्पादि चढ़ावें तो भूत प्रसन्न होता है। अब हरताल लेकर उस कोयले के संग मिलाकर स्याही बनावें और कफन के टुकड़े पर उपरोक्त यन्त्र का निर्माण करें। यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम तथा उसके पिता का नाम 'वल्द' लिखकर लिखें। यन्त्र को जमीन पर रखकर जूते मारना प्रारम्भ करें तो वह सभी जूते शत्रु के सिर पर असर करेंगे और वह चिल्लायेगा।



◇ शनि अनिष्ट की शान्ति यन्त्र ◇

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

91. शनि अनिष्ट की शान्ति यन्त्र

इस यन्त्र को एक चौकोर शिला पर शनिवार के दिन कोयले से लिखें। यह शिला भी काली होनी चाहिए। यन्त्र लिखकर व्यक्ति के ऊपर से सात बार घुमाकर किसी कुएँ में वह शिला डाल आनी चाहिए। इसके प्रभाव से शनि की साढ़े साती, अढैय्या एवं स्वयं शनि के अनीष्ट शान्त होते हैं। सावधान रहें कि उस कुएँ का जल फिर जीवन भर नहीं पीना चाहिए।



92. सर्व लाभ दाता यन्त्र

आपके लिए अनेकों गुण सम्पन्न यह यन्त्र प्रस्तुत हैं। इस यन्त्र का फल नामानुरूप होता है। इसको शत्रु नाश हेतु काली स्याही से सफेद कागज पर लिखना चाहिए। कागज के पीछे काला रंग पोत कर इसकी बत्ती बनायें। एक दीये में काली सरसों का तेल भरकर इस यन्त्र रूपी बत्ती को दिये में डाल कर जलायें। यही प्रयोग क्रमश: इक्कीस दिन तक करें। शनिवार से प्रारम्भ करें। बत्ती का मुख शत्रु के निवास की दिशा की तरफ होना चाहिए। इस भाँति करने से शत्रु नष्ट हो जाता है।

◇ सर्व लाभ दाता यन्त्र ◇

१६५३४०	१६५३१३	१६५६२४	१६५६१८
१६५६१५	१६५३२७	१६५६१२	१६५३२१
१६५६१४	१६५६१९	१६५६१७	१६५६२५
१६५३२६	१६५६१६	१६५६२२	१६५६११

रोग नाश हेतु

जब किसी भी दवा से बीमारी न जा रही हो तब इसे केशर से भोजपत्र पर लिखकर कण्ठ में धारण करने से रोग का नाश होकर बीमार स्वस्थ हो जाता है ।

मुसीबत

इस यन्त्र को ग्रहण के समय लिखकर पास रखने से सभी मुसीबतों का अन्त होकर सुख होता है ।

अभिलाषा पूर्ण

भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर धारण करें तो सामाजिक एवं धार्मिक सभी तरह की अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं ।

ऊपरी शिकायत हेतु

किसी को ऊपरी शिकायत हो गई हो तो कागज पर केशर से लिखकर घोल पिलायें । यह क्रिया सात दिवस करनी होगी । ऐसा करने से भूत, प्रेतादि की शिकायत दूर हो जाती है ।



◇ पंचदशी यन्त्र ◇

८	१	६
३	५	७
४	९	२

खाकी यन्त्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

बादी यन्त्र

२	७	६
९	५	१
४	३	८

आबी यन्त्र

४	९	२
३	५	७
८	१	६

आतिशी यन्त्र

93. पंचदशी यन्त्र

यह पंचदशी यन्त्र भगवती दुर्गा का यन्त्र माना जाता है। शिवजी महाराज ने पार्वती जी को जगत एवं साधक वर्ग के कल्याण के लिए बताया था। यह अत्यन्त प्राचीन एवं प्रभावशाली यन्त्र है। इसका प्रयोग राशि के आधार पर किया जाता है। यह यन्त्र चार प्रकार का होता है। इन चारों यन्त्रों के क्रमशः खाकी, बादी, आबी एवं आतिशी नाम होते हैं। इनका प्रयोग निम्नलिखित राशियों पर होता है, यथा—

खाकी यन्त्र—वृष, कन्या तथा तुला राशि वाले ही लिखें।

बादी यन्त्र—मिथुन, मीन तथा कुम्भ राशि वाले ही लिखें।

आबी यन्त्र—कर्क, मकर तथा वृश्चिक राशि वाले ही लिखें।

आतिशी यन्त्र—मेष, सिंह तथा धनु राशि वाले ही लिखें।

अथ मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डा देवी स्वाहा।

इस यन्त्र के साधन से अनेकों लाभादि प्राप्त होते हैं। शत्रु का वशीकरण होता है। शरीर कष्ट दूर होता है। स्त्री का कष्ट समाप्त होकर सुख होता है। खोई वस्तु प्राप्त होती है। विदेशी घर आता है। रोगी ठीक हो जाता है। चोरी खुलकर माल वापस मिलता है। बन्धन से मुक्ति मिलती है। इज्जत, धन, सुख आदि का लाभ भगवती दुर्गा के प्रसाद के रूप में प्राप्त होता है।

पंचदशी यन्त्र सिद्धि के उपाय एवं लाभ

1. आक के पत्ते पर पन्द्रह दिन तक यन्त्र लिखें और पत्ते के नीचे शत्रु का नाम लिख करके अग्नि में जलावें तो शत्रु का नाश हो जाता है। यह यन्त्र एक हजार आठ लिखें।
2. उत्तर दिशा की तरफ बैठकर यन्त्र लिखें तो कार्य की सिद्धि अवश्य होती है।
3. लोहे की कलम से दक्षिण में मुख करके यन्त्र लिखें तो वैरी की मृत्यु हो जाती है। यह यन्त्र सौ बार लिखें मिटावे और शत्रु का नाम लें तो शत्रु मरे।
4. संकल्प करके शुभ कार्य हेतु लिखें। शुक्ल पक्ष के शुभ दिन से ही प्रारम्भ करें तो शुभता हो।
5. अशुभ कार्य हेतु कृष्ण पक्ष के अशुभ दिवस तथा अशुभ योग में लिखें तो अशुभ कार्य पूर्ण हो।
6. सम्पूर्ण सिद्धि के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करें। चावल आदि का भोजन करें, यन्त्र लिखकर आटे की गोली बनाकर नदी में बहायें। यह क्रिया एकान्त में ही करें। भगवती के प्रसाद से एक यन्त्र वापस आ जाता है, उसे संभाल कर रख लें।
7. अपामार्ग के रस से भोजपत्र पर लिखकर ज्वर के रोगी को धारण करायें तो ज्वर ठीक हो।
8. मोंगरे के रस से भोजपत्र पर लिखकर धारण करें तो शास्त्रार्थ में जय होती है।

9. हल्दी से एक सौ आठ यन्त्र लिखकर जिसकी चौखट में दबा देंगे, वहाँ आठों पहर कलह होती रहेगी ।

10. पीपल की कलम से लिखें तो दरिद्रता दूर होती है ।

विविध कामनाओं हेतु यन्त्र संख्या

कामना	यन्त्र संख्या	
लक्ष्मी की प्रसन्नता हेतु	2000	यन्त्र
रोग नाश हेतु	6000	यन्त्र
वशीकरण हेतु	3000	यन्त्र
परमेश्वर की प्रसन्नता हेतु	4000	यन्त्र
देवता की प्रसन्नता हेतु	5000	यन्त्र
रोजगार ठीक करने हेतु	4000	यन्त्र
परदेश गये की वापसी हेतु	2000	यन्त्र
बाँझपन नाश एवं पुत्र लाभ हेतु	5000	यन्त्र
मन इच्छित अभिलाषा हेतु	15000	यन्त्र
खेती से अधिक लाभ हेतु	2000	यन्त्र

मित्र से भेंट करने हेतु	2000	यन्त्र
मन्त्र सिद्धि के हेतु	2000	यन्त्र
प्रेत भगाने के हेतु	2000	यन्त्र
खोई वस्तु की प्राप्ति हेत	5000	यन्त्र
शत्रु के वशीकरण हेतु	2000	यन्त्र
कैद आदि से मुक्ति हेतु	6000	यन्त्र
विष नाश हेतु	25000	यन्त्र
सरस्वती की प्रसन्नता हेतु	1000	यन्त्र
दुश्मनी की समाप्ति हेतु	2000	यन्त्र
औषधि की सिद्धि हेतु	1000	यन्त्र
तीसरे दिन आने वाला ज्वर नाश हेतु	6000	यन्त्र
सर्वदुख समाप्ति एवं सुख प्राप्ति हेतु	2000	यन्त्र
राजसभा के मोहन हेतु	2000	यन्त्र
राजा की प्रसन्नता हेतु	4000	यन्त्र
अनहोनी बात करने के हेतु	1,00,000	यन्त्र

ऊपर दी गई कामनाएँ तथा यन्त्रों की संख्यानुसार यन्त्र लिखकर गेहूँ के आटे को भिगो कर गोलियाँ बनायें। इन गोलियों में प्रति यन्त्र स्थापित करें और प्रारम्भ में दिया मन्त्र उच्चारण करके गोलियाँ, मछलियों को दान हेतु नदी में डालते जायें। प्रति गोली के साथ हर बार मन्त्र उच्चारित करें तो कामना की सिद्धि होती है।

यन्त्र के लिए कलम

ऊपर कामनाओं और यन्त्र संख्या पर प्रकाश डाला गया है। यन्त्र लिखने में कलम का योगदान भी तन्त्र शास्त्र में सिद्धि के लिए अनिवार्य है। अत: निम्नलिखित कलमों का प्रयोग करके शीघ्र लाभ उठायें।

कामना	कलम
सर्व सिद्धि हेत	चमेली की कलम
आकर्षण हेतु	जामुन की कलम
स्तम्भन हेतु	बरगद की कलम
वशीकरण हेतु	कुश की कलम
शुभ कार्य हेतु	सोने या चाँदी की कलम
शान्ति हेतु	अनार की कलम
शत्रु नाश हेतु	लोहे की कलम

यन्त्र से सम्बन्धित कलम के अभाव में सिद्धि प्राय: कठिन ही होती है अत: इन कलमों का ध्यान अवश्य रखें।

यन्त्र लेखन हेतु पृष्ठ

सामान्यत: यन्त्रों का लेखन कागज या भोजपत्र पर किया जाता है। ऊपर कलमों के विषय में जिस भाँति प्रकाश डाला गया है, उसी भाँति यन्त्र लेखन के लिए पृष्ठ अर्थात् कागज या भोजपत्र के अलावा निम्नलिखित वृक्षों के पत्तों पर विविध कामनाओं के हेतु भी यन्त्र लिखकर लाभ उठाया जा सकता है।

कामना	पृष्ठ
खानपान के लाभ हेतु	कदली केले के पत्ते पर
मोक्ष प्राप्ति के हेतु	ताड़ वृक्ष के पत्ते पर
शान्ति हेतु	भोजपत्र पर
देश प्राप्ति हेतु	कमल के पत्र पर
भोग लाभ हेतु	वट वृक्ष के पत्ते पर
पत्नी लाभ हेतु	नागरवैल के पत्ते पर
पुत्र लाभ हेतु	पीपल के पत्ते पर
राज्य प्राप्ति हेतु	ढाक के पत्ते पर
विद्वेषण के हेतु	शमशान के वस्त्र पर
आकर्षण हेतु	शीशे (धातु) के पत्रे पर

काम अर्थ हेतु	काँसी के पात्र पर
सन्तान प्राप्ति हेतु	शतावर के पत्ते पर

पंचदशी यन्त्र का उद्धार मन्त्र

"ॐ हरिः श्री हरिस्तथा ॥"

अन्य प्रयोग विधियाँ

उपरोक्त वर्णन के अलावा दिनों के अनुसार भी इस यन्त्र को लिखकर प्रयोग किया जाता है, यथा—

रविवार का प्रयोग

रविवार के दिन आक के दूध में शमशान की भस्म मिलाकर पंचदशी यन्त्र को लिखें। यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम लिखें। इसके बाद चिता की आग में डाल दें। प्रारम्भ में दिये मन्त्र का एक सौ आठ बार उच्चारण करें तो शत्रु विक्षिप्त सा हो जाएगा।

सोमवार का प्रयोग

सोमवार के दिन इस यन्त्र के धारण करने से राजा भी वशीभूत हो जाता है तो साधारण मनुष्य के वशीकरण की बात ही क्या है। सफेद दूब, केशर, सफ़ेद रत्ती, कपिला गाय का दूध मिलाकर सन्ध्या के समय पंचदशी यन्त्र को लिखकर धारण करें तो वशीकरण होता है।

मंगलवार का प्रयोग

मंगलवार को प्रयोग करने से उच्चाटन होता है। काक पक्षी का पंख लेकर उसी के रक्त से मुर्दे के वस्त्र पर शत्रु का नाम लिखकर पंचदशी यन्त्र को ऊपर लिखें और शत्रु के दरवाजे पर गाड़ दें तो शत्रु का प्रबल उच्चाटन होता है।

बुधवार का प्रयोग

बुधवार की प्रयोग विधि के लिए नागकेशर तथा गोरोचन से पंचदशी यन्त्र को लिखें। यन्त्र की बत्ती बनाकर सरसों के तेल के दिये में डाल कर जलायें और ऊपर मानुष की खोपड़ी रखकर काजल बनायें। प्रारम्भ में दिये मन्त्र को एक सौ आठ बार जप कर, इस काजल को आँखों में लगायें तो देखने वाले वशीभूत हो जाते हैं।

गुरुवार का प्रयोग

आकर्षण हेतु इस दिन प्रयोग किया जाता है। हल्दी, गोरोचन, घी मिलाकर यन्त्र लिखें तथा यन्त्र के नीचे नाम लिखकर आसन के नीचे दबा लें तो सर्व आकर्षण हो।

शुक्रवार का प्रयोग

इस दिन कर्पूर, बच, कूठ तथा मधु को मिलाकर स्याही बनायें और पंचदशी यन्त्र को लिखकर धारण करें तो स्त्री मन, वचन और कर्म से धन तथा प्राण लेकर चली आती है।

शनिवार का प्रयोग

शनिवार के दिन शमशान जाकर चिता की लकड़ी लेकर कलम बनायें। काले मुर्गे के रक्त से पंचदशी यन्त्र को उलटा लिखकर शमशान में जाकर दबायें। यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम अवश्य लिखें। इस प्रयोग के प्रभाव से शत्रु अवश्य ही मर जाता है।

पंचदशी यन्त्र के अन्य लाभ

1 इस यन्त्र को कृष्ण पक्ष की चौदस से लिखना प्रारम्भ करने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति हो।

2. इस यन्त्र को अनार की कलम से भूमि पर एक हजार यन्त्र लिखें तो कैद से छूटे तथा अधिकारी से दोस्ती हो ।

3 इस यन्त्र को पीपल की जड़ की कलम से एक हजार यन्त्र भोजपत्र पर लिखें तो मनोभिलाषा पूर्ण हो ।

4 यह यन्त्र आक के पत्ते पर आक के ही दूध से एक सौ आठ यन्त्र लिखें । कीकर के वृक्ष पर यह यन्त्र बाँध आयें तो महाशक्तिशाली शत्रु भी ज्वर तथा देहशूल से दु:खी होगा ।

पंचदशी यन्त्र का मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुलसेवनाय स्वाहा ।

सिद्ध करने की विधि

इस पंचदशी यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर सवा लाख बार लिखें । आटे में मिलाकर गोलियाँ बनावें तथा यह गोलियाँ मछलियों के आहार हेतु नदी में डालते रहें । हर गोली पर प्रत्येक बार मन्त्र का जप अत्यन्त आवश्यक है । इस प्रकार करते-करते जब सभी गोलियाँ जल में डाल चुकें तो निम्नलिखित स्तोत्र पढ़कर प्रणाम करके वापस चले आयें ।

प्रथम शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कुष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रिश्च महागौरीति चाऽष्टमम् ॥
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गा: प्रकीर्तिता: ॥

यन्त्र लिखते समय अंक महात्मय

पंचदशी यन्त्र को लिखते समय अंकों के भरने की क्रिया से भी लाभ प्राप्त होता है । अत: इस प्रयोग को करने में अंक भरने के लाभ भी स्मरण रखें, यथा—

1. शादी विवाह के लिए आठ से भरें ।
2. सन्तान तथा नौकरी-कारोबार के लाभ के लिए एक से भरें ।
3. वशीकरण के लिए छह से प्रारम्भ करें ।
4. गन्दे मलिन कार्य हेतु चार से भरें ।
5. विदेश गये की वापसी हेतु पाँच से प्रारम्भ करें ।
6. लड़ाई आदि के लिए छह से भरें ।
7. लक्ष्मी तथा सरस्वती की सिद्धि हेतु सात से भरें ।
8. मकान आदि के लिए दो से प्रारम्भ करें ।
9. औजार, मशीनरी आदि के लिए तीन से भरें ।



94. नपुंसकता नाशक यन्त्र

जब कोई पुरुष नामर्द हो जाये तो इस यन्त्र को लिखकर कमर में धारण करने पर नपुंसकता दूर होकर मर्द बन जाता है।



◇ नपुंसकता नाशक यन्त्र ◇

४	५	७४	७७
७९	७२	८	१
६	३	७६	९५
७३	३८	२	७

95. छाया हटे यन्त्र

जब किसी व्यक्ति पर भूतादि की छाया हो। डायन आदि तंग कर रही हो तो अनार की लेखनी से सादे कागज पर केशर से यह यन्त्र लिखकर पानी में घोल कर पिला दें तो ऊपरी छाया आदि हट जाती है।



◇ छाया हटे यन्त्र ◇

८	१	१७	१०
११	१६	४	५
२	७	९	१८
१५	१२	६	३

96. बन्दी छुड़ाने का यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर केशर से इस यन्त्र को लिखें। विधिवत् पूजन करें। एक जंगली कबूतर जो कि काले रंग का हो, ले आयें। इस यन्त्र को उस कबूतर के गले में बाँध कर उड़ा दें। इस प्राचीन यन्त्र के पराक्रम की महिमा क्या कही जाये। बन्दी शीघ्र छूट जाता है।



◊ बन्दी छुड़ाने का यन्त्र ◊

या हाफिज	३३२	३३८	२२१०
या हाफिज	३३२	३३४	२३६
९९	३३७	३३०	३३५
बंदी का नाम वल्द पिता का नाम	या हाफिज	या हाफिज	या हाफिज

97. अति लाभकारी वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र अति लाभकारी एवं प्राचीन है। इसका प्रयोग वशीकरण के लिए किया जाता है। इसे एक कपड़े के ऊपर केशर एवं कस्तूरी मिलाकर लिखें। इस कपड़े की बत्ती बनाकर बिना किसी तेल के ही जलावें। इसकी राख जिसे भी खिला दी जायेगी वह तत्काल वशीकरण को प्राप्त हो जाता है।



◊ अति लाभकारी वशीकरण यन्त्र ◊

◇ ऊपरी शिकायत दूरी करण यन्त्र ◇

६४	८ / २	१ / ६२	१
	१०	१३	
३६	२ / ५	६ / ४	१४
	६५	६८	

◇ घर के ऊपर कर्त्तव्य करे ◇

११	३	१०
१०	२०	५०
६	१०	१५

98. ऊपरी शिकायत दूरी करण यन्त्र

बकरे का रक्त ला करके मंगलवार के दिन भोजपत्र के चार टुकड़े लेकर इस यन्त्र को लिखें। श्रद्धा से पूजन करें। दान आदि करके घर के चारों कोनों में गाड़ देवें तो घर की समस्त ऊपरी शिकायते दूर हो जाती हैं।



99. घर के ऊपर कर्त्तव्य करे

जब किसी घर के ऊपर शत्रु कोई प्रयोग करे तो इस यन्त्र को लिखकर मुख्य द्वार पर किसी छेद में लगा दें तो उस द्वार और घर पर कोई भी घात नहीं चलेगी।



100. कान की पीड़ा स्तम्भन यन्त्र

जब कान में पीड़ा हो रही हो तब इस यन्त्र को अनार के रस से लिखें। कान पर बाँधें तो कान की पीड़ा नष्ट हो जाती है।



◇ कान की पीड़ा स्तम्भन यन्त्र ◇

२२	२९	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	९	१
४	६	२४	२१

101. आधा शीशी का यन्त्र

सर्वप्रथम इस यन्त्र को थूहर के नीचे लिखें और वहीं गाड़ दें। रोगी को इस स्थान पर लाकर यन्त्र से गुजारें तो आधा शीशी का दर्द समाप्त हो जाता है।



◇ आधा शीशी का यन्त्र ◇

२९	३६	२	८
७	३	३३	३२
३५	३०	९	१
४	६	३१	३४

◇ स्तन न पके यन्त्र ◇

१	१६	२	८
७	३	१३	१२
१५	१७	९	१
४	६	११	१४

◇ सर्व सिद्धिदाता सर्वश्रेष्ठ श्री लक्ष्मी यन्त्र ◇

		१३		
६	१०	७	४	
	९		३	८
	१			

102. स्तन न पके यन्त्र

इस यन्त्र को इमली के रस से लिखकर धारण करने से स्त्री के स्तन नहीं पकते हैं।

नोट—आजकल स्त्रियाँ चोली पहनती हैं। वह चाहें तो इस यन्त्र को चोली में भी रख सकती हैं।



103. सर्व सिद्धिदाता सर्वश्रेष्ठ श्री लक्ष्मी यन्त्र

दीवाली की शाम पूजनं करके अष्टगंध की स्याही बनाकर चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर यह यन्त्र बनायें। फिर इसे पूजा के स्थान में रखकर पूजन करें। प्रसन्न मुद्रा एवं शुभाशुभ भावनाएं करें और भगवती लक्ष्मी देवी का स्तोत्र पढ़ें। इस यन्त्र के प्रभाव से सर्व सुख सर्व लाभादि प्राप्त होते हैं। समस्त दुखों का अन्त होता है। श्रद्धालु जनों के लाभार्थ प्रकाशित किया गया यह यन्त्र प्राचीन और अचूक है।



◇ वीर्य स्तम्भन यन्त्र ◇

७९	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	९	१
४	६	७३	७६

◇ नाड़ा टूटे यन्त्र ◇

४	११	२	८
१०	३	८	७
७	५	९	१
४	६	६	९

104. वीर्य स्तम्भन यन्त्र

यह यन्त्र सम्भोग के समय अधिक आनन्द प्राप्ति के लिए उत्तम है। थूहर वृक्ष का दूध लाकर स्वाती नक्षत्र में लिखें। सम्भोग के समय कमर में धारण करें तो सम्भोग का आनन्द अधिक आता है। थकने पर यन्त्र खोल दें तो वीर्य क्षरण हो जाता है।



105. नाड़ा टूटे यन्त्र

इस यन्त्र को सफेद कपड़े पर केशर से लिखकर बीच रास्ते में गाड़ दें। इसके बाद जो भी इसे लाँघेगा उसका नाड़ा टूट कर वस्त्र गिर जायेगा।



◇ भगवती का चौतीसा यन्त्र ◇

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

106. भगवती का चौतीसा यन्त्र

मन्त्र

सातों सती शारदा, बारहा वर्ष कुमार।
एक माई परमेश्वरी, चौदहा भुवन द्वार॥
द्वि पक्ष का निर्मली, तेरह देवी देव।
अष्ट भुजी परमेश्वरी, ग्यारहों रुद्र कर सेव॥
सौलह कंला सम्पूर्णी, त्रिलोकी वश करे।
दश अवतारा उतरी, पाँचों रक्षा करे॥
नौ लख षष्ठ दर्शनी, पन्द्रह तिथि जान।
चार युग में सुमर के, माता कर पूर्ण कल्याण॥

उपरोक्त मन्त्र का जप सदैव करने से एवं इस यन्त्र के धारण से परचक्र, किसी के द्वारा प्राप्त होने वाला भय आदि नहीं होते। कामण-टुमण का जोर नहीं चलता। शाकिनी आदि पलायन कर जाते हैं। यह सर्वश्रेष्ठ भगवती का चौतीसा यन्त्र है। इसकी महिमा अपरम्पार है।



◊ शरीर पीड़ा यन्त्र ◊

६०	७१	२	१
६	३	५८	६५
७०	६५	८	१
४	५	५६	६१

◊ बिक्री बढ़े यन्त्र ◊

व	अ	ह	ब
व	ह	अ	व
अ	व	व	ह
ह	व	व	अ

107. शरीर पीड़ा यन्त्र

धोबी घाट पर जाकर धोबी की शिला या पाटे पर यह यन्त्र लिख आयें। अगले दिन धोबी जैसे-जैसे कपड़े पटकेगा लिखने वाले के प्रबल शत्रु के पीड़ा होगी। शास्त्रों में तो वर्णित है कि शत्रु का पेट तक फट जाता है।



108. बिक्री बढ़े यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर मीठे फल के वृक्ष पर बाँध आयें। गद्दी के नीचे अष्टगंध से पैसठा यन्त्र भी लिखें। इस भाँति करने से दुकान की बिक्री बढ़ जाती है।



◇ जुआ जीतने का यन्त्र ◇

१	२५१	३५ ।	२३ ।
३१ ॥।	२७ ॥	३ ॥५	३६ ॥।
१ ॥	९ ॥	२४ ॥	१९१ ॥
२४	१४ ॥	५ ॥।	४ ॥॥

◇ जुआ जीतने का यन्त्र ◇

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

109. जुआ जीतने का यन्त्र

इस यन्त्र को गुरु या रवि वार में पुष्य नक्षत्र में लिखें। विधिवत् पूजन करके धारण करें और जुआ खेलें तो अवश्य जीत हो।



110. जुआ जीतने का यन्त्र

किसी शुभ समय पर एक सौ आठ यन्त्र लिखकर आटे में लपेट कर गोलियाँ बनायें तथा मछलियों को खिलायें। तत्पश्चात् स्वाति नक्षत्र में, जब चन्द्रमा लाभदायक हो एवं शुक्ल पक्ष का हो तो इस यन्त्र को अष्टगंध से लिखें। दीवाली की शाम पूजन करके लक्ष्मी स्तोत्र पढ़ें। इसके बाद धारण करके जुआ खेलें तो जीत हो। सावधान ! किसी को इस यन्त्र की खबर न दें।



◇ वशीकरण यन्त्र ◇

ह्री	स्व	स्न	रच
स	छ	प	सु
त	स	ह्री	सं
ख	स्व	ह्री	न्नू

◇ शत्रु को तकलीफ यन्त्र ◇

८	५	६
२	५	७
४	८	२

111. वशीकरण यन्त्र

किसी होली अथवा दीवाली की रात्रि में भोजपत्र के ऊपर यह यन्त्र केशर से लिखें और माथे पर रखें। इसके धारण से सभी वश में होते हैं।



112. शत्रु को तकलीफ यन्त्र

इस यन्त्र को लोहे के पत्र पर शनिवार या किसी अशुभ योग में लोहे की कलम से काली स्याही से लिखें। लिखने के बाद आग में यन्त्र को तपाने पर शत्रु जलेगा और उसे तकलीफ होगी।



113. शीतला का यन्त्र

जब चेचक फैल रही हो तो इस यन्त्र को लिखकर धारण करने से चेचक नहीं निकलती ।



◇ शीतला का यन्त्र ◇

श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं

114. रज हेतु यन्त्र

पेडू में दर्द हो रहा हो एवं रज ना निकलता हो तो इस यन्त्र को लिखकर घोल पिलाने पर स्त्री तत्काल रजस्वला हो जाती है एवं दर्द आदि बन्द हो जाते हैं ।



◇ रज हेतु यन्त्र ◇

ई				अ
	३३	३३	३३	
	३३	३३	३३	
	३३	३३	३३	
क				च

◇ खोया पशु लौटे यन्त्र ◇

११	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
१	६	२१	२३

◇ आम अधिक उपजे यन्त्र ◇

८८	९५	२	८
७	३	९२	९१
९४	८६	९	१
४	६	९०	९१

115. खोया पशु लौटे यन्त्र

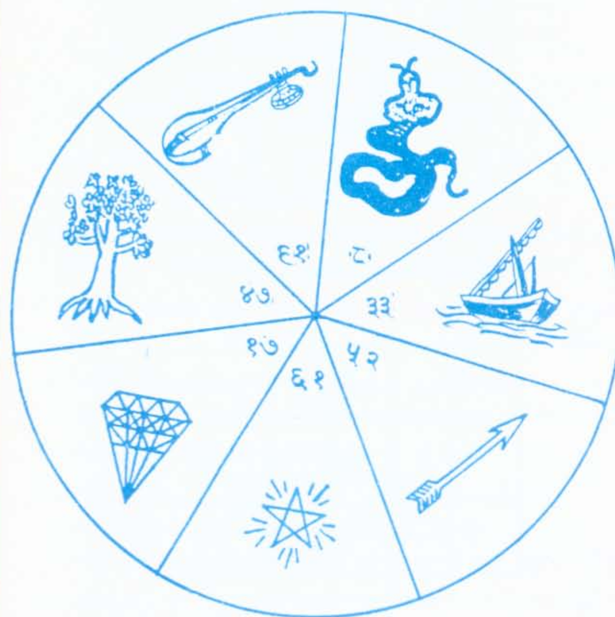
सेही का काँट लेकर, खूंटे के ऊपर इस यन्त्र को निर्मित करें। प्रसाद् चढ़ावें। पूजन करें। यह महाप्रभावी यन्त्र है। खोया पशु लौट आता है।



116. आम अधिक उपजे यन्त्र

आम की उपज अधिक लेने के लिए, आम के रस से, आम के पत्ते पर इस यन्त्र को लिखकर धूपादि करें तो फसल के समय बहुत अधिक आम लगता है।





117. लाभप्रद यन्त्र

यह एक अत्यन्त प्राचीन यन्त्र है और पिछले काफी समय से गुप्त भी रहा है। हमारे यहाँ पर एक विदेशी यन्त्र के रूप में जाना एवं माना जाता है। यह रोमन यन्त्र है तथा इसका प्रयोग यूरोप में अत्यधिक किया जाता है। इसका प्रयोग धन प्राप्ति हेतु किया जाता है और गुप्त सूत्रों से इसके लाभ भी प्रमाणित हुए हैं। इस यन्त्र का आदान-प्रदान इतना गुप्त था कि किसी को पता ही न चलता था कि दूसरा व्यक्ति कौन से यन्त्र से लाभ प्राप्त कर रहा है। प्राचीन समय में तो रोमन राजा भी इस यन्त्र को धारण करते थे। इस यन्त्र के धारक तथा उपासक के पास कभी भी दरिद्रता नहीं आती है। इस यन्त्र को जहाँ पर भी रखा गया वहाँ पर सुख शान्ति समृद्धि का निवास बना रहा। अकसर यन्त्र को पूजन स्थल पर ही रखा जाता है। प्रस्थान करते समय इसके दर्शन अवश्य करने से लाभ ही रहता है। धारण करने के लिए भोजपत्र पर लिखकर पहन सकते हैं। यह यन्त्र तांबें पर उभरा हुआ हो तो पूजन स्थल पर रखें या भोजपत्र पर लिखकर काँच के फ्रेम में लगा करके पूजा के स्थान पर रखें तो यन्त्रराज की विशेष कृपा बनी रहती है। ♣ ♣ ♣

◇ सेना पलायन यन्त्र ◇

देवदत्त
लक्षगण
स्वाहा
ह्रीं

◇ धन्वन्तरी यन्त्र ◇

१७ ह्रां	५ ध	१८ ह्रीं	गोरक्षनाथ
७ ऐं	११ न्व	१२ क्लीं	कानफनाथ
५४ ऐं	१३ न्त	२१ क्लीं	गर्हिनीनाथ
३७ ह्रां	६१ री	१२ ह्रीं	मच्छिन्द्रनाथ

118. सेना पलायन यन्त्र

जब किसी राजा को आसपास के राजा परेशान करते रहते हों तो जब भी उनकी सेनायें आक्रमण के लिए आयें तो सेना पलायन यन्त्र को सूरजमुखी, शंखाहुली तथा गुलदौन के रस से नगाड़े के ऊपर लिख करके धूपादि करके नगाड़े को बजाने पर नगाड़े से निकली आवाज से ही शत्रु भयभीत होकर सेना सहित भाग जाता है।



119. धन्वन्तरी यन्त्र

घर में जब कोई रोग आदि से अस्वस्थ हो जाए तो धन्वन्तरी यन्त्र को लिखकर कर्पूर तथा अगरबत्ती से पूजन करें। एक पतले कपड़े में लपेट कर रोगी के सिरहाने रख दें तो रोगी तुरन्त स्वस्थ हो जाता है।



◇ मूँठ उद्धार यन्त्र ◇

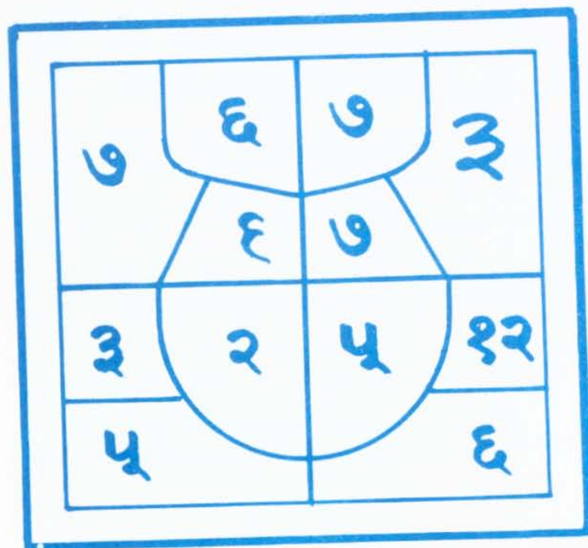


120. मूँठ उद्धार यन्त्र

इस यन्त्र को लिखने के लिए वस्त्र उतार कर नंगे हो करके होली की रात को धतूरे की टहनी तोड़ लायें। इस पर लगे पत्तों का रस निकाल कर भोजपत्र पर मूँठ उद्धार यन्त्र को लिखकर धारण कर लें तो मूँठ नहीं लगती।



◇ मूँठ उद्धार यन्त्र ◇



121. मूँठ उद्धार यन्त्र

आजकल संयम के अभाव में तांत्रिक लोग मारण कर्म को बिना विचारे ही कर देते हैं जो कि नितांत गलत है। मारण कर्म के प्रयोग का ही एक भेद है—मूँठ मारना। जब इस मूँठ को मारा जाता है तो जिसे कि मूँठ मारी गई है, पछाड़ खाकर गिर पड़ता है और फिर उठने का समय नहीं रहता। ये एक खतरनाक प्रयोग है। इससे बचने के लिए मूँठ उद्धार यन्त्र को लिखकर धारण किया जाय तो मूँठ नहीं लगती। अत: होली की रात को धतूरे के पेड़ के पास नग्न होकर जाय एवं एक पत्ता तोड़ लायें। इस पत्ते का रस निकाल कर भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिख लें। धूप दीपादि करके धारण करें तो मूँठ आदि से सुरक्षित रहें।



◇ चंडी देवी यन्त्र ◇

३७२५	३७३०	३७६	३६०
३७५	३६६	३७१	३७६
३६७	३८१	३७३	३७०
३७४	३६१	३६८	३८०

122. चंडी देवी यन्त्र

एक महात्मा से प्राप्त हुआ यन्त्र जिसका कि अभी तक प्रयोग करके नहीं देखा जा सका है। यहाँ उन महात्मा जी की वाणी के आधार पर चंडी देवी यन्त्र के लाभ लिखे जा रहे हैं।

इस यन्त्र को जिस कामना को करके लिखें एवं धारण करें तो वह कामना शीघ्र पूर्ण होती है। प्रतिदिन इत्र लगाकर यन्त्र को बीस दिन तक लिखें। आटे की गोली में मिलाकर नदी में डाल आया करें। इक्कीसवें दिन यन्त्र लिखकर धारण करें तो सफलता प्राप्त हो। इस यन्त्र को लिखकर के कुएँ की मुंडेर पर रख कर शक्कर से पूजें। जहाँ आग जलती हो, उसके पास मिट्टी में दबा दें ताकि आग की गर्मी यन्त्र तक पहुँचे। इस प्रभाव से प्रेमी या प्रेमिका की प्राप्ति हो जाती है। गर्भवती कमर में पहने तो गर्भ सही सलामत रहे।



◇ सर्वार्थ सिद्धि यन्त्र ◇

श्रीं		श्री		श्रीं

क्षः ॐ श्रीं देवदत्त मे वशं कुरु श्रीं क्षः

श्रीं		श्रीं		श्रीं

◇ सन्तरीसयनो यन्त्र ◇

२५	८०	१५	५०
२०	४५	३०	७५
७०	३५	६०	५
५५	१०	६५	४०

123. सर्वार्थ सिद्धि यन्त्र

अनेक गुण सम्पन्न इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से अनार की कलम द्वारा लिखें। धूप दीपादि करके धारण करें या जेब में रख लें। यह यन्त्र जब तक धारक के पास रहेगा तब तक अनेक लाभ होते रहेंगे।



124. सन्तरीसयनो यन्त्र

इस प्राचीन यन्त्र की महिमा के विषय में अधिक न लिखकर यह श्लोक लिखा जाता है।

सन्तरीसयनो महिमा अनन्त।
तुच्छ बुद्धि किम जाण तन्त॥

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर धारण किया जाये तो अनेकों प्रकार का लाभ होता है।



◇ सर्वतोभद्र यन्त्र ◇

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

◇ चूहे भगाने का यन्त्र ◇

५१	२	४२	७
४८	८	५०	२
५	४७	३	५३
४	५२	२	४६

125. सर्वतोभद्र यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर कस्तूरी, लाल चन्दन बर्फ को मिलाकर स्याही बनाकर इस यन्त्र को लिखें। सोने, चाँदी एवं तांबा (त्रिलोह) मिलाकर ताबीज बनवाकर यह यन्त्र उसमें भरकर दानादि करें एवं ब्राह्मण को भोजन करा करके धूप दीपादि करके धारण करें। यह यन्त्र समस्त छल छिद्रों का नाश करता है। धारक की सदा रक्षा करता है। इसके धारण करने मात्र से ही धारक प्रसन्नचित्त एवं भाग्ययुक्त हो जाता है। अष्ट सिद्धि प्राप्त होने के समान ही सुख प्राप्त होता है।



126. चूहे भगाने का यन्त्र

इस यन्त्र को कागज के ऊपर लिखकर अन्न भण्डार या खेत में दबा आने पर तो वहाँ चूहें नहीं आ पाते जहाँ यन्त्र दबा रखा हो।



127. नवग्रह यन्त्र

जब किसी व्यक्ति को एक साथ कई ग्रह परेशान कर रहे हों तो इस नवग्रह यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। इस यन्त्र को भोजपत्र पर लाल चन्दन, केशर तथा गोरोचन से लिखकर पूजन स्थल पर स्थापित कर दें। प्रतिदिन धूपादि करके यामल तंत्र में दिया नवग्रह कवच का पाठ अवश्य करें। ऐसा करने से समस्त ग्रह अपना बुरा प्रभाव छोड़ कर शुभता प्रदान करने लगते हैं।

◇ नवग्रह यन्त्र ◇

३	२	८	५	४	९	१	६	७
५	४	९	१	६	७	३	२	८
१	६	७	३	२	८	५	४	९
८	३	२	९	५	४	७	१	६
९	५	४	७	१	६	८	३	२
७	१	६	८	३	२	९	५	४
२	८	३	४	९	५	६	७	१
४	९	५	६	७	१	२	८	३
६	७	१	२	८	३	४	९	५



128. श्वेत आर्क यन्त्र

पहले से ही सफेद आक का वृक्ष देख रखें। रविवार को जब पुष्य नक्षत्र पड़े तो शनिवार को न्योत कर अगले दिन जाकर उसकी जड़ ले आयें। धूप दीपादि करके भुजा पर बाँधने से व्याधि और अनिष्टों का नाश हो जाता है। इस विषय में कहना ही क्या है कि यह कितनी सर्वश्रेष्ठ होती है। इस जड़ के दर्शन मात्र से डाकिनी, दानव आदि नष्ट हो जाते हैं और इसकी धूप देने से प्रेतादि दूर भाग जाते हैं।



◇ शीतला जी यन्त्र ◇

१	२११६१	११	८
११	७	२	१२६८
६	९	३१७९	३
३१७	४	५	१०

◇ शत्रु नष्ट यन्त्र ◇

यः यः यः

देवदत्त

129. शीतला जी यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर चेचक ग्रस्त रोगी को धारण कराने से शान्ति हो जाती है।



130. शत्रु नष्ट यन्त्र

बाजार से हरताल लायें। रविवार को शमशान से कोयला लायें। दोनों को मिला कर स्याही बनायें। एक रोटी के ऊपर, यह यन्त्र लिखें। आग जलायें। गुग्गल के साथ बताशा मिलाकर आग पर डालें एवं इसकी धूनी, लिखे हुए यन्त्र को दें। इस क्रिया को करके शमशान में जाकर, यह यन्त्र गाड़ आयें। इसे गाड़ते समय यह मन्त्र पढ़ें— ***"ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं शमशान वीराय देवदत्तस्य नाशय नाशय विध्वंसय विध्वंसय स्वाहा॥"***

उक्त प्रयोग के करने से तीन मास में शत्रु अन्त को प्राप्त हो जाता है। यह यन्त्र लगभग तीन शताब्दी पुराना है। सोच-समझकर प्रयोग करें।



◇ वृद्धि यन्त्र ◇

यं	ॐ	ठों
ह्रीं		श्रीं
कं	नमः	ह्रीं

◇ बवासीर का यन्त्र ◇

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

131. वृद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को दीपावली की रात अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर चाँदी के ताबीज में मढ़कर धूपादि करके जहाँ रखेंगे वहाँ समृद्धि रहेगी। उदाहरणार्थ धन में रखें तो धन बढ़ेगा एवं अन्न भण्डार में रखेंगे तो अन्न वृद्धि होगी।



132. बवासीर का यन्त्र

बवासीर दो तरह की होती है—खूनी एवं बादी। हर तरह की बवासीर को ठीक करने के लिए कागज पर केशर से लिखकर बाँधें एवं धोकर पियें तो दोनों तरह की बवासीर आरोग्य हो जाती है।



◇ मसान का भय दूरीकरण यन्त्र ◇

ऐं	२५	२५	ह्रीं
ह्रीं	२५	ह्रीं	२५२
२५२	२५२	२५२	२५२
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्री
श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं देवदत्त			

◇ गर्भ रक्षा यन्त्र ◇

२३	२८	५	८
५	८	२८	२३
२८	२३	८	५
८	५	२३	२८

133. मसान का भय दूरीकरण यन्त्र

यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर धूप दीपादि करें। काले चने, तिल, उड़द, थोड़ा सा चन्दन एवं काली सरसों मिलाकर रोगी के सिर से सात बार घुमाकर चौराहे पर फेंक आयें। इसके बाद यह यन्त्र धारण करायें तो मसान का भय दूर हो जाता है।



134. गर्भ रक्षा यन्त्र

किसी गर्भवती का गर्भ गिर रहा हो तो इस यन्त्र को धारण करवा दें। इस यन्त्र के प्रभाव से गर्भ गिरना रुक कर रक्षा होगी।

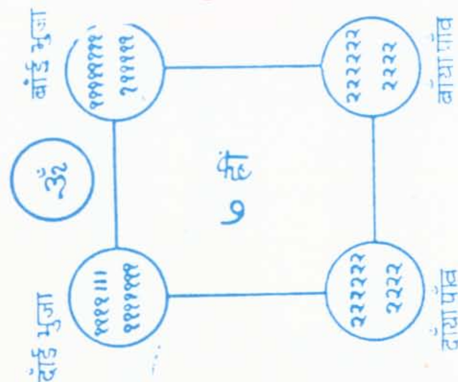


135. नपुंसकता यन्त्र

इस यन्त्र को काली स्याही से कागज के ऊपर लिखें। पूजन करें। कहे कि—***यह यन्त्र फलाने को नपुंसक करने को लिखा है।*** इसके बाद काले कपड़े में लपेट कर पलीता सा बनाकर एक सुई, इस पलीते में घुसेड़ दें। इस क्रिया को करके, चूल्हे के नीचे इस यन्त्र को गाड़कर अग्नि जलायें तो सारा शुक्र जलकर नष्ट होता है एवं नपुंसकता को प्राप्त होता है।



◇ नपुंसकता यन्त्र ◇



136. पुत्र प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर कमर में बन्धया स्त्री धारण करे और स्वामी से भोग करे तो पुत्रवती हो जाती है।



◇ पुत्र प्राप्ति यन्त्र ◇

१०	१	१२
८	१५	३
२	२	५

◇ यक्षिणी की प्रसन्नता यन्त्र ◇

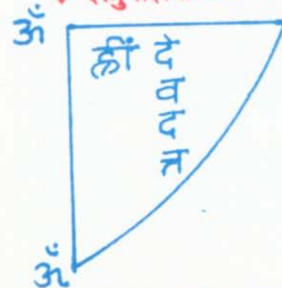
लं०	पं०	दं०	लं०
लं०	तं०	पं०	दं०
सं०	पं०	दं०	लं०
पं०	दं०	मं०	नं०

137. यक्षिणी की प्रसन्नता यन्त्र

पुरातन समय से ही साधक वर्ग यक्षिणी सिद्ध करने में लगा है। हम यहाँ उसकी सिद्धि तो नहीं प्रसन्नता हेतु यन्त्र प्रकाशित कर रहे हैं। हमारी मान्यता है कि सिद्धि के बजाय प्रसन्नता कुछ आसान एवं सुलभ है। इसके लिए श्रद्धा का होना अनिवार्य है। आँवले का रस निकाल कर कागज के ऊपर, यह यन्त्र लिखा जाये। सवा लाख लिख लेने पर अलिगंधा यक्षिणी का पूजन करें। पुष्पादि बिखरा कर जयघोष करें त्रो अलिगंधा यक्षिणी प्रसन्न होती है। एक साथी ने तो दर्शन भी प्राप्त किये हैं।



◇ शत्रुनाशक यन्त्र ◇



◇ सर्वसिद्धि प्राप्ति यन्त्र ◇

४९९२	४९९९	२	७
६	३	४९९६	४९९५
४९९८	४९९३	८	१
४	४	४९९४	४९९७

138. शत्रुनाशक यन्त्र

इस यन्त्र का प्रयोग तब करें, जब कोई रास्ता न बच रहा हो। कौवे का पंख लेकर विष में हरताल मिलाकर यह यन्त्र लिखें। देवदत्त के स्थान पर शत्रु का नाम लिखें। शनिवार की रात्रि को शमशान में जाकर गाड़ आयें। इसके प्रभाव से कुछ समय के अन्तराल पर शत्रु अचानक मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, कारण कोई भी क्यों न बनें ?



139. सर्वसिद्धि प्राप्ति यन्त्र

पुरातन शास्त्रों में इस यन्त्र का प्रयोग सर्व सिद्धि प्राप्ति हेतु कहा गया। एक अन्य शास्त्र के अनुसार इसका प्रयोग करने से मिर्गी रोग नाश हो जाता है। इसी भाँति कुछ विद्वानों का मत है कि इस यन्त्र के प्रयोग करने से बन्दी अवश्य बन्धन मुक्त हो जाता है। अत: इन सब लाभों को प्राप्त करने के लिए इस यन्त्र का कभी भी प्रयोग किया जा सकता है।



140. सर्व सम्मानदायक यन्त्र

◇ सर्व सम्मानदायक यन्त्र ◇



यह सर्व सम्मानदाता यन्त्र है। भोजपत्र पर अष्टगंध से यह यन्त्र लिखकर धारण करें तो अपने नाम के अनुसार शुभाशुभ फल करता है।



◇ भूतादि की प्रसन्नता यन्त्र ◇

तं०	तं०	तं०	तं०
पं०	पं०	पं०	पं०
दं०	दं०	दं०	दं०
लं०	लं०	लं०	लं०

◇ दुःस्वप्न नाशक यन्त्र ◇

हं०	सं०	खं०	फं०
षं०	दं०	धं०	जं०
नं०	पं०	मं०	दं०
चं०	यं०	जं०	दं०

141. भूतादि की प्रसन्नता यन्त्र

कोई साधक भूत, देवी, यक्षादि को प्रसन्न करना चाहे तो यह यन्त्र प्रयोग करें। इसका प्रयोग सिरस नामक वृक्ष के नीचे बैठ कर किया जाता है। यह इतना प्रभावशाली है कि शीघ्र ही फल प्राप्त होता है। प्रयोग प्रारम्भ करते समय बैठ कर विनियोग करें तथा एक सौ आठ यन्त्र प्रतिदिन लिखें।



142. दुःस्वप्न नाशक यन्त्र

शास्त्रों में वर्णित है कि स्वप्न भविष्य के सूचक होते हैं और इसकी प्रमाणिकता सिद्ध हो चुकी है। विदेशों में इस विषय पर शोध कार्य भी चल रहा है। कभी-कभी स्वप्न अत्यन्त डरावने दिखने लगते हैं। यदि इनके कारण परेशानी हो। स्वप्नों में भूत-प्रेतादि डरायें तो इस यन्त्र को लिखकर सिरहाने रखकर सो जावें। ऐसा करने से स्वप्न बन्द हो जाते हैं।



◇ स्वप्न बन्दीकरण यन्त्र ◇

नं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	छं
नं	छं	जं	ठं

◇ सर्व क्लेश निवारण यन्त्र ◇

७ १४ ८ २	७ २ १० ११
१३ ८ १ ६	४ ६ १३ ६

143. स्वप्न बन्दीकरण यन्त्र

चिकित्सा प्रणाली ने माना है कि स्वप्न अच्छी नींद में बाधक होते हैं। कोई स्वप्न देखना ही न चाहे तो इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखे। गुगल की धूप करके गले में पहने या तकिये के नीचे रखकर सोये तो स्वप्न न आयें।



144. सर्व क्लेश निवारण यन्त्र

जब व्यक्ति को बहुत ही क्लेश हो रहे हों तो भोजपत्र पर केशर से लिखकर दाहिनी भुजा पर धारण करें तो उसके सभी क्लेश शान्त होकर खुशी प्राप्त होती है।



◇ सर्प विष नाशक यन्त्र ◇

||	=	|=|	=
|	|	|| ïi	=
≡	२	+	≡
|||	=	≡	≡|

◇ वशीकरण यन्त्र ◇

ॐ

नं टं	नं पं
तं तं तं तं तं	टं टं टं टं टं
मं मं मं मं	डं डं डं डं डं
पं पं पं पं पं	यं यं यं यं यं
टं टं	नं नं

ह्रीं

145. सर्प विष नाशक यन्त्र

जब किसी को सर्पादि डस ले तो इस यन्त्र को कांसे की कटोरी में लिखकर पानी से धोकर उस पानी को रोगी को पिला देने पर सर्पादि का विष उतर जाता है।



146. वशीकरण यन्त्र

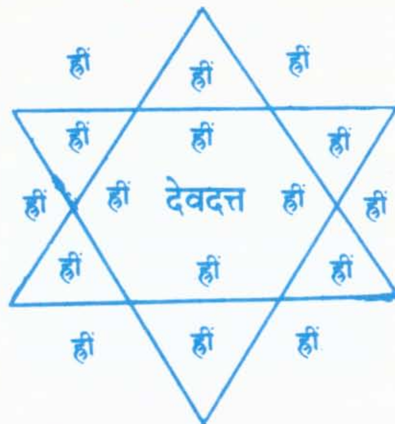
भोजपत्र के ऊपर शुभ समय विचार करके यह यन्त्र अष्टगंध से चमेली की कलम बनाकर लिखें। विधिवत पूजन करें। ताबीज में भरकर प्रयोग करें। यह यन्त्र धारण करने मात्र से इसके धारक को सभी जगह सहयोग मिलता है। जो भी धारक को देखता है, उसका वशीकरण हो जाता है।



◇ रक्त पित्तादि रोग नाशक यन्त्र ◇

४८	५५	२	६०
६	३	५२	५१
५४	४९	८	१
४	५	५०	५३

◇ दिव्य स्तम्भन यन्त्र ◇



147. रक्त पित्तादि रोग नाशक यन्त्र

जब रक्त पित्त रोग से अधिक हानि हो रही हो तो केशर के कागज पर लिखकर चार यन्त्र घोलकर पिलायें एवं एक यन्त्र धारण करायें।



148. दिव्य स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को कुंकुम के साथ गोरोचन मिलाकर भोजपत्र के ऊपर लिखें। इसके बाद शराब सम्पुट में रखकर पूर्ण श्रद्धा के साथ पूजन करें। दूसरे दिन शराब से निकाल रख लें। किसी शुभाशुभ योग में धारण करें तो मोहन होता है। धारक के प्रति भविष्य में बुरा करने वाली बुद्धि का स्तम्भन हो जाता है।



◇ वशीकरण यन्त्र ◇

ह्रीं	ह्रीं ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं ह्रीं	ह्रीं

◇ शत्रु वशीकरण यन्त्र ◇

४	९	७	१४
१५	३	१२	१
१०	३	१३	६
५	१६	२	११

149. वशीकरण यन्त्र

जब राजा आदि के कोप की या किसी अधिकारी के गुस्से से हानि होने की सम्भावना हो तो इस यन्त्र को स्वयं हित के लिए प्रयोग करें। केशर, गोरोचन, अनामिका का रक्त एवं चन्दन मिलाकर स्याही बनायें। स्वच्छ भोजपत्र लेकर इस यन्त्र का निर्माण करें। पुष्पादि से पूजन करें। राजा से या अधिकारी से भेंट करने जाते समय इस यन्त्र को अपने हाथ की मुट्ठी में बन्द करके ले जायें। इस भाँति की मुलाकात से भय आदि समाप्त हो जाता है। सर्वश्रेष्ठ वशीकरण यन्त्र है। अत: उत्तम भावना से ही लिखें।



150. शत्रु वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को आवश्यकता के समय केशर व गोरोचन मिलाकर कागज पर लिखकर धूपादि से नमस्कार करें। तत्पश्चात् धारण करें। शत्रु वश में रहते हैं।



◇ सेवा फल प्राप्ति यन्त्र ◇

३२	३९	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

◇ चुगली स्तम्भन यन्त्र ◇



151. सेवा फल प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को कभी भी कागज पर लिखकर धारण करने से सेवा फल प्राप्त होता है। इस यन्त्र का प्रयोग वायु शूल नाश करने के लिए भी कर सकते हैं। धारण करने से वायु शूल नष्ट हो जाता है। पूर्ण लाभ न होने पर धोकर पी सकते हैं और धारण करें तो अत्यधिक लाभ की आशा की जा सकती है।



152. चुगली स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को कागज पर लिखकर केशर के छींटे मारकर काले मूँग चढ़ायें। पीले पुष्पों से पूजन करें। एकान्त में जाकर पृथ्वी में गाड़ आयें। इस प्रयोग के करने से शत्रु कोई भी चुगली करके हानि नहीं पहुँचा सकेगा।



◇ प्रीति कारक यन्त्र ◇

१	१५	६	५
११	१९	६	१९
७	१८	१२	८

◇ प्रेत बाधा नाशक यन्त्र ◇

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

153. प्रीति कारक यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को निर्मित करें। जिसकी प्रीति पानी हो, उसके घर की जमीन में जाकर दबा आयें। इसके प्रभाव से प्रीति उत्पन्न हो जाती है और मुलाकात के लिए स्वयं प्रस्तुत हो जाता है।



154. प्रेत बाधा नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को मंगल के दिन बाधा ग्रस्त रोगी के गले में बाँध दें। इसके धारण करने से लाभ होता है। धारक अपने इष्ट मंत्र का जाप करे या गायत्री मन्त्र का जाप करे तो शीघ्र एवं अधिक लाभ प्राप्त होता है।



◇ सर्वश्रेष्ठ चौंतीसा यन्त्र ◇

१	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

◇ बहत्तरिया यन्त्र ◇

२४	२०	२७
२६	२४	२२
२१	२८	२३

155. सर्वश्रेष्ठ चौंतीसा यन्त्र

सर्प निशाचर, चोर, शत्रु, भूत, पिशाचादि, विषम ज्वर, विपत्ती नाश करने के हेतु इस यन्त्र का साधन करना चाहिए। किसी ग्रहण, दीवाली आदि को अष्टगंध को खरल करके दाड़िम की कलम बनाकर, उत्तर की तरफ मुख करके चौंतीस यन्त्र लिखें। यह यन्त्र लेकर किसी नदी के किनारे बैठ कर प्रति यन्त्र की गोली बना कर क्रमशः जल में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग के अनुसार करने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस यन्त्र को सिद्ध करने के बाद उपरोक्त समस्याओं के निदान हेतु प्रयोग करें, शुभाशुभ होता है।



156. बहत्तरिया यन्त्र

प्राचीन मान्यता है कि यन्त्र धारण करने से प्रतिदिन लाभ के योग बनने लगते हैं। इस यन्त्र के प्रयोग से बाँध स्त्री भी माता बन जाती है। अतः शुभाशुभ फलदायक यन्त्र है। इसका प्रयोग अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर किया जाता है।



◇ मांसाहारी पशु से रक्षा यन्त्र ◇



157. मांसाहारी पशु से रक्षा यन्त्र

हथेली पर थूक से इस यन्त्र को लिखकर अनामिका का थोड़ा सा खून निकाल कर इस यन्त्र के चारों तरफ लगा दें तो जंगल के मध्य भी शेर, चीता आदि न खाकर वापस भाग जायेगा।



◇ प्रेत दूरीकरण यन्त्र ◇

ॐ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रीं	क्लीं
स्य	य	८	१
तं	दं	सं	जं
कं	चि	स	त
४	५	टं	टं

158. प्रेत दूरीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को कागज के ऊपर आवश्यकतानुसार लिखकर भुजा पर बाँधें या गले में धारण करें तो प्रेत दूर भाग जाता है।



◇ शत्रु का बल नष्ट यन्त्र ◇

७९	६	२	८
७	३	८३	८२
१५	८०	९	१
४	६	८१	८४

◇ भगवती काली देवी की प्रसन्नता यन्त्र ◇

हं०	सं०	पं०	फं०
पं०	पं०	पं०	अं०
नं०	पं०	मं०	०
चं०	०	मं०	ढं०

159. शत्रु का बल नष्ट यन्त्र

जब शत्रु अत्यधिक तंग करने लगे या शत्रु से भय बढ़ जावे तो इस यन्त्र को धतूरे के रस कागज पर लिखकर गले में पहनें तो शत्रु का बल नष्ट हो जाता है ।



160. भगवती काली देवी की प्रसन्नता यन्त्र

कनेर वृक्ष के नीचे आसन लगाकर भगवती कालिका की प्रसन्नता प्राप्त करने के हेतु इस यन्त्र का साधन करें । श्रद्धानुसार प्रतिदिन लिखें । सवा लाख पूर्ण करने होंगे । माँ की ममता की मिसाल नहीं मिलती । कभी-कभी स्वयं शीघ्र ही फल प्रदान कर देती हैं ।



161. भगवती अम्बिका देवी की प्रसन्नता हेतु यन्त्र

भगवती अम्बिका देवी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए इस यन्त्र का साधन करना चाहिए। साधक वर्ग में बहुत प्रचलित यन्त्र है। आम का विशाल वृक्ष ढूंडे तथा उसी के नीचे बैठ कर सवा लाख यन्त्र लिखें। भगवती अम्बिका देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं।

◇ भगवती अम्बिका देवी की प्रसन्नता हेतु यन्त्र ◇

III	=	III	IIII
IIII	≣	IIII	II
≡	=	१	—
III	=		=



162. त्रिभुवन स्तम्भन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर गोरोचन की स्याही बनाकर यन्त्र लिखें। धूपादि से पूजन करें। इसके बाद जंगल में जावें और इस यन्त्र को हाथ भर गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। इस क्रिया के दौरान किसी से बात न करें। इस तरह करने से त्रिभुवन भी स्तम्भित हो जाता है।

◇ त्रिभुवन स्तम्भन यन्त्र ◇





163. सौभाग्य वृद्धि यन्त्र

यह यन्त्र नारी सौभाग्य यन्त्र है और महिमा अनन्त है । पति से ही नारी का सौभाग्य होता है और वही न चाहे तो सौभाग्य कैसा ? इस यन्त्र को माथे पर रखने से उसकी सुहाग वृद्धि होती है । अतः किसी पटिये पर सिन्दूर की तह (एक सार) बिछाकर उस पर अनार की कलम से इस यन्त्र को लिखें । फिर सिन्दूर इकट्ठा करके श्रद्धा से माथे से लगाकर डिब्बी में बन्द कर लें । प्रतिदिन श्रृंगार करके माथे में इस सिन्दूर से मांग भरें तो पति सुख प्राप्त हो । पारिवारिक सुख हेतु नारी इसे अवश्य धारण करें ।

◇ सौभाग्य वृद्धि यन्त्र ◇

५	६	३	६
४	४	७	५
६	६	३	५
५	४	७	४



164. व्यवहार घना होवे यन्त्र

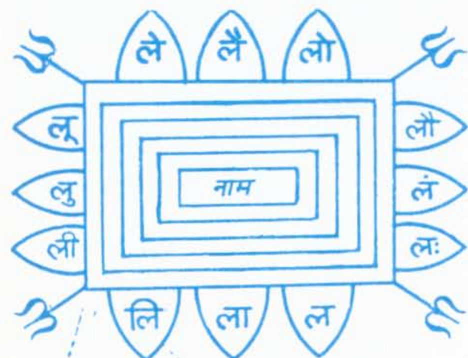
अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर घर के दरवाजे पर गाड़ दें तो समाज से व्यवहार घना हो जाता है ।

◇ व्यवहार घना होवे यन्त्र ◇

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५४	५३	८	१
४	५	५१	५५



◇ महामृत्युंजय यन्त्र ◇



◇ वशीकरण यन्त्र ◇

४९	५६	२	७
६	३	५२	५३
५५	५०	८	१
४३	४	५०	४४

165. महामृत्युंजय यन्त्र

भोजपत्र के दो टुकड़े लेकर लोहे की कलम से अष्टगंध की स्याही बनाकर उपरोक्त यन्त्र लिखना चाहिए। उत्तर की तरफ मुख करके लिखें एवं पूजन करें। इसके बाद किसी भारी शिला के नीचे दबा कर चले आयें। जब कोई अधिकारी बिगड़ गया हो तो उसके सामने जायें। शत्रु नुकसान दे रहा हो तो उसके सामने आयें तो वह पुरानी शत्रुता छोड़कर रक्षा करने हेतु हो जाता है। अत्यन्त पुरातन यन्त्र है। इसका साधन संकट के समय करना चाहिए।



166. वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र गोभी के पत्ते पर लिखा जाता है। इसके लिखने से सभी लोग आकर्षित होते हैं।



◇ इच्छापूर्ण यन्त्र ◇

१	५	९
८	३	४
२	७	६

◇ पूजन यन्त्र ◇

राम	राम	राम
राम	सीताराम	राम
राम	राम	राम

167. इच्छापूर्ण यन्त्र

इस इच्छापूर्ण यन्त्र को बड़ के वृक्ष के नीचे उत्तर मुख करके दाड़िम की टहनी से कलम बनाकर केशर से राज्य प्राप्ति हेतु, पलाश के पत्ते पर प्रेमिका प्राप्ति हेतु नागर बैल के पत्ते पर चालीस यन्त्र प्रति दिन लिखकर मछलियों को आटा मिलाकर खिला आयें। ऐसा सौ दिन करें तो मनोरथ पूर्ण हों।



168. पूजन यन्त्र

एक ताँबें के पत्रे पर इस मन्त्र को खुदवा कर प्रतिदिन पूजन करने से सर्व सुख होता है। चन्दन की स्याही बनाकर दाड़िम की कलम से प्रतिदिन इस यन्त्र को लिखा जाये तथा राम रक्षा स्तोत्र पढ़ा जाये तो अति उत्तम। यन्त्र एक लाभ अनेक।



◇ व्यवहार बढ़े यन्त्र ◇

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७९	७४	८	१
४	५	७५	७४

◇ सर्व अरिष्ट नाशक यन्त्र ◇

ॐ	ह्रं	ॐ
ह्रं	ॐ ह्रं	ह्रं
ॐ	ह्रं	ॐ

169. व्यवहार बढ़े यन्त्र

यह यन्त्र पास में रखने के लिये प्रयोग होता है। केशर से कागज पर यह यन्त्र लिखें तथा लाल कपड़े में लपेट कर पर्स में रख लें। इस भाँति करने से सभा समाज में व्यवहार बढ़ जाता है।



170. सर्व अरिष्ट नाशक यन्त्र

एक स्वच्छ भोजपत्र का टुकड़ा लें। गोरोचन को घिस-घिसकर गुलाब जल या गंगा जल से स्याही बनायें। दाड़िम की लेखनी को लेकर मुख में मिश्री रख इस यन्त्र को लिखें। लिखने के बाद धारण करें या गृह में स्थापित करें। फल समान ही होंगे। बहुत ही गुणकारी यन्त्र है। यह यन्त्र जहाँ भी रहता है वहाँ के सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।



171. सर्व हितकारी चिन्तामणि यन्त्र

अत्यन्त प्रभावशाली इस यन्त्र को चिन्तामणि यन्त्र के नाम से पुरातन समय में जाना जाता था। इस यन्त्र को अष्टगंध से लिखकर धारण किया जाये तो सभी चिन्ताओं का अन्त होकर सौभाग्य की उन्नति होती है।



◇ सर्व हितकारी चिन्तामणि यन्त्र ◇

३	६	२२
२१	३१	३
ज	२५	६

172. भूत उतारने का यन्त्र

इस यन्त्र का प्रयोग पलीते की तरह किया जाता है। किसी भी स्याही से आवश्यकता के समय एक स्वच्छ कागज पर यह यन्त्र लिखकर इसके ऊपर राई रखकर यन्त्र की बत्ती सी बनाकर जला दें। इसका धुँआ रोगी को सुंघाने से भूतादि भाग जाते हैं।



◇ भूत उतारने का यन्त्र ◇

१२	११
३	३

173. मन इच्छा फल पावें यन्त्र

रक्त चन्दन की स्याही बनाकर बेल के पत्तों पर एक सौ आठ यन्त्र लिखें। श्रावण में तीसो दिन यह लिखकर शिव लिंग पर चढ़ायें तो शिवजी महाराज बहुत प्रसन्न होते हैं एवं साधक को धन सम्पत्ति के साथ ही सभी भोगों का अधिकार दे देते हैं।

◇ मन इच्छा फल पावें यन्त्र ◇

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं



174. स्त्री-पुरुष वशीकरण यन्त्र

चमेली की कलम से भोजपत्र पर अष्टगंध से इस सर्वश्रेष्ठ गुप्त वशीकरण यन्त्र को लिखकर चाँदी के ताबीज में भरकर धारण करें तो स्त्री पुरुष आकर्षित होते हैं।

◇ स्त्री-पुरुष वशीकरण यन्त्र ◇

४ ४	४१	४५	६
४५	८५	४३ती	४
४४	५१	४।४	४१
६५	४३	४२ ८२	४



◇ जीवन भर वशीकरण यन्त्र ◇

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
क्रों ह्रीं क्लीं गँ देवदत्तः गँ
कीं ह्रीं क्रौं ह्रीं कीं क्रौं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

175. जीवन भर वशीकरण यन्त्र

जब किसी प्राणी को जीवन भर के लिए वश में करना हो तो इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। अनामिका ऊँगली का खून, हाथी का मद, लाख का रस, गोरोचन को मिलाकर खरल करें और स्याही बनाकर भोजपत्र पर जाती वृक्ष की कलम बनाकर जीवन पर्यन्त किसी को वश में रखने हेतु इस यन्त्र का निर्माण करें। पवित्र स्थान से काली मिट्टी लाकर गणपति जी की प्रतिमा बनायें और प्रतिमा के उदर में इस गणपति यन्त्र को स्थापित कर दें। धूप-दीपादि से प्रतिमा का पूजन करें।

देवदेव गणाध्यक्ष सुरासुर नमस्कृत।
देवदत्तं महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो॥

एकान्त एवं पवित्र स्थल पर जाकर मन्त्र का उच्चारण करते हुए हाथ भर गहरी धरा खोदकर वह प्रतिमा भीतर रख करके मिट्टी से बन्द कर दें। इस क्रिया के प्रभाव से गणपति जी की मेहरबानी होती है एवं शत्रु जीवन भर वश में रहता है।



◇ व्यापार वृद्धि यन्त्र ◇

४	२३	१७	११	१०
१२	६	५	२४	१८
२५	१९	१३	७	१
८	२	२१	२०	१४
१६	१५	९	३	२२

◇ डाकिनी आने का यन्त्र ◇

७०	७०	२	७
६	७३	७६	७५
७६	७४	८	१
४	५	७०	७६

176. व्यापार वृद्धि यन्त्र

यह यन्त्र जिस स्थान पर होता है, वहाँ पर सदैव आनन्द मंगल रहता है। भूत-पिशाचादि का भय नहीं होता। पहले का भूतादि प्रयोग नष्ट हो जाता है। इसे तैयार करने के लिए दाड़िम की लेखनी एवं अष्टगंध की स्याही बनाकर भोजपत्र लें जिसमें कि छेद न हो। शुभ महुर्त में पूर्व दिशा को मुख करके आसन में बैठें। मुख में मिश्री लेकर इस यन्त्र को लिखें। अत्यन्त प्रभावशाली यन्त्र है। व्यापारी गल्ले में रखें। गद्दी के नीचे भी रख सकते हैं।



177. डाकिनी आने का यन्त्र

यह यन्त्र जरख के चमड़े पर खैर वृक्ष की लकड़ी जलाकर कोयला बनावें। तत्पश्चात् इस कोयले से लिखें। यह यन्त्र लिखकर धूपादि करें तो आसपास के क्षेत्र की डाकनियाँ आ जाती हैं।



◇ शत्रु मारण यन्त्र ◇

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

◇ शूल होने का यन्त्र ◇

३४	४०	२	८
७	३	३७	३६
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

178. शत्रु मारण यन्त्र

इसका प्रयोग दो कार्यों के लिए किया जाता है।

प्रथम प्रयोग—हाथी का नाखून लेकर कागज के ऊपर यह यन्त्र लिखें। पीठ काली स्याही से पोत दें। यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम लिखें और शमशान जाकर गाड़ आवें तो शत्रु का नाश हो जाता है।

द्वितीय प्रयोग—केशर से भोजपत्र पर लिखकर पहने तो सर्वकार्य सिद्ध करे।



179. शूल होने का यन्त्र

यह शरारत करने का यन्त्र है। थूहर का दूध लेकर कागज पर इस यन्त्र को लिखें। यह यन्त्र जिसके घर में भी गाड़ दिया जायेगा उसे शूल होगा और यह दवा से ठीक न होगा। यन्त्र उखाड़ने पर रोगी स्वयं अच्छा हो जाता है।



◇ धनदाता यन्त्र ◇

ॐ	प	ॐ
अ	स	ट
ॐ	रा	ॐ

◇ सिद्ध सूर्य यन्त्र ◇

६	३२	३	३४	३५	१
७	११	२७	२८	८	३०
१९	१४	१६	१५	२३	२४
१८	२०	२२	२१	१७	१३
२५	२९	१०	९	२६	१२
३६	५	३३	४	२	३१

180. धनदाता यन्त्र

अत्यन्त प्रभावशाली यन्त्र है। इसे प्रचलित भाषा में धनदा यन्त्र भी कहते हैं। यह यन्त्र जहाँ भी रहता है, वहाँ धन धान्य एवं लक्ष्मी का निवास हो जाता है। इसे भोजपत्र पर लिखकर काँच के फ्रेम में मढ़ा लें एवं पूजन स्थल पर रखें। नित्य धूपादि करें तो अत्यन्त लाभदायक होगा।



181. सिद्ध सूर्य यन्त्र

इस सिद्ध सूर्य यन्त्र को ग्रहों के राजा सूर्य की प्रसन्नता हेतु लिक कर पहना या रखा जाता है। पहनने को केशर, लाल चन्दन की स्याही बनायें तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखें। रखने के लिए ताम्र पत्र लेकर किसी से खुदवा लें तब इसे पूजन स्थान में या घर में रखें। इस यन्त्र को रविवार के दिन जब पुष्य, कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो तब लिखें या खुदवायें।



◇ पुरुष वशीकरण यन्त्र ◇

३३	४०	२	८
७	३	३६	३७
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

◇ देवता की प्रसन्नता यन्त्र ◇

६५	७२	२	८
७	३	६९	६८
७१	६६	९	१
४	६	६७	७०

182. पुरुष वशीकरण यन्त्र

यह यन्त्र रोटी के ऊपर लिखें। यह रोटी काले कुत्ते को खिलायें। यह प्रयोग जो भी स्त्री करेगी, उसी का पुरुष उसके वश में हो जायेगा।



183. देवता की प्रसन्नता यन्त्र

साधक वर्ग का प्रिय यन्त्र है। इसका प्रयोग देवता की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए किया जाता है। आक के वृक्ष की टहनी लेकर कलम बनायें। इसी कलम भोजपत्र के ऊपर उपरोक्त यन्त्र लिखकर सिर पर धारण करें तो यथा नाम यथा गुण के अनुसार शुभाशुभ फल होता है।



◇ मोहनी यन्त्र ◇

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

◇ स्त्री वशीकरण यन्त्र ◇

[illegible] जंत्र हः

[illegible]

[illegible]

184. मोहनी यन्त्र

इस यन्त्र को लिखने के लिए स्त्री के दूध की स्याही बनेगी । रवि पुष्य या गुरु पुष्य वाले दिन इस यन्त्र को लिखें । यह विख्यात मोहनी यन्त्र है । इस यन्त्र के चारों तरफ उसका नाम लिखें, जिसको मोहना है । इसके बाद धारण करें तो शीघ्र ही मोहन हो जाता है ।



185. स्त्री वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को अपनी इन्द्री पर लिखकर जिस स्त्री के साथ पुरुष सम्भोग करे तो वह स्त्री भविष्य में किसी दुसरे पुरुष के संग कभी संभोग न करेगी ।



186. प्रीति प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को कागज या भोजपत्र पर लिखकर इत्र फुलेल से जलायें और धारणा करता रहे कि अमुक की प्रीति मुझे प्राप्त होती रहे तो प्रीति प्राप्त होती है।

◇ प्रीति प्राप्ति यन्त्र ◇

२१	२६	२
२८	२४	२७
२३	२२	१०



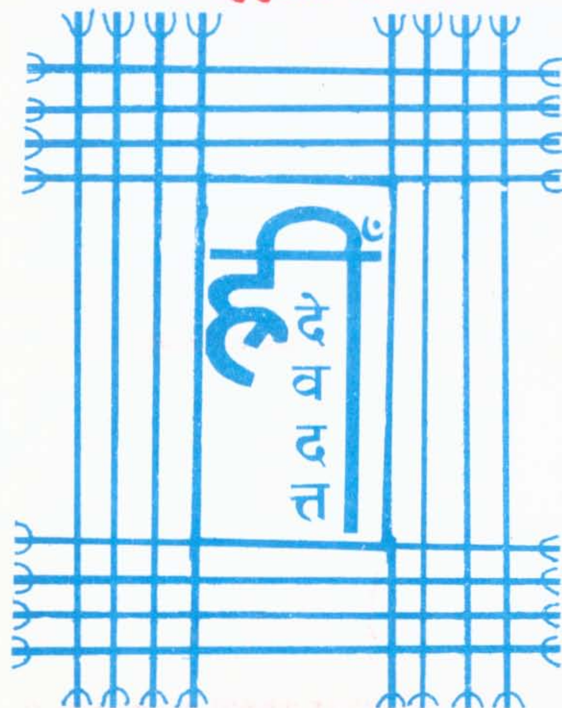
187. सर्वजन वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को एक स्वच्छ पत्थर पर लिखकर नीचे उसका तथा उसकी माँ का नाम (जिसे कि आकर्षित करना हो) लिखें धूपादि करके पूजन करें। इसके बाद पत्थर को चूल्हे के नीचे गाड़ कर चूल्हे का प्रयोग खाना बनाने में करते रहें। सात दिन बाद इसे निकाल कर पुष्पादि से पूजन करें और सम्भाल कर रखना चाहिए। यह अत्यन्त प्राचीन प्रभावशाली यन्त्र है। चूल्हे से जब इसको निकालते हैं जिसे कि आकर्षित करना होता है। उसके दिल को झटका सा पड़ता है। उसके पुराने विचार समाप्त होकर आकर्षण हो जाता है।

◇ सर्वजन वशीकरण यन्त्र ◇

७ ग ४४ व ७००
१०० ११७० ४७६० ३० ४
५० ७४ — ८३ — १ :: — ७





188. शत्रु मुख स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को शत्रु के मुख स्तम्भन करने के लिए प्रयुक्त करना चाहिए। खड़िया (एक तरह की सफेद मिट्टी) से शिला सम्पुट के भीतर यह यन्त्र लिखें। 'ह्री' के मात्रा की आड़ में शत्रु का नाम लिखा जाय। विधि के अनुसार पूजन करके सम्पुट को मिलाकर एकान्त में स्थापित करें तो शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाता है। विश्वास से ही भगवान को पाया जाता है अत: इस यन्त्र में भी पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखें।





◇ ज्वर नाशन यन्त्र ◇



189. सास-ससुर के आकर्षण का यन्त्र

यह भी लोक मर्यादा के अनुसार अति प्राचीन यन्त्र है। गेहूँ की एक रोटी बनाकर उसके ऊपर यह यन्त्र लिखकर सास के आकर्षण हेतु कुतिया को एवं ससुर के आकर्षण हेतु कुत्ते को खिलायें तो उनका वशीकरण हो जाता है।

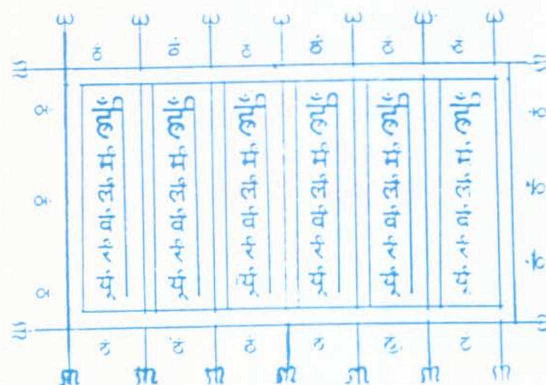


190. ज्वर नाशन यन्त्र

इस यन्त्र के निर्माण हेतु शमशान से वस्त्र लेकर आयें। धतूरे का रस निकाल कर उक्त वस्त्र पर यन्त्र को लिखें। पूजन करके बलि आदि दें। कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग के दिन व्रत रखना चाहिए। इस यन्त्र को पूजन करके गाड़ दिया जाये तो सहसा ज्वर समाप्त हो जाता है।



◇ शत्रु मुख गति-मति स्तम्भन यन्त्र ◇



191. शत्रु मुख गति-मति स्तम्भन यन्त्र

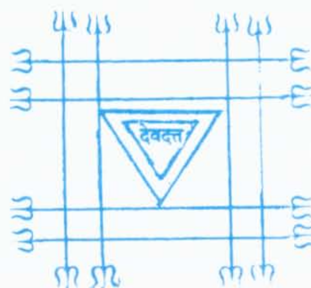
मन्त्र

ॐ हल्लर्यू ल ल ल ल अमुकस्य मुख स्तम्भय स्तम्भय ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।

इस यन्त्र का प्रयोग शत्रु की गति, मति, मुख स्तम्भन करने के लिए प्राचीनतम है। इसके प्रयोग करने से शत्रु की जिह्वा तक बंध जाती है। एक स्वच्छ भोजपत्र लेकर गोरोचन से चित्र के अनुसार लिखें। इसके लिखने के बाद पूजन आदि करें तथा मन्त्र एक सौ आठ पढ़ें। यह मन्त्र ऊपर दिया गया है। पूजन में पीत पुष्प एवं सामग्री का प्रयोग करें तथा तीन दिन सन्ध्या के समय एक सौ आठ बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करें। इस भाँति करने से शत्रु की गति, मति (बुद्धि) मुख तथा वाणी का स्तम्भन हो जाता है।



◇ बन्ध्या गर्भ धारण यन्त्र ◇



◇ बाल ग्रह नाशक यन्त्र ◇



192. बन्ध्या गर्भ धारण यन्त्र

इस यन्त्र को केशर से चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर लिखा जाय। पूजन करके त्रिलोह के ताबीज में भरकर स्त्री धारण करे तो उसका दुर्भाग्य शान्त होकर सुख होता है। इसे अरिष्ट नाश हेतु पुरुष भी धारण कर सकते हैं।

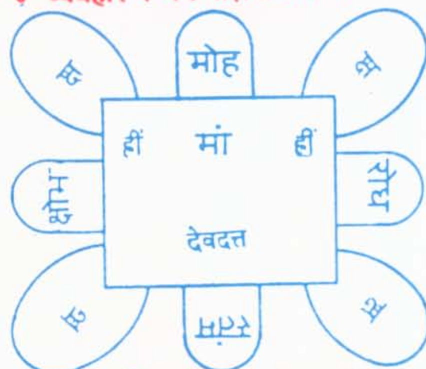


193. बाल ग्रह नाशक यन्त्र

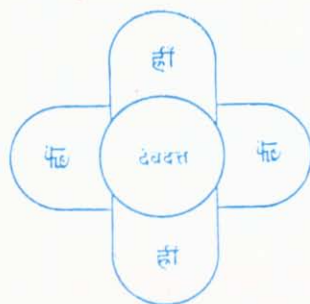
किसी बालक को डाकिनी, शाकिनी, बाल ग्रह आदि परेशान कर रहे हों तो बालकों की शान्ति हेतु रक्षा कवच के रूप में इस यन्त्र को लिखकर धारण करायें। धतूरे का रस निकाल कर भोजपत्र पर यह यन्त्र लिखें एवं त्रिलोह के ताबीज में भर कर धारण करायें।



◇ व्यवहार में भय नाशक यन्त्र ◇



◇ पिशाची यन्त्र ◇



194. व्यवहार में भय नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को निर्मित करके शराब सम्पुट में रख दें। अष्टगंध की धूप करें। धूप, दीपादि से पूजन करें। आठों दिशाओं में बलिदान करें। इन्द्र, लोकपाल आदि का पूजन करें तथा कन्याओं को भोजन करायें। प्रति दिवस यन्त्र का पूजन करें तो प्रतिष्ठा और उन्नति की प्राप्ति होती है।

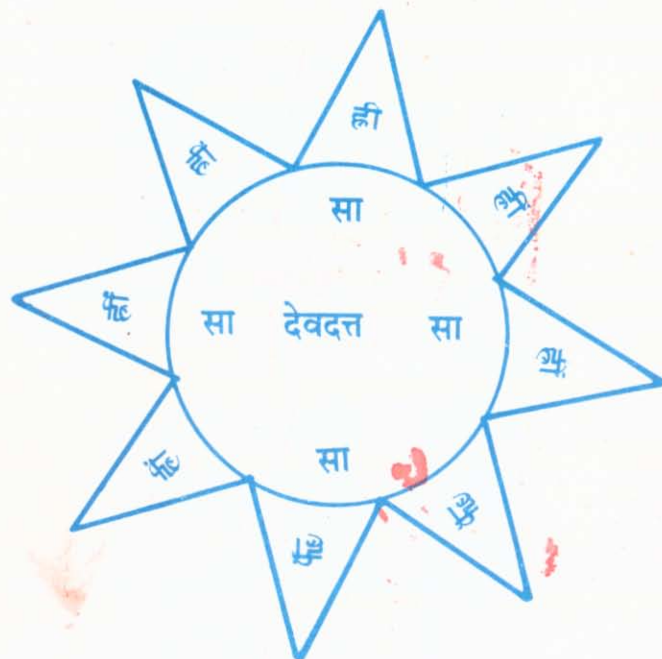


195. पिशाची यन्त्र

जब नौकर या अन्य किसी के द्वारा गुप्त भेद को प्रचारित कर देने का खतरा लगे तब इसका प्रयोग करें। श्रद्धा के अनुसार इसका निर्माण करें। पुष्पादि से पूजन करें। दही के बीच रख दें तो वह व्यक्ति वशीभूत होगा, जिससे कि खतरा था।



◇ पति वश्य कारक यन्त्र ◇



196. पति वश्य कारक यन्त्र

यह स्त्री सौभाग्यदाता यन्त्र है। भोजपत्र पर गोरोचन से लिखें। यन्त्र के नीचे दिया मन्त्र उच्चारित करें। तत्पश्चात् धारण करें तो पति दास की भाँति हो जाता है। इस यन्त्र के प्रयोग करने से भी लाभ न मिले तो शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को सौभाग्यशाली स्त्री को भोजन करायें। इसके बाद एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ कर यन्त्र राज की पूजा करें। इस प्रकार करके धारण करने से तो पति वश्य हो ही जाता है।

मन्त्र

अनङ्ग वल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयतामिति, एनं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे।



◇ विजय यन्त्र ◇



◇ जीवन पर्यन्त वशीकरण यन्त्र ◇



197. विजय यन्त्र

एक भोजपत्र पर गोरोचन से इसका निर्माण करें। गुप्त रखें। पुष्पादि से पूजन करें। सोने की ताबीज में धारण करें। यह यन्त्र अत्यन्त पवित्र, सुख, सौभाग्य का देने वाला है। इसके धारण करने से धारक स्त्रियों में प्रचारित होकर अत्यन्त प्यारा होगा।

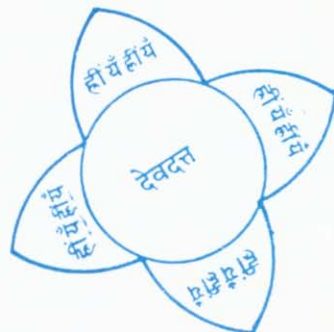


198. जीवन पर्यन्त वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखें एवं सरय्यों में बन्द करके आग में गर्म करें। कुछ समय बाद सरय्या खोल कर यन्त्र की भस्म निकाल लें। यह भस्म जिसे भी पान में रखकर खिला दी जायेगी। वह जीवन भर वश में रहता है।



◇ विवाद विजय यन्त्र ◇



◇ अग्नि स्तम्भन यन्त्र ◇



199. विवाद विजय यन्त्र

यह यन्त्र कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर लिखें। धूप, दीपादि से पूजन करें। त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके दूध में डाल दें तो अवश्य ही वाद-विवाद में या मुकंदमें में जीत होती है।

साधक वर्ग! अगर आप आत्मसिद्धि का प्रयास कर रहे हों तो इस यन्त्र को प्रकाशित न करें।



200. अग्नि स्तम्भन यन्त्र

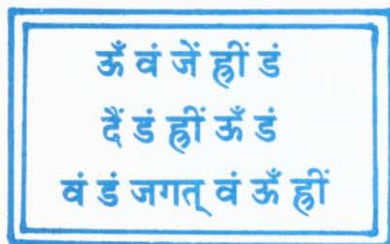
इस यन्त्र को पीले द्रव्य से भोजपत्र पर लिखें। गंध पुष्पादि से पूजन करें। दान पूजन करके यन्त्र को भूमि में गाड़ दें और ऊपर से जल डालें। यह जल डालने की क्रिया प्रति दिवस करें। इस प्रयोग के लाभ में आग स्तम्भित रहती है।



201. जगत वश्यकारक यन्त्र

सर्व जगत के आकर्षण हेतु भोजपत्र पर गोरोचन, केशर, कस्तूरी, लाल चन्दन की स्याही बनाकर चमेली की कलम से यह यन्त्र लिखें। तीन दिवस पुष्पादि से पूजन करें। त्रिलोह के ताबीज में भर करके धारण करें तो सर्व जगत् का वशीकरण हो जाता है। पूर्ण एवं प्रतिदिवस के लाभ हेतु स्नान आदि करके प्रतिदिन इस यन्त्र का पूजन करता रहे।

◇ जगत वश्यकारक यन्त्र ◇

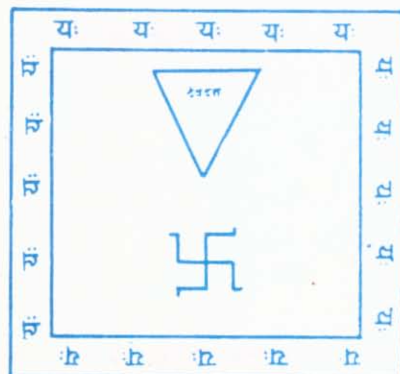




202. भूतज ज्वर नाशक यन्त्र

इस यन्त्र का प्रयोग बीमारी के ज्वर में लाभकारी न होकर भूतादिकों के उपद्रव से आये ज्वर में लाभकारी होगा। हाथी के मद से भोजपत्र के ऊपर यह यन्त्र लिखकर पूजन करके धारण कराये तो भूतादिकों के प्रकोप के कारण तीसरे दिन आने वाला ज्वर ठीक हो जाता है।

◇ भूतज ज्वर नाशक यन्त्र ◇

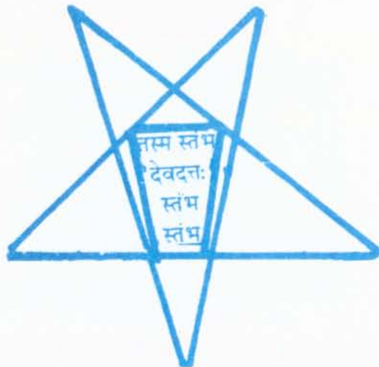




◇ मोक्षप्रद यन्त्र ◇



◇ स्त्री पुरुष मारण यन्त्र ◇



203. मोक्षप्रद यन्त्र

इस यन्त्र को गोरोचन, लाल चन्दन को मिलाकर भोजपत्र पर लिखें। लिखनोपरान्त पूजन करें तथा त्रिलोह की ताबीज बनवाकर यन्त्र को भरें एवं धारण करें तो सर्व मोह आदि का त्याग करके धारक ज्ञानमार्ग का अनुसरण करता है। इसके प्रभाव से उसे मोक्ष प्राप्त होता है।



204. स्त्री पुरुष मारण यन्त्र

यह यन्त्र महिला के मासिक का रुधिर लेकर शमशान की भस्म लाकर मिलायें तथा कौवे का पंख लेकर विभीतक के पत्ते पर लिखें। आदमी की खोखली हड्डी लेकर उसमें इस यन्त्र को बन्द कर दें। साध्य व्यक्ति के मूत्र से भीगी मिट्टी लेकर इस हड्डी को चारों तरफ से ढक करके शमशान में जाकर गाड़ आयें तो इसके गाड़ते ही शत्रु मूत्र के रोग से पीड़ित होकर सात दिनों में मर जाता है।



◇ शत्रु मुख स्तम्भन यन्त्र ◇



◇ वशीकरण यन्त्र ◇



205. शत्रु मुख स्तम्भन यन्त्र

अपने निवास की दीवार के ऊपर खड़िया से यह यन्त्र लिखें। देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। सफेद फूलों, गंधादि से पूजन करें। किसी ब्राह्मण को भोजन करवायें। ब्राह्मण के खाने के प्रति ग्रास पर ***श्री शिवः प्रीयताम्*** बोलता रहे। इसके प्रभाव से शीघ्र ही शत्रु की वाणी का स्तम्भन हो जाता है।



206. वशीकरण यन्त्र

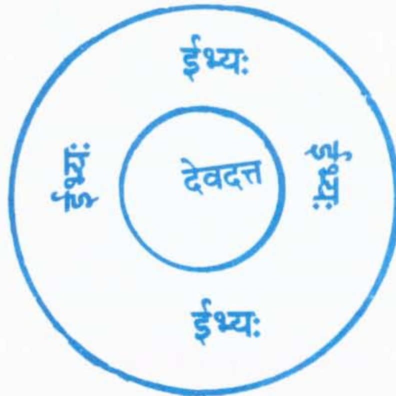
इसके बनाने के लिए अपना रक्त लेकर भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। गंध, पुष्पादि से पूजन करना चाहिए। जिस मार्ग से शत्रु गुजरता हो, वहाँ पर आकर ***ॐ आकर्षय स्वाहा*** का जप करते हुए यन्त्र के टुकड़े-टुकड़े करते रहें। काफी टुकड़े करके मार्ग में डाल कर चले आयें तो कठोर से कठोर व्यक्ति भी वश में हो जाता है।



◇ दुष्ट मुख मर्दन यन्त्र ◇



◇ दुष्ट मोहन यन्त्र ◇



207. दुष्ट मुख मर्दन यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अपने रक्त से लिखें। विधान के अनुसार पूजन करें। इसके बाद दूध में डाल दें। इक्कीस दिन तक दूध में पड़ा रहने दें। इस भाँति करने से दुष्टों का मुख मर्दन होता है।



208. दुष्ट मोहन यन्त्र

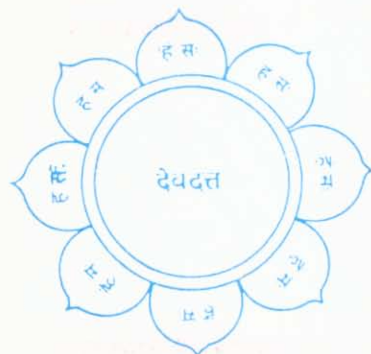
जब पता लगे कि बहुत ही बलवान शत्रु घात करने जा रहा है या करेगा तो उसे अपने वश में करने हेतु इसका प्रयोग करें ताकि शत्रु कोई हानि न पहुँचा सके। शमशान की भस्म लाकर दो आक के पत्तों पर अलग-अलग यन्त्र लिखें। दोनों पत्तों को सम्पुट में लेकर काँटों से छेदें। कृष्ण पक्ष की रात्रि में पूजन करके शमशान में जाकर दबायें। भूतों के लिए बलि प्रदान करें। ***हे कालरात्रि प्रसन्न हो।*** कहकर दानादि करें तो शीघ्र ही शत्रु वशीभूत होगा।



◇ अग्नि स्तम्भन यन्त्र ◇



◇ स्त्री उच्चाटन यन्त्र ◇



209. अग्नि स्तम्भन यन्त्र

माना जाता है कि जिस घर में यह यन्त्र रहता है, वहाँ अग्नि का भय नहीं रहता। इसके धारक को स्वप्न में भी आग नहीं डराती, सताती। लाल चन्दन, गोरोचन और हिम से भोजपत्र के ऊपर लिखें। गले, भुजा में धारण करें या दूध में स्थापित करें और घर के मध्य में रख दें। इसके प्रभाव से वहाँ अग्नि का भय कभी न होगा।



210. स्त्री उच्चाटन यन्त्र

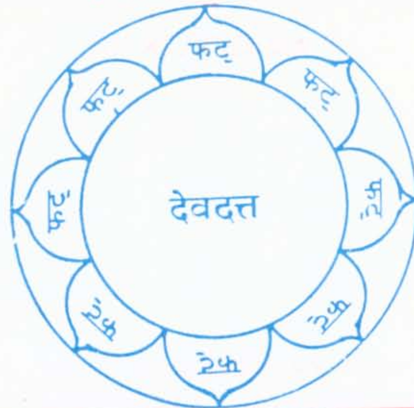
गधे का रक्त लेकर काठ के टुकड़े पर कौवे के पंख से लिखें। पूजन करके अधोमुख करके भूमि में गाड़ आयें। इस क्रिया के तीसरे दिन से शत्रु का उच्चाटन प्रारम्भ हो जाता है।



◇ त्रैलोक्योच्चाटन यन्त्र ◇



◇ परमोच्चाटन यन्त्र ◇



211. त्रैलोक्योच्चाटन यन्त्र

काले मुर्गे का रक्त लेकर भोजपत्र के ऊपर त्रैलोक्योच्चाटन यन्त्र को लिखे। विधिवत् पूजन करें फिर काले कुत्ते के गले में बाँध दें। यह कुत्ता कहीं दूर से लाएं तो आधिक लाभ रहेगा। यन्त्र बंधा कुत्ता जितनी दूर जायेगा वैसे ही शत्रु भी उच्चाटन को प्राप्त होगा।

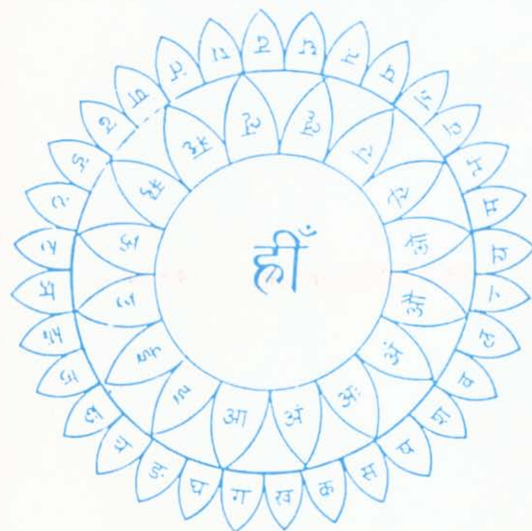


212. परमोच्चाटन यन्त्र

यह यन्त्र भोजपत्र पर हल्दी वृक्ष के रस से लिखा जाता है। विधिवत् पूजन करके यन्त्र का चूर्ण करके खाने-पीने की सामग्री में मिलाकर खिला देने से साध्य व्यक्ति का उच्चाटन हो जाता है।



◇ निगड़ मोचन यन्त्र ◇



213. निगड़ मोचन यन्त्र

इस यन्त्र के प्रभाव से सर्वाङ्ग बन्दी भी मुक्त हो जाता है। गोरोचन, लाल चन्दन, कपूर, कस्तूरी को मिलाकर काँसे के पात्र को शुद्ध करके इस यन्त्र को लिखा जाए। लेखन के बाद प्रतिष्ठा करके पुष्प, गंध एवं फलादि से पूजन करें। धूप जलाकर दीपदान करें तथा नैवेद्य आदि समर्पित करें। निम्नलिखित मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करें—

ॐ नमश्चण्डिकायै स्वाहा।

शहद, खीर और गूगल की प्रतिदिन बलि करें और सामग्री ढक कर रख देवें। प्रणाम करने से पूर्व उसको निकालें तथा धूप, दीपादि करके भोजन करें। पीने के लिए इसका आधा भाग दें तथा आधे की गुटिका बनावें। इसी गुटिका के धारण करने जन्म कैदी भी छूट जाता है और दूसरे कैदों की बात ही साधारण है। इस महायन्त्र का प्रयोग पूर्ण सावधानी, लग्न एवं परिश्रम से करें ताकि कहीं भूल न हो जाये। प्रयोग से लाभ न मिलने का अर्थ कहीं पर भूल आदि का दोष अवश्य ही होगा।



◇ शत्रु मारण यन्त्र ◇



◇ बालकों का ज्वर आदि स्तम्भन यन्त्र



214. शत्रु मारण यन्त्र

विष हरताल को मिलाकर कौवे के पंख की कलम से भोजपत्र के ऊपर शत्रु मारण यन्त्र को लिखें। आदमी की नलीदार हड्डी में, इस यन्त्र को पूजन करके भरें और शमशान में जाकर दबा आयें तो अकस्मात ही शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

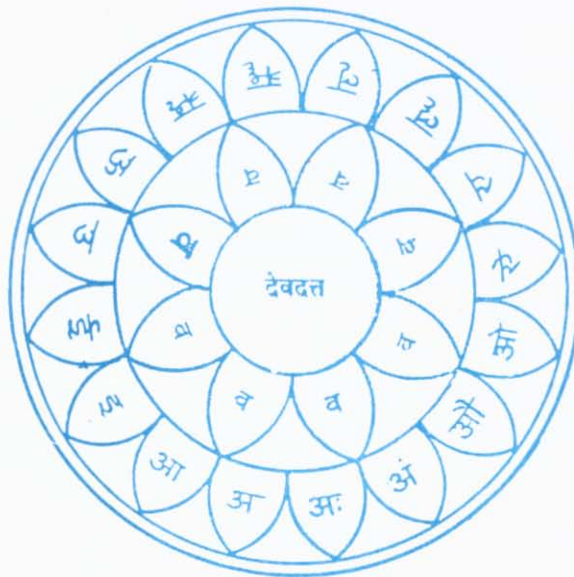


215. बालकों का ज्वर आदि स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र के धारण करने से धारक की रक्षा होती है, आयु बढ़ती है एवं अन्य हानि कारक उपद्रवों का शमन हो जाता है। इस यन्त्र को भी भोजपत्र पर ही लिखें तथा पूजन करके त्रिलोह के ताबीज में भर कर धारण करवायें तो प्रत्येक रोग एवं उपद्रव की शान्ति हो जाती है परन्तु यह यन्त्र केवल बालकों अर्थात् बच्चों के लिए ही है।



◇ महामोहन यन्त्र ◇



216. महामोहन यन्त्र

इस यन्त्र को राज्यवशकारक महायन्त्र भी कहते हैं। एक काँसे की प्लेट लाकर गऊ के गोबर की भस्म से शुद्ध करें। जाती वृक्ष से टहनी तोड़ कर कलम बनायें। गोरोचन और चन्दन मिलाकर उपरोक्त कलम से भोजपत्र के ऊपर लिख कर काँसें की प्लेट में रखकर विधिवत् पूजन करें। सफेद रंग के सुगन्धित पुष्प चढ़ायें। इस भाँति सात दिनों तक करें। इसके बाद त्रिलोह के ताबीज में भर कर कण्ठ, भुजा या शिर पर धारण करें तो अत्यन्त प्रभावशाली मोहन होकर सभी वशीभूत होते हैं।

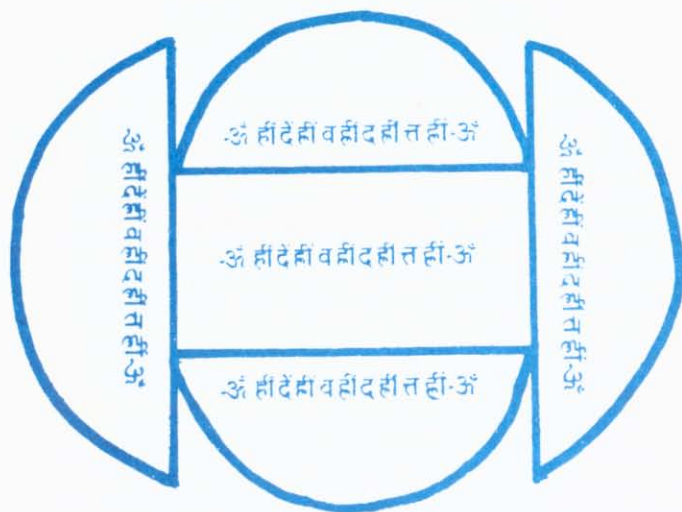


217. स्त्री वश्यकारक मदन मर्दन यन्त्र

जब किसी स्वाभिमानी, मानिनी स्त्री को वश में करना हो तो इस यन्त्र का प्रयोग करें। घोड़े के रक्त से भोजपत्र के ऊपर मदन काष्ठ की कलम से स्त्री वश कारक मदन मर्दन यन्त्र को लिखना चाहिए। मदन काष्ठ से ही कामदेव की प्रतिमा बनवायें या बनायें। इस प्रतिमा के हृदय में एक छेद भी रखें। इसी छेद में लिखा हुआ यन्त्र पूजन करके भर दें। इक्कीस दिन तक विधिनुसार पूजन करें तो साध्या स्त्री अवश्य आकर्षित होकर चली आती है।



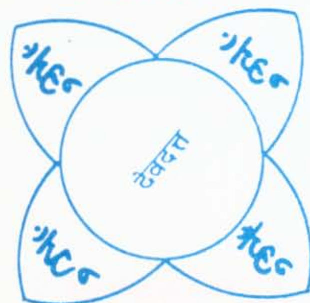
◇ स्त्री वश्यकारक मदन मर्दन यन्त्र ◇



◇ यावज्जीवं जनवश्यकारक यन्त्र ◇



◇ मित्र दर्शन यन्त्र ◇



218. यावज्जीवं जनवश्यकारक यन्त्र

इस यन्त्र के निर्माण हेतु कुंकुम, कर्पूर, गोरोचन तथा कस्तूरी को लेकर भोजपत्र पर लिखें । पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें । इस यन्त्र की तीन दिनों तक पूजा करें । अगले दिन ब्राह्मण को भोजन करायें तथा प्रात:काल के शुभ समय त्रिलोह के ताबीज में भर कर धारण करें । इस यन्त्र के धारण करने से भाई बन्धुओं में पूजनीय हो जाता है, सर्वत्र मान पाता है । सभी जीवों का आकर्षण होता है ।



219. मित्र दर्शन यन्त्र

इस मित्र दर्शन यन्त्र के लेखन के लिए लाल चन्दन, स्वयं के रक्त में मिलाकर भोजपत्र पर लिखें । गंध, पुष्पादि से पूजन करें तथा घी में स्थापित कर दें तो तीन दिनों में ही साध्य व्यक्ति आ मिलता है ।



◊ नर-नारी विद्वेषण यन्त्र ◊

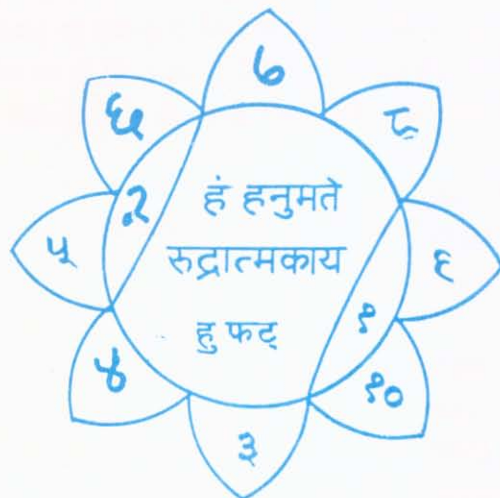


220. नर-नारी विद्वेषण यन्त्र

स्त्री पुरुषों का अत्यन्त विद्रोह कारक यन्त्र है। गोरोचन से भोजपत्र पर चित्र के अनुसार यन्त्र का निर्माण करें। नदी के तट पर जाकर आर-पार की मिट्टी लेकर आयें तथा उस मिट्टी से गणपति जी की प्रतिमा बनायें। यन्त्र को प्रतिमा पर रख कर लड्डू चढ़ायें तथा पुष्पादि से पूजन करें। पूजन करके ***गणेश प्रीयताम्*** बोल कर बालकों को भक्ष्य पदार्थों से पूजें। इस प्रकार पूजन करके शराब सम्पुट में स्थापित करें। धरा को खोद करके ***अघोरेति अघोरेति*** का जाप करता हुआ प्रतिमा को स्थापित कर दें। इसके फलस्वरूप साध्य स्त्री चाहे कितनी भी सुन्दर तथा सुशील क्यों न हों चौबीसों घन्टे दुःखी रहा करेगी। देवदत्त अगर स्त्री है तो नर अपनी नारी को और अगर देवदत्त पुरुष है तो नारी अपने नर को सह न सकेगी। इस यन्त्र के प्रभाव से बहुत निकट विद्वेषण होता है।



◇ द्वादशाक्षरम् हनुमन्मन्त्र यन्त्र ◇

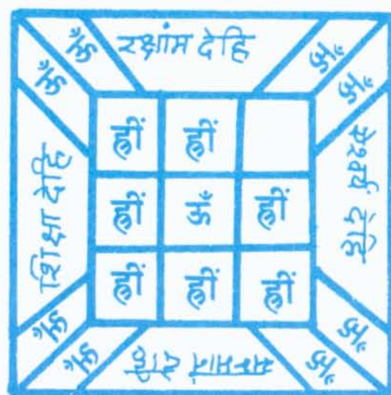


221. द्वादशाक्षरम् हनुमन्मन्त्र यन्त्र

इस यन्त्र को ताम्रपत्र या भोजपत्र पर चित्र के अनुसार लाल चन्दन और केशर से लाल चन्दन की कलम से लिखा जाये। अष्टदल कमल के आठों दलों में सुग्रीव, लक्ष्मण, अङ्गद, नल, नील, जामवन्त, कुमुद और केसरी नामों को क्रमशः अंकित करें। यन्त्र के दक्षिण में पवन का और बाएँ तरफ अंजनी का पूजन करें। अगले भाग में ***ॐ कपिभ्यो नमः*** द्वारा आठ बार अंजलि में लेकर पुष्प चढ़ावें। इस भाँति यह यन्त्र बनकर तैयार हो जाता है। इसे पूजन में रखें या जेब में। इस यन्त्र के प्रभाव से बड़े-बड़े पातकों का नाश हो जाता है। पुण्यों की प्राप्ति होती है, छोटे-मोटे शत्रु और भूत-प्रेत की बिसात ही क्या है? साधक में अगर निष्ठा हो तो यन्त्र के मध्य में दिये यन्त्र का एक लाख जप भी कर लें तो अति उत्तम रहेगा। ऐसा करने से हनुमान जी प्रसन्न होते हैं।



222. सर्व सिद्धिदायक ह्रींकार यन्त्र



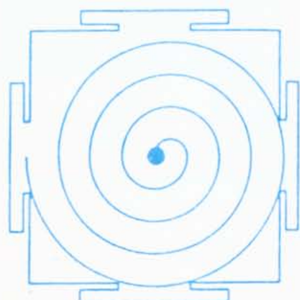
यह पुरातन काल से चला आ रहा एक प्रचलित यन्त्र है। यह यन्त्र कलियुग में दृष्टिगोचर नहीं होता। इसके अलोप कर देने के भी शायद कुछ कारण होंगे परन्तु हम इसकी धार्मिकता एवं पारस जैसे गुणों के कारण अत्यन्त प्रभावित हुए अत: इसे एक वयोवृद्ध के उपदेश पर प्रकाशित किया है। इसके धारक को या साधक को पूर्ण रूप से पवित्र रहना होगा। जैसे पारस से लोहा छूने पर सोना हो जाता है, ठीक ऐसे ही इसके साधन या धारण करने से दुर्भाग्य का अन्त हो जाता है। यह एक शीघ्र प्रभावी एवं साधक को उन्नति के शिखर तक ले जाने में सहायता करता है। समाज में मान-सम्मान ख्याति अर्जित करवाता है। बुरी भावनाओं का अन्त करता है एवं चारों तरफ से सुख प्रदान कराता है। यह ह्रींकार यन्त्र, ओमशक्ति का प्रबल प्रतीक है। इसके साधन में तामशी प्रवृत्ति को त्यागना चाहिए। दीपावली की अर्द्ध रात्रि को पाँच मुखी दिया, देशी घी का जला कर देशी घी की ही धूप जलायें। लाल वस्त्र पहन कर *"ह्रीं"* बीज मन्त्र की एक माला जपें। स्मरणी आने पर *"ॐ"* का जप करें। इस जप के समय धूप से उड़ते धुएँ पर दृष्टि केन्द्रित किये रहें। तत्पश्चात् केशर, गोरोचन तथा लाल चन्दन से, लाल भोजपत्र पर अनार की या स्वर्ण की लेखनी से इस यन्त्र का लेखन करना चाहिए। लेखन के बाद लाल पुष्प तथा मिष्ठान्न अर्पण करके गणेश वन्दना करके इस यन्त्र को माथे से लगा कर इत्र छिड़कें। इसके बाद धारण करें। यन्त्र को लाल धागे (सूत्र) में लपेट कर भी धारण किया जा सकता है।



◇ बिच्छू, सर्पादि नाशक यन्त्र ◇

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	९	०
४	५	३२	३४

◇ आत्मविश्वास जागृति यन्त्र ◇



223. बिच्छू, सर्पादि नाशक यन्त्र

जब घर में सर्प, बिच्छू आदि आकर परेशान कर रहे हों तो इस यन्त्र को मालकंगनी के रस से भोजपत्र पर लिख करके गृह में शुद्ध स्थल पर स्थापित कर दें तो इन सभी परेशानियों की समाप्ति हो जाती है ।



224. आत्मविश्वास जागृति यन्त्र

इस यन्त्र पर कुछ दिन तक लगातार दृष्टि टिका करके त्राटक करने से व्यक्ति में आत्मविश्वास पैदा हो जाता है । इसके अलावा नेत्रों के रोग समाप्त होते हैं । यदि आपको कोई औपरी शिकायत हो तो इसके केन्द्र स्थान पर बेल का एक ताजा पत्ता चिपका कर त्राटक करें । इस प्रयोग से आपको आत्मविश्वास तो प्राप्त होगा ही साथ में ही औपरी शिकायत समाप्त हो जायेगी ।



◇ श्री प्रश्न परीक्षा यन्त्र ◇



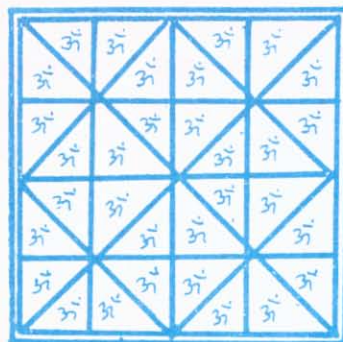
225. श्री प्रश्न परीक्षा यन्त्र

आपके लिए कभी भी अपने प्रश्न का उत्तर पाने के लिए यह श्री प्रश्न परीक्षा यन्त्र प्रस्तुत किया है। इससे लाभ उठाने के लिए एक ही पद्धति है और इससे आप आठ भाँति के प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। आपके मन में जब अपने प्रश्न का उत्तर जानने की अभिलाषा हो तो इस यन्त्र के केन्द्र पर दृष्टि स्थिर करें। लगभग दो या तीन मिनट में प्राय: उत्तर प्राप्त हो जाता है। आपके प्रश्न का उत्तर इस यन्त्र में दिये गये अक्षर देंगे। जब आप इस यन्त्र पर दृष्टि टिकायेंगे तो कुछ ही समय के बाद पास के अक्षरों में से कोई एक अक्षर उठ कर केन्द्र स्थान पर आ जायेगा। बस! यही अक्षर आपका उत्तर है। इन अक्षरों का पूर्ण विवरण इस भाँति है।

श्री—श्री वृद्धि
ध—धैर्य (इंतजार करें)
अ—अनुकूलता (भाग्य का सहयोग)
गु—गुप्त धन
की—कीर्ति (यश)
श—शरीर सुख
व—वशीकरण
वा—वाचा शक्ति



◇ ऊँकार महायन्त्र ◇

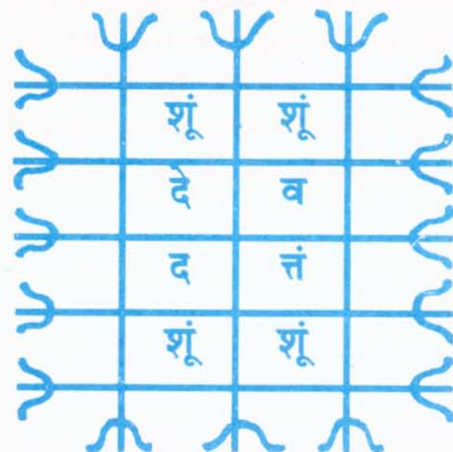


226. ऊँकार महायन्त्र

यह यन्त्र रवि पुष्य, गुरु पुष्य या किसी शुभ नक्षत्र के अवसर पर सोने-चाँदी, ताम्बे या काँसे पर खुदवा लेना चाहिए। धारण करने की इच्छा हो तो देवी के अष्टगंध से लाल भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखना चाहिए। धातु पर खुदा यन्त्र पूजन स्थल पर रखें तथा नित्य धूप, दीपादि करते रहें तो शुभता होती है। शारीरिक दुर्बलता अन्जानी शारीरिक व्याधि तथा ज्वर आदि के लिए एक बर्तन में जल भर कर यन्त्र उसमें डाल देना चाहिए। कुछ समय के पश्चात् यन्त्र निकाल कर जल रोगी को पिला दें। इस यन्त्र के धारण या स्थापन करने से भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी आदि का दोष दूर होता है। यन्त्र को धोकर जल से स्नान या घर में चारों तरफ छिड़कने से सभी तरह के उपद्रवों का शमन होता है। गर्भवती स्त्री का गिरता गर्भ ठहर जाता है तथा बिना कष्ट के सन्तान को जन्म देती है। ऊँकार उपासना करनी हो तो भी इस यन्त्र को समक्ष रख कर उपासना करने से उपासना शीघ्र फलदायी होती है। प्रति दिवस पूजन करने से साधक के घर भण्डार भरे रहते हैं। लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा घर में आनन्द ही आनन्द होता है। इस ऊँकार महायन्त्र की महिमा अनन्त है। यह एक अत्यन्त प्राचीन, महाप्रभावक एवं पवित्र सिद्ध यन्त्र है। अत: निवेदन है कि इस यन्त्र के प्रति आदर भाव रखें। जब किसी भी तरह किसी भी प्रयोग से लाभ न हो रहा हो तो इस महायन्त्र को प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिए। समाज के हितचिन्तक ही इस यन्त्र को लिखायें तथा दुष्कर्मी व्यक्ति को कभी भी यह यन्त्र न देना चाहिए। इस यन्त्र को नवरात्रि के दिनों में स्थापित करके एक माला प्रतिदिन गायत्री मन्त्र की जपने पर अभीष्ट अवश्य सिद्ध होता है। ♥ ♥ ♥

227. भगवती शूलिनी महायन्त्र

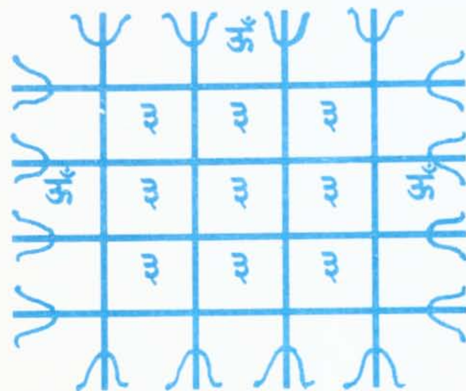
◇ भगवती शूलिनी महायन्त्र ◇



यह भगवती शूलिनी का महायन्त्र है। इसके धारक को सर्वत्र सुरक्षा प्राप्त होती है। कोई भी व्यक्ति इसके धारक के प्रति बुरा सोचेगा या करवायेगा तो उसका अनिष्ट हो जाता है। यह यन्त्र हमें बंगाल में साधना के समय प्रसाद रूप में प्राप्त हुआ था, जो कि पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत किया है। इसके प्रयोग करने के एवं लिखने के अनगिनत तरीकें हैं जो कि कार्य की आवश्यकता के अनुसार ग्रहण किये जाते हैं। भगवती शूलिनी शीघ्र लाभ प्रदान करती है। अत: केवल शान्ति हेतु का प्रयोग ही उदघाटित किया जा रहा है। कुंकुम, गोरोचन तथा केशर को गुलाब के इत्र के साथ घिस करके स्याही बनायें। लाल वस्त्र पहन कर लाल आसन पर ही बैठें तथा लाल ही भोजपत्र पर लाल चन्दन की कलम बनाकर अर्द्ध रात्रि के समय लिखना चाहिए। यन्त्र लिखते समय देशी घी का दीया एवं स्वच्छ धूप अवश्य जलती रहे। यन्त्र लिखने के बाद किसी पटिये पर लाल वस्त्र बिछा करके यन्त्र रख कर धूप दीपादि से पूजन करें तथा लाल गुड़हल के पुष्प चढ़ायें। हो सके तो एक नारियल पूजन में यन्त्र राज को अवश्य समर्पित करें। इस प्रयोग के समय कोई करिश्मा हो तो घबरायें नहीं अपितु उसकी स्तुति वन्दना करें। इसके बाद यन्त्र को स्वर्ण या ताम्र पत्र के ताबीज में भर करके किसी आम की जड़ में गाड़ आना चाहिए। प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में उठकर वह यन्त्र ले आना चाहिए और लाल धागे में डाल कर दाहिनी भुजा पर धारण करना चाहिए। इस यन्त्र के धारण से सभी अनिष्टों का नाश हो जाता है।



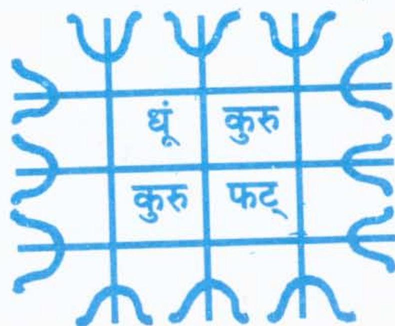
◇ अत्यन्त प्राचीन त्रियत्व यन्त्र ◇



228. अत्यन्त प्राचीन त्रियत्व यन्त्र

एक बार आसाम की यात्रा के समय एक साधु जी से यन्त्रों के विषय में चर्चा की थी। उस समय उन्होंने नेपाल चलने को कहा था परन्तु नेपाल से पहले ही सीतमढ़ी में उन्होंने एक थैले से कुछ ताड़पत्र निकाल कर दिखाये थे जिनमें कि कामधेनु यन्त्र, भैरवी यन्त्र तथा कुछ अन्य यन्त्र थे। उसे अपने ज्ञान के सामर्थ्यानुसार परखा तो वह अत्यन्त तीव्र प्रतीत हुए थे। विदा होते समय उन्होंने कुछ ताड़ पत्र मुझे भेंट किये थे और गरुड़ तन्त्र पर कुछ उपदेश भी दिये थे। प्रस्तुत त्रियत्व यन्त्र उसी श्रृंखला की एक कड़ी मात्र है। जब किसी को कोई रोग हो जाये और कोई दवा लाभ न दिखा पा रही हो तो इस त्रियत्व यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। यदि केवल रोग मात्र ही हो तो इस यन्त्र को केशर से कागज पर लिखकर पानी में घोल कर पिला दें। इस क्रिया के करते ही लाभ होता है। फिर भी तीन दिन में तीन बार यह क्रिया पूर्ण स्वास्थ्य के लिए अवश्य करें। रोगी के रोग में कुछ ऊपरी शिकायत लगे तो इसी यन्त्र को पीपल के पत्त पर सिन्दूर को घी में मिलाकर लिखें। इस पत्ते को ताबीज का रूप देकर धारण करायें। इस सम्पूर्ण क्रिया के करने से अनेकों बार लाभ प्राप्त हुआ। ♣ ♣ ♣

◇ श्री शरम महायन्त्र ◇



229. श्री शरम महायन्त्र

यह भी एक अत्यन्त प्राचीन एवं शीघ्र प्रभावी यन्त्र है। इस यन्त्र से लाभ के कई प्रमाण भी दिखाई दिये हैं। किसी भी शुभ समय के अवसर पर पीले या लाल भोजपत्र पर भगवती के अष्टगंध से इस यन्त्र को चित्रित करना चाहिए। इस यन्त्र को लिखते समय मुख में मिश्री अवश्य रखे रहें। यन्त्र को लिखते समय घी का दिया अवश्य जलता रहे। इस महायन्त्र के लेखनोपरान्त आम की लकड़ी पर अष्टगंध से ही हवन करें और प्रत्येक आहुति पर **धूँ कुरु कुरु फट्** मन्त्र का उच्चारण करें। यह क्रिया इक्कीस बार करें और हवन कुंड के ऊपर से यन्त्र को धूपित करें। इस क्रिया के सम्पूर्ण होने पर यह महायन्त्र एक असाधारण प्रबल शक्ति प्राप्त करके क्षण मात्र में ही प्रभाव दिखाने की क्षमता रखता है। इस यन्त्र को सोने या ताँबे के ताबीज में भर करके धारण करें। इस महायन्त्र के प्रभाव से दुश्मन, दुश्मन छोड़ देता है। अगर नहीं छोड़ता तो स्वयं नष्ट हो जाता है। इस महायन्त्र के साधक एवं धारक के निवास एवं उसके स्वयं के पास भूत, प्रेत, पिशाच आदि का भय कदापि नहीं होता। सभी कार्य पूर्णता को प्राप्त होकर सुख की प्राप्ति होती है।



◇ चक्रव्यूह यन्त्र ◇

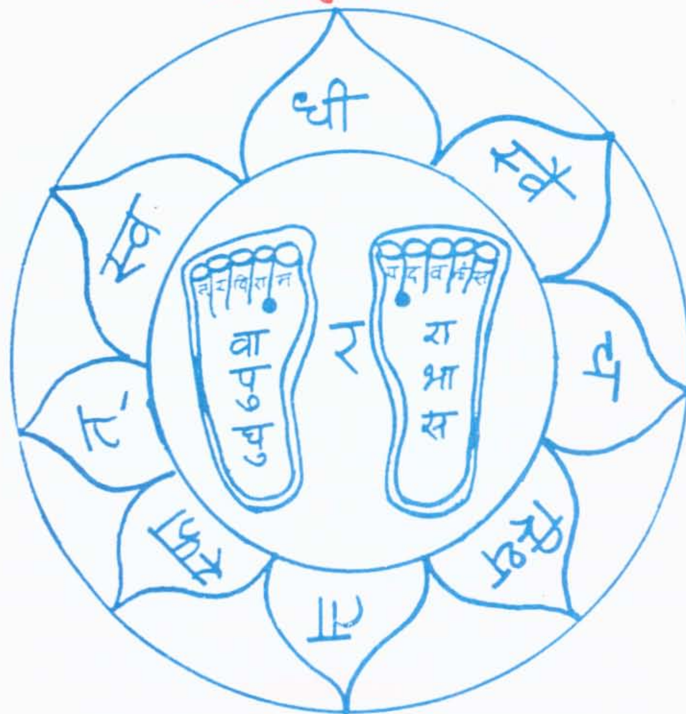


230. चक्रव्यूह यन्त्र

इस चक्रव्यूह यन्त्र का प्रयोग उस गर्भवती स्त्री के लिए किया जाता है जिसे कि बच्चा जन्मने में अत्यधिक कष्ट हो रहा हो या उसका आपरेशन होने जा रहा हो। ऐसी कोई भी स्थिति होने पर इस यन्त्र को काँसे की थाली में लाल चन्दन की स्याही से लिखें और स्त्री को दिखायें। जब वह देख ले तो इसमें जल भर करके उस कष्टा स्त्री को पिला दें। इस प्रभावशाली यन्त्र के प्रसाद से बच्चा बिना कष्ट के ही जन्म ले लेता है।



◇ श्री विष्णु महायन्त्र ◇



231. श्री विष्णु महायन्त्र

भगवान विष्णु की प्रसन्नता प्राप्त करने को इस श्री महायन्त्र का अनुष्ठान करना चाहिए। यह एक अत्यन्त प्राचीन महायन्त्र एव महाप्रभावी यन्त्र है। इस यन्त्र के पूजन एवं धारण मात्र से ही नवग्रहों के अनिष्ट शान्त हो जाते हैं। शुभ समय में इसे लिख कर काँच के फ्रेम में मढ़ कर रख लें तथा नित्य दर्शन मात्र से ही अशुभ समय भी शुभदायक हो जाते हैं। इस यन्त्र को तकिये के नीचे रख कर सोने से अशुभ स्वप्न नहीं दिखाई देते तथा अशुभता का नाश होता है। निंद्रित अवस्था में रक्षा प्राप्त होती है। इस यन्त्र को पाठकों के समक्ष उनके लाभार्थ प्रस्तुत किया गया है। इस यन्त्र का लेखन तथा पूजन करते समय शुभ भावना ही करनी चाहिए। नवरात्रि के दिनों में इस यन्त्र के समक्ष **राम रक्षा स्तोत्र** को पढ़ कर सिद्ध* किया जाता है।

यह यन्त्र जहाँ रहता है वहाँ भूत-प्रेत आदि का प्रवेश नहीं होता। अगर हो चुका हो तो वह सब भाग जाते हैं। इस महायन्त्र के प्रभाव से ऋद्धि-सिद्धि तथा सुख समृद्धि का आगमन होता है। किसी के द्वारा किये गये तांत्रिक-मांत्रिक प्रभाव को नष्ट करता है। अपने तथा अपने शुभचिन्तकों के लाभार्थ इस महायन्त्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। किसी भी शुभ समय पर अष्टगंध की स्याही बनाकर चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखना चाहिए। लिखनोपरान्त अष्टगंध का ही धूप करना चाहिए। आवश्यकता हो तो ग्रहण करें या फिर काँच के फ्रेम में मढ कर पूजन स्थल पर स्थापित करें। कहीं आते-जाते समय इस यन्त्र का दर्शन करके जायें तो शुभता प्राप्त होती है। सम्भव हो तो प्रतिदिन धूप करें तथा यह मन्त्र पढ़ें—

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

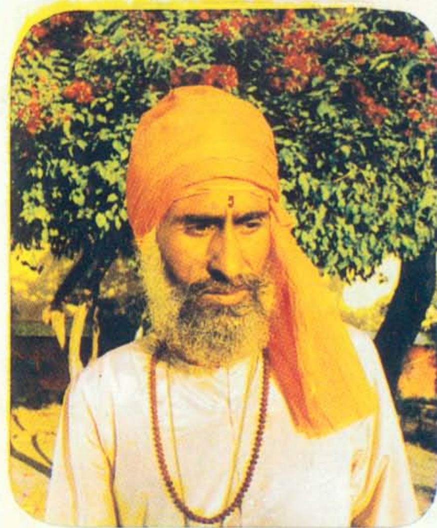
*श्री राम रक्षा स्तोत्र बाजार में आसानी से मिल जाता है।



चेतावनी

प्रस्तुत पुस्तक में बताये गये सभी यन्त्र अति विशिष्ट प्रभावशाली और तत्काल जाग्रत होने वाले हैं। ये तान्त्रिक विशेषज्ञों के द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले अति गुप्त यन्त्र हैं। अतः साधकों और सामान्य पाठकों से विशेष अनुरोध है कि कोई भी व्यक्ति अनावश्यक रूप से या मनोरंजन के रूप में यन्त्रों से खिलवाड़ न करे। ये सर्वसिद्ध उत्तेजक यन्त्र पूर्ण विधि-विधान से प्रयुक्त करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। सावधानी पूर्वक समाज में लाभ के लिए प्रयोग करें।

—*लेखक*



गुप्त विद्या कल्पतरू

योगीराज श्री यशपाल जी

यन्त्र विधान में दुर्लभ एवं सुलभ भिन्न-भिन्न कामनाओं से सम्बन्धित अनेक प्रकार के यन्त्र बताये गये हैं। यह गुरू हृदयों की संचित कृति है जो अनेक वर्षों के शोध के पश्चात् प्रस्तुत हो पाई है।

प्रत्येक साधक की सफलता में उसकी योग्यता श्रद्धा एवं विश्वास ही मौलिक तथ्य है। सत्य तो यह है कि यन्त्र वह आधारशिला है जिन पर देवता निवास करते हैं। अतः यन्त्र को देवस्वरूप मानते हुए ही इनका प्रयोग करना चाहिए।

गुप्त विद्या कल्पतरू **श्री यशपाल जी** की लेखनी से निःसृत यह कृति अब तक के सृजित साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती है। लेखक का मानना है कि आज भी यन्त्रों से सभी कुछ सम्भव है। **यन्त्र विधान** की सहायता से आप भी मानवीय क्षमताओं को बढ़ाकर श्रेष्ठ कर्मों को सींचते हुए दिव्यता की ओर बढ़ें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार (उ.प्र.)